सत्यमेव जयते

सम्पदा भारती

18 वां अंक

रक्षा सम्पदा संगठन
Defence Estates Organisation

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

‘सम्पदा भारती’ पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, कहानी आदि में प्रस्तुत विचार रचनाकारों का सृजन-क्षेत्र है। उनसे किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।

संपर्क सूत्र
राजभाषा अनुभाग, रक्षा सम्पदा महानिदेशालय
रक्षा सम्पदा भवन, उलान बाटर मार्ग
दिल्ली छावनी - 110010
दूरभाष: 011 - 25674970
फैक्स: 011 25674965
ई-मेल:rajbhasha-dgde@gov.in
dgdehindi2013@gmail.com

रक्षा सम्पदा भवन, दिल्ली छावनी - 110 010

सम्पदा भारती

18 वां अंक

प्रधान संरक्षक
शैलेन्द्र नाथ गुप्ता
महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

संरक्षक एवं परामर्शदाता
राजेंद्र पवार
अपर महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक
चारु तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सम्पादन सहयोग
अजय कुमार मलिक, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तेजराज सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कार्यालय सहयोग
सुनील कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भल्ला राम मीना, एम टी एस

साज-सज्जा एवं प्रकाशन
प्रदीप मिश्र, प्रोग्रामर (सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग)

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल''

सत्यमेव जयते

एक संवाद : महानिदेशक रक्षा सम्पदा

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय की गृह पत्रिका ''सम्पदा भारती'' के नव प्रकाश्य 18वें अंक की अतीव शुभकामनाएं !

कार्यालयी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषायी कार्य क्षेत्र में कार्यालय विशेष की गंभीरता, नीति, उपलब्धियां सभी को मंच देता है। हिन्दी के प्रचार – प्रसार एवं अधिकारी/कार्मिकों में रचनात्मक रुचि – बोध जगाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। हाँ, यहाँ भाषा सरल और सहज गूढ़ अर्थ और भावों से भरी होनी चाहिए तभी मानक स्थापित हो सकेंगे। वैसे भी भाषा के प्रतिमान (paradigm) समन्वय और संयोजन (co-ordination & composition) जैसे गुणों को आत्मसात करते हुए भाषा वृद्धि में सहयोग देते हैं। ये सरल भाषा शैली, अन्य भाषाओं से शब्द भंडार ग्रहण करने जैसे उपाय हो सकते हैं।

हम भाषा प्रेमी अपने दिनों – दिन प्रयोग में चाहे – अनचाहे भाषा की समृद्धि में इन्हीं गुणों से सरलता और सहजता का समावेश करते हैं। यह जरूरी भी है, रूढ़ भाषा का प्रवाह काल की अनवरत गति में खो जाता है, हमारा पूरा प्रयास, अपनी भाषा में इस रूढ़ता को न आने देने का होना चाहिए, ऐसा मेरा मानना है। मेरा तो सभी हिन्दी भाषा प्रेमियों से यह अनुरोध है कि हिन्दी के प्रयोग उत्सव में सभी की भागीदारी केवल एक विशेष अवधि तक सीमित न रखकर वर्षभर में कार्यालयीन कामकाज का हिस्सा बननी चाहिए।

महानिदेशालय की गृह पत्रिका ''सम्पदा भारती'' में हिन्दी प्रेमियों की रचनाधर्मिता का परिचय ठोस रूप में मिलता रहा है, मुझे खुशी है कि पत्रिका ने अपना यह स्तर इस वर्ष भी maintained किया है। कार्य के साथ रचना सृजन हमारे अधिकारियों/कार्मिकों के गहन भाषा प्रयोग ज्ञान का परिचायक होने के साथ उनके व्यक्तित्व में छिपे कुशल रचनाकार से मिलने का सुअवसर भी है, इसमें दो राय नहीं।

महत्वपूर्ण यही है कि कार्यालय के प्रत्येक स्तर पर संवैधानिक उत्तरदायित्व निर्वहन रूप में हिन्दी के कार्यालयीन उपयोग को वरीयता दी जाये। जितना हो सके, नई तकनीक के इस्तेमाल से भाषा के सुदृढ़ीकरण का प्रवृत्तन किया जाये, इसके लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन के साथ उन्नत कंप्यूटर एवं हार्डवेयर की उपलब्धता भी लगातार जारी रहनी चाहिए तभी भाषा के कार्यालयीन प्रयोग में कार्यालय की भूमिका और मुखर हो सकेगी।

संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को उनके प्रयासों और रचनाओं के लिए साधुवाद प्रेषित करता हूँ।

जय हिन्द!

श्री · शैलेंद्र नाथ गुप्ता

सत्यमेव जयते

संदेश : वरिष्ठ अपर महानिदेशक महोदया

भारत विविध भाषाओं, बोलियों, रिवाजों, वेशभूषा में आबद्ध विश्व का अग्रणी देश है, जिसकी संस्कृति और समता का कोई सानी नहीं। इसकी अप्रतिम छवि भाषाओं और उनसे जुड़े विविध विषयों में दिखाई पड़ती है। कहा जाता है कि भाव, भाषा और वाणी इनका संबंध मानवीय गुण दोषों से है। मनुष्य अपने मनोभाव के अनुसार इनका प्रयोग करता है, अच्छे मनोभाव में संस्कृत निष्ठ, सरल सहज वाणी उसको मुखरित करती है, वही गुस्से से भरा व्यक्ति क्या बोल जाए खुद उसको नहीं पता होता। माना जाता है कि हमारी पीड़ा या खुशी मातृभाषा में आसानी से व्यक्त होते हैं। किन्तु चलन और जिस स्थान में हम रहते हैं वहाँ की भाषा, बोली, संस्कृति सब हम पर प्रभाव डालती है हम उससे प्रभावित होते चलते हैं। हिन्दी की यदि बात करें तो इसकी सरलता, सहजता आसानी से भाव प्रवण में अभिव्यक्त होने जैसे गुणों के कारण व्यापक भारतीय फ़लक पर उभर रही है।

भाषा के साथ एक बात और जुड़ी है कि हमारा मन – मस्तिष्क लगातार दूसरी वाचन भाषा का अपनी मातृभाषा, या जिस भी भाषा में हम सोचते हैं, अनुवाद करता चलता है। आज अनुवाद की प्रक्रिया, चलायमान कार्यालयीन प्रणाली का अभिन्न अंग बन गई है। हमारा पूरा प्रयास हिन्दी में मौलिक लेखन का होना चाहिए, अनुवाद का नहीं, ऐसा मेरा मानना है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नित नई बदलती तकनीक और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते प्रभाव से हमारी भारतीय भाषाओं के रूढ़, मूल और संवेदी मानक प्रतिमानों को कोई खतरा न पहुंचे, हमें इसका भी ध्यान रखना होगा। कार्य चुनौती पूर्ण है पर लगातार सजगता और सामूहिक संवेदनशीलता से हम इसे बरकरार रख पाएंगे, ऐसा मेरा भरोसा है।

इस पत्रिका में महिलाओं की विशेष भागीदारी, प्रशंसनीय और गौरवान्वित करने वाली है तथा भविष्य में भी इसकी निरंतरता की आवश्यकता है।

इन्हीं विचारों के साथ मैं सम्पदा भारती के प्रकाशन रूपाकार में सहयोगी संपादक, संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देती हूँ साथ ही रचनाकारों को भी उनकी रचना कौशल के लिए साधुवाद!

जय हिन्द!

मीनाशर्मा

मीना बलिमने शर्मा

सत्यमेव जयते

संदेश :अपर महानिदेशक राजभाषा

महानिदेशालय की गृह पत्रिका ''संपदा भारती'' के नए अंक की हार्दिक शुभकामनाएं !

मुझे इस बात की खुशी है कि पत्रिका प्रकाशित होने का क्रम लगातार बना हुआ है। वैसे सच कहूँ तो 'संपदा भारती' के प्रकाशन को मैं एक सामूहिक प्रयास के रूप में देखता हूँ जिसमें रचनाधर्मिता के प्रत्येक स्तर पर रचनाकार अपनी रचना से पाठकों को मोह रहे हैं। इस प्रक्रिया में हिन्दी भाषा की शैली, वाक्य – विन्यास, शब्द संग्रह, उनका संयोजन सभी का परिचय पाठक को रचनाकार के नजरिए से मिलता है। पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य यहीं सिद्ध हो जाता है।

इस बार की 'संपदा भारती' में AI से संबन्धित लेखों को शामिल किया गया है। इनके माध्यम से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के डिजिटलीकरण का मार्ग सुगम तो हुआ है साथ ही सभी को अपनी मातृभाषा के सिवाय अन्य भाषाओं को सीखने, उसमें काम करने में सुविधा भी प्राप्त हुई है।

भाषा के सरलीकरण एवं सहजता से उसके प्रयोग गम्य उपाय और बेहतर ढंग से खोजे जा सकेंगे, ऐसा मेरा मानना है। और यह सही भी है आज वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर बढ़ रहा है। यह हिन्दी के वैश्वीकरण की दिशा में बढ़ता कदम है। हिन्दी को खुले मन से अपनाकर समृद्ध करने में सभी का योगदान रहना चाहिए। यह तथ्य हिन्दी में कार्यालयीन कामकाज करने वाले अधिकारियों/ कार्मिकों पर भी लागू है। हमें अप्रचलित और कठिन शब्द प्रयोग से बचते हुए मानक भाषा में टिप्पणियां, पत्र इत्यादि लिखना चाहिए। कार्यालयीन कामकाज में सरल भाषा प्रयोग, लंबे पैराग्राफ के स्थान पर छोटे पैराग्राफ वाली वाक्य संरचना, क्लिष्ट के स्थान पर सरल और आम बोल चाल के शब्द चयन से आधिकारिक कार्य निष्पादन हिन्दी में किया जा सकता है। कार्यालय में ऐसा माहौल तैयार करना प्राथमिकता होनी चाहिए जिसमें हिन्दी प्रयोग की दिशा में कार्य करते हुए औरों को भी इसमें कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

मैं पत्रिका के संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ तथा प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को भी उनके प्रयासों के लिए साधुवाद। शुभेच्छाएं !

जय हिन्द !

राजेन्द्र पवार
राजेंद्र पवार

रक्षा सम्पदा भवन, दिल्ली छावनी - 110 010

सत्यमेव जयते

संपादकीय

महानिदेशालय की गृह पत्रिका 'संपदा भारती' का एक नया अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्व और हर्ष दोनों की अनुभूति हो रही है, सोचा नहीं था यह अनवरत प्रयास साहित्य, कला और कार्यालयीन रचनाओं के संसार – जाल को इतना बेहतरीन ढंग से गुंथेगा कि पत्रिका के मानक स्तर आगामी अंकों के लिए प्रतिमान का काम करेंगे। साधारण से लगने वाले कार्य को भी पूरी निष्ठा, समर्पण और कड़ी मेहनत से नया angle देते हुए अपना 100% देने का प्रयास किया। अपने प्रयास में कितना सफल हुई, यह यक्ष प्रश्न भविष्य के लिए छोड़ देते हैं।

पिछले अंकों में पत्रिका के नए कलेवर में अनेक ऐसे स्तम्भ शामिल किए गए जो अपनी unique विषय वस्तु से पाठकों में appreciate किए गए। इसमें हिन्दी/उर्दू के मूर्धन्य साहित्यकारों यथा – अमृतकाल नागर, इस्मत चुगतई पर लिखें लेख हों अथवा आजादी के 'अमृत महोत्सव' 16वां अंक के उपलक्ष्य में प्रकाशित अमृत खंड (संकलन) हो जिसमें शहीद - ए - आजम भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद पर लेख शामिल किए गए हों या कोई अन्य साहित्यिक रचना या फिर हमारे रक्षा संपदा संगठन के रचना साहित्यकार ही क्यों न हों सभी ने कहानियों, लेखों, कविताओं, संस्मरण इत्यादि के माध्यम से पत्रिका को नई ऊंचाई पर पहुंचाया, किस – किस का नाम लूँ सभी की भागीदारी, अपनी रचनाओं से कोमल सृजन मन को पाठक पटल पर लाने, उससे रूबरू होने, तादातम्य स्थापित करने में थी। पत्रिका मानदेय तो यहाँ एकदम गौण, शून्य था।

इस बार भी हमने पत्रिका में ऐसे अनेक विषयों को शामिल किया है, जो पर्यावरण, भाषा, मनोविज्ञान के साथ AI जैसे नवीनतम content से भरपूर हैं। संवेदी कविताएं हों अथवा हिन्दी की प्रयोग दिशा में नवीनतम प्रौद्योगिकी की बात हो, पूरा प्रयास रहा है कि कोई भी क्षेत्र अछूता न रह जाए। सरल, सहज भाषा में जटिल विषयों को address किया जाए।

पत्रिका ने पाठकों की रुचि, गहन विषय बोध सभी को बढ़ाने का प्रयास किया। पत्रिका प्रकाशन का ध्येय स्वयं-सिद्ध तभी है, जब प्रकाशित रचनाओं को पाठक गहन लगन से पढ़े, उनसे एकाकार हो। हालांकि वर्तमान समय में डिजिटल युग में पढ़ने का शौक थोड़ा कम होता जा रहा है, किन्तु print content को बनाए रखने की ज़िम्मेदारी का निर्वहन लगातार होना चाहिए।

मैं इस यात्रा में साथी रहे मेरे पूरे राजभाषा अनुभाग का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने unconditional होते हुए अपने प्रयास किए। आई टी अनुभाग के प्रोग्रामर श्री प्रदीप मिश्र के सहयोग को कौन नकार सकता है। उच्च अधिकारियों के मार्गदर्शन और बहुमूल्य सुझाव हमेशा की भांति महत्वपूर्ण रहे।

अंत में पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों का आभार।

आपके लेख, कहानी,कविता, संस्मरण ही पत्रिका को आकार देते हैं, अपने इन सत्प्रयासों को बनाए रखें।

चारु तिवारी

(चारू तिवारी)

भारत के माननीय राष्ट्रपति से रक्षा संपदा सेवा के अधिकारियों /प्रशिक्षु अधिकारियों की शुभेच्छा मुलाकात (23-07-2025)

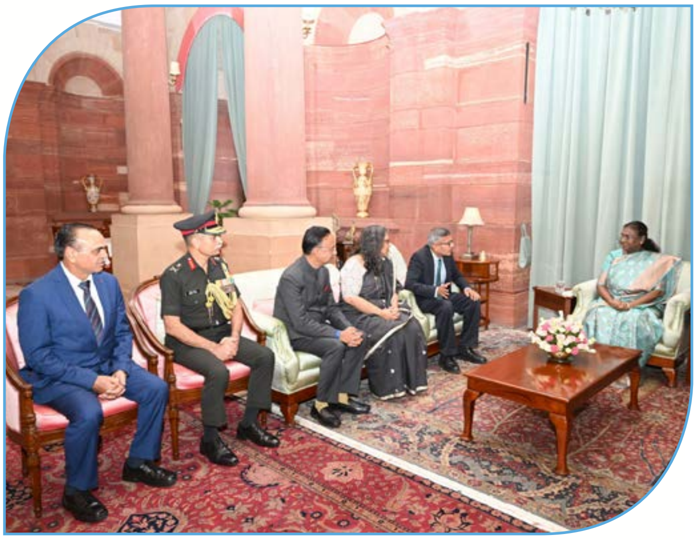

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	सामाजिक परिवेश में बदलता भाषा क्रम (लेख)	तेजराज सिंह	12
2.	पृथ्वी पर बदलता जलवायु परिवर्तन (लेख)	राज कुमार	14
3.	राजभाषा हिन्दी के विकास में प्रौद्योगिकी का महत्व (लेख)	अजय कुमार मलिक	16
4.	ज्ञान का खजाना (कविता)	प्रवीण अशोक बागल	22
5.	सुदर मन भावन दिल्ली छावनी है हमारी (कविता)	नरेंद्र चौहान	23
6.	नशा मुक्त भारत (लेख)	चारू तिवारी	25
7.	राह की धूल (कविता)	किरण पौनीकर	27
8.	गूंज उठी किलकारी (कविता)	संदीप बी मेश्राम	28
9.	स्वामी विवेकानंद (लेख)	मुकेश	29
10.	पूज्य माताजी के निधन पर उन्हें समर्पित एक स्वरचित लघु कविता, जिसका शीर्षक है (अंतिम आस) (कविता)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	30
11.	पिताजी के अकस्मात निधन पर उन्हें समर्पित स्वरचित कविता (प्यारे पिताजी (कविता))	मनीष कुमार श्रीवास्तव	31
12.	माँ ''एक प्रेरणा'' (कविता)	संगीता यादव	32
13.	कहानी हसीन होनी चाहिए (कविता)	अजिंक्य देशमुख	33
14.	अनमोल हिन्दी (कविता)	श्रीमती के अमूदा	34
15.	तमन्ना (कविता)	श्रीमती के अमूदा	35
16.	भारत के छावनी बोर्ड (लेख)	आदिल प्रताप सिंह	36
17.	भ्रष्टाचार : एक समाज का दीमक (लेख)	शलिनी ठाकुर	38
18.	मंजिल (लेख)	दक्षिता सिंह	40
19.	सच्ची सेवा (लेख)	हेमंत कुमार गोपाल	41
20.	महाकुंभ मेला – 2025 (लेख)	संजय कुमार	42
21.	मधुमक्खी और चींटी (कविता)	कु रूनाली विनोद शिंदे	44
22.	24 घंटे – एक पूरा जीवन (लेख)	त्रिवेणी राजेंद्र चौधरी	45
23.	ज़िंदगी जीना सीखा रही है (कविता)	सत्यवीर सिंह यादव	47

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
24.	नैतिकता वह है जो तब भी बनी रहे जब कोई इसे देख नहीं रहा हो (लेख)	दीपक कुमार तिवारी	50
25.	अकेलापन (लेख)	भल्ला राम मीना	52
26.	यादें (कविता)	रेखा	53
27.	नारी (कविता)	मनीष शर्मा	54
28.	सही शिक्षक (कविता)	कविता ठाकुर	55
29.	खामोशी (कविता)	श्रीमती ज्योति	56
30.	प्रगति की माप गति से नहीं, बल्कि सही दिशा से होती है (लेख)	प्रतिभा पारुल	57
31.	नशे के गुलाम (लेख)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	59
32.	वर्चुअल रियलिटी (VR) – एक रोमांचक दुनिया का अनुभव (लेख)	शशि गोंदवाल	60
33.	सर पर हाथ (कविता)	श्रीमती नीतू	64
34.	मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अहंकार ही है (लेख)	अशोक कुमार	65
35.	मन (लेख)	कुलदीप कौर	66
36.	ऑनलाइन शिक्षा (लेख)	रीना	67
37.	स्मृतिचिन्ह (लेख)	श्रीमती सुमना घोष	68
38.	याद आते हैं स्कूल के दिन (कविता)	अनुज यादव	69
39.	एक खूबसूरत भारत (लेख)	मोहित मरतोलिया	70
40.	मेरे गाँव की यादें (लेख)	निशा	72
41.	माँ के संघर्ष पर निबंध (लेख)	प्रिया	73
42.	प्रतिकूल परिस्थितियों में मनुष्य के चरित्र का परीक्षण (लेख)	अनुपम तिवारी	74
43.	राजस्थान का दक्षिणी द्वार ''झालावाड़'' (लेख)	नरेश कुमार	76
44.	भारत में 'न्यू वुमन' की कल्पना एक मिथक (लेख)	आकांक्षा	79
45.	जीवन का आधार संगीत (लेख)	सीमा बक्शी	81
46.	लड़की का माँ बन पाने पर : एक गहरी चिंता और संवेदना (लेख)	कविता	83
47.	ज़िंदगी की हकीकत (कविता)	वंदना	85
48.	शहीद-ए-आज़म उधम सिंह : जलियांवाला बाग के प्रतिशोधी वीर (लेख)	प्रदीप मिश्र	86

सामाजिक परिवेश में बदलता भाषा क्रम

'भाषा' अर्थात हमारे विचारों, संवेदनाओं, सोचो, अभिव्यक्तियों को रूपाकार देने वाला गुण। भाषा के माध्यम से ही सोचने समझने की शक्ति को ठोस आकार मिला। अपने गुण-विधान में भाषा सतही स्वर और व्यंजन का सकल योग नहीं है, बल्कि उनके जरिए गुंथे हुए रचना-संसार को वाणी देने का काम भाषा करती है ।

बदलते समाजिक सरोकार और परिवेश के साथ ही भाषा का रूप और व्यावहारिक गठबंधन भी बदलता रहता है । यहाँ बात वाक्य-विन्यास स्वर, व्यंजन, मात्रा, लिंग की नहीं हो रही है । भाषा अपने इन बाह्य और भीतरी दोनों आवरणों में अपने को मुखरित करती हमारे सम्मुख आती है अथवा यो कहें कि हम इसके इन समीकरणों में घिरे अपने को अभिव्यक्त कर पाते हैं दूसरे को और समझ पाते हैं ।

भाषा के बदलते प्रतिमानों पर हम पहले भी बात कर चुके हैं। यह अपने शब्द – वाक्य और विन्यास के साथ गद्य-पद्य विधाओं में परिष्कृत पारिमार्जित होते हुए साधारण लगने वाली घटनाओं, भुला चुके चेहरों और घटनाओं, वस्तुओं के नए अर्थों से हमारा परिचय कराती है । भाषा का सांस्कृतिक परिवेश राजनैतिक सत्ता और सिस्टम के विरोध को भी पूरी शिद्दत के साथ मुखरित करने का माहौल बनाता है । भाषा का ये स्वरूप लम्बे समय से संचित अनुभव का निचोड़ है जिसे प्रत्येक विद्यमान वर्तमान परिस्थितियों में भी महसूस किया जा सकता है ।

हम भाषा को किस रूप में ग्रहण करते हैं यह हमारी देशकाल परिस्थितियों पर निर्भर है । जिस समाज पर हमारे विकास का उत्तरदायित्व है वही हमें सुरक्षा और स्थायित्व देने के साथ-साथ अपनी सामाजिक संरचना में हमारे भाषिक संस्कार को भी शब्द और अर्थ देता चलता है ।

समाज की महत्ती भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता है। किन्तु समाज का चारित्रय केवल मनुष्यों के समूह से ही नहीं बनता, इसमें भाषिक संवेदना का पहलु भी शामिल है जो निरंतर मानव मनोदशा को स्वर देकर उसके विद्रोह बिगुल को और जोर से बजाने का काम करता है । भाषा का नाद, सहायक नादों के महात्म्य से और गुंजायमान हो जाता है । ये सहायक नाद ही मुख्य भाषा की अनगुंज को चारों दिशाओं में गुंजायमान कर हमेशा के लिए इतिहास में दर्ज करा देते हैं । मानवीय अनुभूतियों से ओत-प्रोत भाषिक स्वर जटिल व्याकरणिक फ्रेम में बंधे बिना, समसामयिक भाषायी अर्थवत्ताओ को 'सिल पर परत निशान' की भांति हमारे भीतर जमाता जाता है । भाषा का ये स्वतंत्र सापेक्ष स्वरूप नए सन्दर्भों और अर्थों को परिभाषित कर भाषिक संरचना की व्यापक सीमा को परखता है, उसे आत्मसात करता है ।इस तरह से भाषा अपने को नए सन्दर्भों के साथ बदलते हुए, नव काल – युग की सामाजिक और समसामयिक अर्थवत्ताओं के साथ परखती चलती है । भाषा का व्यावहारिक भाव – बोध जितना उसके भाव स्वातंत्रय को मुखर कर सकेगा उतना ही सामाजिक परिवेश में उसकी Acceptance होगी, अन्यथा जटिल व्याकरणिक फ्रेम में बंधी भाषा समय के काल- क्रम में अपनी राह खोकर भूत का विषय बन जाएगी ।

अपने अस्तित्व के लिए भाषा को हमेशा से ही बदलते सन्दर्भों के साथ संघर्ष करना पड़ा है । भाषा का कोई भी गुण, रूप-विधान, समाज-संस्कार से अविच्छिन्न हुए बिना वाणी का हार नहीं पहन सकता।

जिस तरह राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा 'सत्य के मेरे प्रयोग' शीर्षक पुस्तक में 'सत्य के अनेक रूपों का साक्षात्कार किया गया। समाज भी समाज के क्रमिक विकास में उसकी अवधारणा और अनुप्रयोग दोनों को समय काल खंड की कसौटी पर कसते हुए नए सन्दर्भों, संकल्पनाओं से आच्छादित करता है और इस तरह से भाषा प्रयोग और उसकी उन्नति को वाणी देता है, परिमार्जित और परिष्कृत करता है । इस देने और छोड़ने के अनुक्रम में निरर्थक और बासी हो चुके भाषा मानकों को न अपनाने के प्रति भी समाज उत्सुक रहता है और धीरे-धीरे सामाजिक सरोकार से उन्हें गायब भी कर देता है ।

इस तरह भाषा के बनने – बिगड़ने में सामाजिक ताने-बाने का सबसे ज्यादा हाथ है । हिंदी की यहाँ बात करें, तो पांच दशक पूर्व वाली साहित्यिक भाषा आज प्रयोग में नहीं है । देशज, देहाती शब्द जो उस समय चलायमान थे आज पटल से हट गए हैं। आज की हिन्दी नए प्रतीकों, सन्दर्भों और अभिव्यक्तियों को अपना मापन बना रही है ।इस डिजिटल युग में भाषा बेहद अलग रूप में सामने आ रही है। AI, जैसे यन्त्र अथवा विज्ञापन की भाषा सभी हिंदी के मानक और अनूदित version को ही प्रोत्साहित कर रहे है । मूल भाषा में लिखने-पढने और समझने (Comprehension) की क्षमता धीरे-धीरे चुकती जा रही है । यह भाषा के मूल किरदार को बिगाड़ने जैसा है, जिससे भाषा सिर्फ पंक्तियों में बंधी नए-तुले शब्दों में Express हो ऐसे Lingustic Approach वाली भाव-भंगिमा को सामने लाएगी जो बिलकुल सतही और यांत्रिक होगा । ये भाषा की मूल अवधारणा को आने वाले समय में क्षतिग्रस्त करेगा ।

रक्षा सम्पदा भवन, दिल्ली छावनी - 110 010

अत: इससे बचते हुए ही नए सामाजिक सन्दर्भों के साथ समाज को भाषा का विकास और पल्लवन करना होगा । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी हालाँकि पुष्ट तो है किन्तु अपने स्तर पर अनेक मोर्चों पर लड़ती हिंदी के परोकारों को यह बात विशेषकर ध्यान में रखनी होगी। सब समझ कर ही आगे कदम बढ़ाना श्रेयस्कर होगा तभी समाज द्वारा हिन्दी के क्रमिक विकास में ठोस भूमिका का निर्वहन सुनिश्चित हो सकेगा। वैसे आम जन की महती भूमिका से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

तेजराज सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

पृथ्वी पर बदलता जलवायु परिवर्तन

पृथ्वी पर बढ़ता जलवायु परिवर्तन एक गंभीर और चिंताजनक विषय है, जिसका सीधा संबंध मानवीय गतिविधियों से है। यह केवल तापमान में वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके व्यापक और दूरगामी परिणाम सामने आ रहे हैं जो हमारे ग्रह और जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारण :-

जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण ग्रीनहाउस गैसों (Greenhouse Gases) का उत्सर्जन है, जो औद्योगिक क्रांति के बाद तेजी से बढ़ा है :-

जीवाश्म ईंधन का जलना :- बिजली उत्पादन, परिवहन और उद्योगों में कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन को जलाने से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4) और नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) जैसी गैसें निकलती हैं। ये गैसें पृथ्वी के वायुमंडल में एक कंबल की तरह काम करती हैं, सूरज की गर्मी को रोकती हैं और पृथ्वी के औसत तापमान को बढ़ाती हैं।

वनों की कटाई (Deforestation) :- पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके वातावरण को शुद्ध करते हैं। बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, चाहे वह कृषि, शहरीकरण या लकड़ी के लिए हो, इस प्राकृतिक कार्बन सिंक को कम करती है, जिससे वायुमंडल में CO_2 की मात्रा बढ़ जाती है।

औद्योगिक और कृषि गतिविधियां :- कुछ औद्योगिक प्रक्रियाएं और कृषि पद्धतियां (जैसे पशुधन से निकलने वाली मीथेन, उर्वरकों का उपयोग) भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती हैं।

पृथ्वी पर बढ़ते जलवायु परिवर्तन के प्रभाव :-

बढ़ते तापमान के कारण पृथ्वी पर कई गंभीर बदलाव देखे जा रहे हैं :-

बढ़ता वैश्विक तापमान :- पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। 20वीं सदी के अंत से लेकर अब तक यह वृद्धि स्पष्ट रूप से देखी गई है, जिससे गर्म लहरें (Heatwaves) और अधिक सामान्य हो रही हैं।

समुद्र स्तर में वृद्धि :- ध्रुवीय क्षेत्रों में ग्लेशियर और बर्फ की चादरें पिघल रही हैं, जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। यह तटीय शहरों और द्वीपीय राष्ट्रों के लिए एक बड़ा खतरा है, जहां बाढ़, खारे पानी की घुसपैठ और भूमि का कटाव बढ़ रहा है।

अत्यधिक मौसमी घटनाएं :- जलवायु परिवर्तन के कारण सूखे, बाढ़, तूफान (जैसे चक्रवात और हरिकेन), और जंगल की आग जैसी प्राकृतिक आपदाएं अधिक तीव्र और बार-बार हो रही हैं। ये घटनाएं कृषि, बुनियादी ढांचे और मानव जीवन को भारी नुकसान पहुंचाती हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता पर प्रभाव: कई पौधों और जानवरों की प्रजातियों को बदलते तापमान और वर्षा पैटर्न के अनुकूल होने में कठिनाई हो रही है, जिससे उनके अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। प्रवाल भित्तियां (Coral reefs) समुद्र के तापमान में वृद्धि और अम्लीकरण के कारण मर रही हैं।

खाद्य और जल सुरक्षा पर खतरा :- बदलते मौसम पैटर्न के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है, जिससे कुछ क्षेत्रों में खाद्य असुरक्षा बढ़ सकती है। पानी के स्रोतों पर भी दबाव बढ़ रहा है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां सूखे की स्थिति है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव :- गर्मी से संबंधित बीमारियां, श्वसन संबंधी समस्याएं (प्रदूषण के कारण) और वेक्टर-जनित बीमारियों (जैसे डेंगू और मलेरिया) का प्रसार भी जलवायु परिवर्तन से जुड़ा हुआ है।

वैश्विक और स्थानीय प्रयास

दुनिया भर के देश और संगठन जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रयास कर रहे हैं। इसमें अक्षय ऊर्जा (Renewable Energy) स्रोतों जैसे सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देना, ऊर्जा दक्षता में सुधार करना, वनीकरण (Afforestation) को बढ़ाना और उत्सर्जन को कम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग करना शामिल है। भारत ने भी अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance) जैसी पहलें की हैं और 2070 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है।

जलवायु परिवर्तन एक जटिल समस्या है जिसके लिए तत्काल और सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है। व्यक्तिगत स्तर पर भी हम ऊर्जा बचाकर, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके और टिकाऊ जीवन शैली अपनाकर इसमें योगदान दे सकते हैं।

राज कुमार,
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

राजभाषा हिन्दी के विकास में प्रौद्योगिकी का महत्व

भाषा सम्प्रेषण का वह माध्यम होता है जो दो व्यक्तियों के बीच में सेतु का कार्य करती है। भाषा किसी देश की पहचान होती है प्रत्येक देश की अपनी भाषा होती है। भारत जब स्वतंत्र हुआ तो तत्पश्चात भारत वर्ष में भी एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जिसमें अधिकतर संप्रेषण किया जाता हो तथा जिसमें बात करते हुए लोग सहज महसूस करते हों। संविधान सभा द्वारा इस बात पर गहन चर्चा की गई और अंततः यह निष्कर्ष निकला कि हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता दी जाए। हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर सन 1949 को स्वीकार किया गया। इसीलिए प्रतिवर्ष इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी को राजभाषा बनाने के पीछे और भी कई कारण थे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक प्रयोग होने वाली भाषा हिंदी ही थी इसलिए यह भी हिंदी को राजभाषा के रूप में चुने जाने के पीछे एक कारण था। हिंदी को राजभाषा का दर्जा कृपा पूर्वक नहीं दिया गया बल्कि उसका यह अधिकार है। और यह बात महात्मा गांधी द्वारा बताए गए लक्षणों से भी सिद्ध होती है। उनके द्वारा बताए गए राजभाषा के कुछ लक्षण निम्नलिखित है :-

- प्रयोग कर्ताओं के लिए व्यवस्था सरल होनी चाहिए।
- इस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।
- यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

उपर्युक्त लक्षणों पर हिंदी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है। हिंदी भाषा लगभग संपूर्ण देश में प्रयोग की जाती है। इस बात का पता इससे भी लगता है कि कुछ अपवादों को छोड़कर संपूर्ण भारत में सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्में हिंदी भाषा की ही होती हैं। हिंदी भाषा की फिल्मों को संपूर्ण देश में पसंद किया जाता है। हिंदी भाषा के चैनल भी काफी संख्या में है जिससे पता चलता है कि उनको भी काफी संख्या में देखा जा रहा है।

मोबाइल फोन, एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग से लेकर रेलवे आरक्षण, ऑनलाइन शॉपिंग, आदि तक सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है । संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वज़ह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र बहुत विस्तृत है, सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालयीन भाषा का दर्जा प्राप्त है व इसका कार्यक्षेत्र केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, कार्यालयों, निगमों, विभागों व उपक्रमों आदि तक फैला हुआ है। समकालीन समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। हिंदी में कंप्यूटर स्थानीयकरण का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ और अब यह आंदोलन की शक्ल ले चुका है । हिंदी सॉफ्टवेयर लोकलाइजेशन का कार्य सर्वप्रथम सी- डैक द्वारा 90 के दशक में किया गया था । वर्तमान में हिंदी भाषा के लिये कई संगठन कार्य करते है, जिसमें सी –डैक, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान आदि प्रमुख हैं।

वर्तमान युग में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति द्वारा प्रौद्योगिकी के सहारा लिए बिना कोई भी कार्य करना लगभग असंभव सा है। राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में भी कई समस्याएँ आईं लेकिन प्रौद्योगिकी के सहयोग से उन समस्याओं का निराकरण किया जा रहा है। कुछ समय पहले जब सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रयोग किया जाने लगा तो खासकर कार्यालयों में कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने में बहुत कठिनाई होती थी। संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वज़ह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र बहुत विस्तृत है, सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालयीन भाषा का दर्जा प्राप्त है व इसका कार्यक्षेत्र केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, कार्यालयों, निगमों, विभागों व उपक्रमों आदि तक फैला हुआ है ।समकालीन समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। लेकिन राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को लेकर कई समस्याएं होती थी। विशेषत हिन्दी टाइप करने और अंग्रेजी शब्दों, वाक्यों का हिन्दी अर्थ ढूँढने में चूँकि कार्यालय में प्रत्येक व्यक्ति को हिन्दी टंकण एवं अनुवाद का प्रशिक्षण देना संभव भी नहीं होता है न ही उनकी आवश्यकता में शुमार होता है। लेकिन जैसे – जैसे प्रौद्योगिकी ने राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में प्रवेश किया है। हिन्दी प्रयोग में होने वाली कई परेशानियाँ समाप्त हुई हैं अथवा कम हो गई हैं। एक ओर यूनिकोड के प्रयोग ने हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है वहीं आज सिस्टम जेनरेटेड प्रोग्रामों में हिंदी की स्थिति कुछ खास नही है। अधिकतर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम पहले ही तैयार कर लिये जाते हैं, उसके बाद उनमें हिंदी की सुविधा तलाश की जाती है। इसके बावजूद भी यह संतोष का विषय है कि 21 वीं

सदी में भाषा के प्रचार –प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिक अहम हो गयी है व भाषाओं के मानकीकरण का कार्य आसान हो गया है ।

हिंदी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब हर कंप्यूटर, लैपटॉप यहाँ तक की स्मार्ट फोन पर भी हिंदी में काम करना व करवाना कोई बड़ा मुद्दा नहीं रह गया है ।यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक कोड है जिसमें हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 200 भाषाओं के लिये कोड निर्धारित किये गये हैं । चूँकि कंप्यूटर मूल रूप से किसी भाषा से नहीं बल्कि अंकों से संबंध रखता है इसलिये हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक रूप प्रदान कर सकते हैं । साथ ही इसी आधार पर उनके लिये फॉन्ट भी निर्मित किये जा सकते हैं, जैसे अंग्रेज़ी भाषा अथवा रोमन लिपि के लिये एरियल फॉण्ट की एनकोडिंग की गयी है, उसी तरह हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिये निर्मित आधुनिक यूनिकोड फॉण्ट्स की भी एनकोडिंग की गयी है जिसे अंतराष्ट्रीय स्तर पर एप्पल, आइबीएम, माइक्रोसॉफ्ट, सैप, साइबेस, यूनिसिस जैसी सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की प्रमुख कंपनियों ने अपनाया है । मानकीकरण का यह कार्य अमेरिका स्थित यूनिकोड कंसोर्शियम द्वारा किया जाता है जो कि गैरलाभकारी संस्था है । भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भी इस कंसोर्शियम के जरिये हिंदी के यूनिकोड फॉन्ट जैसे मंगल, कोकिला, एरियल यूनिकोड एमएस, आदि की एनकोडिंग करायी है जिसकी वज़ह से आधुनिक कंप्यूटरों में यह फॉण्ट पहले से ही विद्यमान होते हैं।यूनिकोड 16 बिट की एक एनकोडिंग व्यवस्था है जो कि पालि और प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाओं से भी परिचित है। इसकी विशेषता यह है कि एक कंप्यूटर की सामग्री को दुनिया के किसी भी अन्य यूनिकोड आधारित कंप्यूटर पर खोला व पढ़ा जा सकता है। इसके लिए अलग से उस भाषा के फोंट का प्रयोग करने की अनिवार्यता नहीं होती; क्योंकि यूनिकोड केन्द्रित हर फोंट में सिद्धांतत: विश्व की हर भाषा के अक्षर मौजूद होते हैं। यूनिकोड आधारित कंप्यूटर में प्रत्येक कार्य भारत की लगभग किसी भी भाषा में किया जा सकता है, बशर्ते कि 'ऑपरेटिंग सिस्टम' पर इन्सटॉल सॉफ्टवेयर यूनिकोड व्यवस्था आधारित हो। आज बाज़ार में आने वाला हर नया कंप्यूटर व अन्य गैजट ना सिर्फ हिंदी, बल्कि दुनिया की अधिकतर भाषाओं में कार्य करने में सक्षम है क्योंकि यह सभी लिपियाँ यूनिकोड मानक में शामिल हैं।

हिन्दी प्रयोग में समस्या आती थीं उनमें से एक हिन्दी टंकण थी लेकिन वर्तमान में कई ऐसे सॉफ्टवेयर हैं जो हिन्दी टंकण करना बहुत आसान कर देते हैं। कई ऐसे सॉफ्टवेयर हैं जिनमें आप अंग्रेजी में टाइप करेंगे और टेक्स्ट स्वत: ही हिन्दी में टाइप हो जाएगा।

कई सरकारी एवं गैर सकरारी संस्थान इन टूलों को बनाने में लगे हुए हैं। ऐसे सॉफ्टवेयरों में माइक्रोसॉफ्ट कंपनी द्वारा बनाया हुआ माइक्रोसॉफ़्ट इंडिक टूल हिन्दी टंकण में काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। माइक्रोसॉफ्ट इंडिक टूल विभिन्न स्थानीय भाषाओं के लिए उपलब्ध है। जहां हम अंग्रेजी में टाइप करते हैं और अपनी लक्षित भाषा में स्वत: ही टाइप हो जाता है। माइक्रोसॉफ़्ट इस पर काफी काम कर रही है। माइक्रोसॉफ़्ट ने विंडोज की आवश्यकतानुसार अभी तक इस सॉफ्टवेयर के तीन वर्जन (version) बनाए हैं। जो निम्नलिखित हैं :-

Download कैसे करें :-

https://www.microsoft.com/enin/bhashaindia/downloads.aspx

1. **Input Indic-3** :- यह मुख्यत: windos-8 एवं उच्च वर्जनों के लिए उपयुक्त रहता है। इसके भी आगे दो प्रकार हैं (i) विंडोज के 64 बिट वर्जन के लिए (ii) विंडोज के 32 बिट वर्जन के लिए

2. **InputIndic-2** -: यह मुख्यत: windows vista अथवा windos-7 अथवा windows server-2008 के 32 bit वर्जन एवं windows xp अथवा windows vista अथवा windos-7 अथवा windows server 2003 अथवा windows server 2008 के 64 bit के लिए उपयुक्त रहता है।

3. **Input Indic1-** :- यह windows xp अथवा windows 2000 अथवा windows server 2003 के 32 bit वर्जन के लिए उपयुक्त रहता है।

इसके अतिरिक्त बोलकर भी टाइप किया जा सकता है। कंप्यूटर पर बोलकर टाइप करने हेतु प्रमुख रूप से इंटरनेट, जीमेल अकाउंट और एक माइक की आवश्यकता रहती है। इसे केवल गूगल क्रोम में ही टाइप किया जा सकता है टाइप करने का कार्य गूगल डॉक्स में किया जाता है।

बोलकर टाइप करने के लिए आप मोबाइल के साथ मिलने वाला ईयर फोन भी प्रयोग में ला सकते हैं। बोल कर टाइप करने के लिए आप डॉक्स एप की टूल बार में टूल्स पर क्लिक करने के पश्चात वॉइस टाइपिंग पर क्लिक करना होता है। यहाँ बहुत सी भाषाओं में टंकण का कार्य किया जा सकता है। इसके ऊपर भाषा बदलकर हिंदी करनी है यहाँ माइक के साइन के ऊपर क्लिक करके बोलकर टाइप करना प्रारम्भ किया जाता है, चूंकि यह मूलत: उच्चारण पर निर्भर करता

है इसलिए जितना साफ बोलेंगे उतने अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। इस टूल की सबसे अच्छी बात यह है कि यह आपकी फाइल को गूगल ड्राइव पर सेव करता है आप अपनी फाइलें विश्व के किसी भी कोने में प्रयोग में ला सकते हैं आप अपने मोबाइल पर भी इसे प्रयोग में ला सकते हैं इसके लिए आपको Google Play store से Google डॉक्स ऐप डाउनलोड करना होगा एवं उसमें लॉग इन करना होगा। लॉग इन करने के पश्चात आप इसमें बोल कर टाइप कर सकते हैं। मोबाइल फोन में आप बिना माइक के भी टाइप कर सकते हैं।

मौजूदा समय में हिंदी 'ग्लोबल हिंदी" में परिवर्तित हो गयी है, आज तकनीकी विकास के युग में दूसरे देशों के लोग भी, भले विपणन के लिए ही सही, हिंदी भाषा सीख रहे हैं । आज स्थिति यह है कि भारत व चीन के व्यवसायिक संबंधों को बढ़ाने की संभावनाओं के तलाश के लिये लगभग दस हज़ार लोग पेइचिंग में हिंदी सीख रहे हैं। आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आरंभ हुआ और इसी तरह एनकोडिंग व डिकोडिंग के माध्यम से विश्व की विभिन्न भाषाएँ भी कंप्यूटर पर सुलभ होने लगीं, इस तकनीकी विकास ने भारतीय भाषाओं को जोड़ा है। हिंदी के बड़े बाजार के नब्ज़ को देखते हुये माइक्रोसॉफ्ट ने अपने सॉफ्टवेयर उत्पादों से संबंधित सहायक साहित्य तथा मार्गदर्शक सूत्रों को विशेषज्ञों की सहायता से हिंदी में उपलब्ध कराने का प्रयत्न शुरू किया गया है । बहुप्रचलित विंडोज़ विस्टा व विंडोज 7 जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एमएस वर्ड, पावर प्वाइंट, एक्सेल, नोटपैड, इंटरनेट एक्सप्लोरर, जैसे प्रमुख सॉफ्टवेयर उत्पाद अब हिंदी में कार्य करने की सुविधा प्रदान करते हैं। माइक्रोसॉफ्ट का लैंग्वेंज इंटर्फेस पैकेज स्थानीयकरण का बेहतर उदाहरण है।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग और सी डैक दोनों ने राजभाषा हिंदी में कार्य करने को आसान बनाने के उद्देश्य से हिंदी में कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराये हैं, जिसमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं-

1. LILA अथार्त Learn Indian Languages with Artificial Intelligence, एक स्वंय शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। यह राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किया गया एक निशुल्क सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ स्तर के हिंदी के पाठयक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं जैसे कन्नड़, मल्यालम, तमिल, तेलगु, बांग्ला आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है।

2. मंत्र अथार्त Machine Assisted Translation Tool सीडैक द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है । यह राजभाषा विभाग द्वारा विकसित एक मशीनी साधित अनुवाद है जो राजभाषा के प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते हैं। मंत्र राजभाषा इंटरनेट संसकरण के डिजाइन व विकास थिन क्लाइंट आर्किटेक्चर पर आधारित है, इसमें संपूर्ण अनुवाद प्रक्रिया सर्वर पर होती है, इसलिये दूरवर्ती स्थानों में भी इंटरनेट उपलब्ध लो एंड सिस्टम पर भी दस्तावेज़ों का अनुवद करने की इस सुविधा का उपयोग किया जा सकता है ।

3. श्रुतलेखन एक सतत स्पीकर इंडीपेंडेंट हिंदी स्पीच रिकगनिश्न सिस्टम है, जिसका विकास सीडैक, पुणे ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया गया है । यह स्पीच टू टेक्सट टूल है, इस विधि में प्रयोक्ता माइक्रोफोन में बोलता है तथा कंप्यूटर में मौजूद स्पीच टू टेक्स्ट प्रोग्राम उसे प्रोसेस कर पाठ/ टेक्स्ट में बदल कर लिखता है।

4. सीडैक पुणे के तकनीकी सहयोग से ई-महाशब्दकोश का निर्माण किया गया जो कि राजभाषा की साइट पर निशुल्क उपलब्ध है । यह एक द्विभाषी –द्विआयामी उच्चारण शब्दकोश हैं जिसके द्वारा हिंदी या अंग्रेज़ी अक्षरों द्वारा शब्द की सीधी खोज की जा सकती है।

5. हिंदी में शब्द संसाधन (word processing) के लिए विशेष रूप से तैयार ई-पुस्तक राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। मोबाइल फोन पर हिंदी समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है।

अनुवाद के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों से तीव्र गति से विकास हुआ है। यह मनुष्य को सोचने विचारने और संप्रेषण करने के लिए तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है। सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कंप्यूटर के साथ-साथ माइक्रोइलेक्ट्रोनिक्स और संचार प्रौद्योगिकियाँ भी शामिल है और इसके विकास का नवीनतम रूप हमें इंटरनेट, मोबाइल, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, उपग्रह प्रसारण, कंप्यूटर के रूप में दिखाई देता है। इन सबके द्वारा आज सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व को अपने आगोश में ले लिया है।कंप्यूटर टेक्नोलॉजी के अंतर्गत प्राकृतिक भाषा संसाधन के क्षेत्र में विश्व भर में अनेक विशेषज्ञ प्रणालियों का विकास किया गया है, जिनके माध्यम से कंप्यूटर साधित भाषा शिक्षण, मशीनी अनुवाद और वाक्-संसाधन से संबंधित विभिन्न अनुप्रयोग विकसित किए गए हैं। द्विभाषी-द्विआयामी अंग्रेज़ी-हिंदी उच्चारण सहित ई-महाशब्दकोश का विकास किया गया है। ई-महाशब्दकोश में लगभग प्रत्येक शब्द का उच्चारण दिया गया है। हिंदी शब्द देकर भी उसका अंग्रेज़ी में अर्थ खोज सकते हैं। प्रत्येक अंग्रेज़ी और हिंदी शब्द के प्रयोग भी दिए गए हैं।आज सूचना

प्रौद्योगिकी की विस्तृत भूमिका को देखते हुए विश्व स्तर पर हिंदी भौगोलिक सीमाओं को पार कर सूचना टेक्नोलॉजी के परिवर्तित परिदृश्य में विभिन्न जनसंचार माध्यमो तक पहुँच रही है। गूगल ट्रांसलेट आज लगभग 103 भाषाओं में परस्पर अनुवाद करता है ।

इंटरनेट पर राजभाषा हिंदी

इंटरनेट पर हिंदी को भारत की वेबदुनिया (http://www.webdunia.com/) नामक वेबसाइट ने सर्वप्रथम स्थान दिया। वेबदुनिया ने हिंदी में में लिखने की सुविधा के साथ हिंदी में मेल, समाचार, ज्योतिष, शिक्षा आदि की सुविधाएं प्रारंभ की। दूसरी ओर इंटरनेट पर विश्व प्रसिद्ध खोज इंजन गूगल और याहू सरीखी कंपनियों ने स्थानीयकरण के माध्यम से हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में अपनी सुविधाएँ देना शुरू किया। गूगल लैब्स इंडिया ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए कई सुविधाजनक अनुप्रयोग उपलब्ध करवाएँ हैं। जिसमें गूगल का संपादित्र (Input Method Editor), ऑनलाइन लिप्यंतरण सुविधा, हिंदी वर्तनी जाँचक, गूगल ट्रांस्लेट, गूगल बुक्स और हिंदी में ब्लॉगर आदि सुविधाए महत्वपूर्ण हैं। गूगल ट्रांस्लेट ने हिंदी अनुवाद को सरल बना दिया है। इससे समूचे वेबपेजों का सरल हिंदी अनुवाद संभव हो गया है। हिंदी में वेब पृष्ठों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। दैनिक जागरण समाचार समूह के साथ जुड़ कर याहू ने हिंदी खबरों को देश-दुनिया तक पहुँचाया है।

सूचना प्रौद्योगिकी युग और हिंदी का बढ़ता वर्चस्व

इन्टरनेट पर हिंदी के पोर्टल अब व्यावसायिक तौर पर आत्मनिर्भर हो रहे हैं। कई दिग्गज आईटी कंपनियां चाहे वो याहू हो, गूगल हो या कोई और ही सब हिंदी अपना रहीं हैं। माइक्रोसॉफ्ट के डेस्कटॉप उत्पाद हिंदी में उपलब्ध हैं। आई बी एँम,सन-मैक्रो सिस्टम, ओरेकल आदि ने भी हिंदी को अपनाना शुरू कर दिया हैं। इन्टरनेट एक्सप्लोरर, नेट्स्केप, मोज़िला, क्रोम आदि इन्टरनेट ब्राउज़र भी खुल कर हिंदी का समर्थन कर रहे हैं। आम कंप्यूटर उपभोक्ताओं के लिये कामकाज से लेकर डाटाबेस तक हिंदी में उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष :- यह सत्य है कि वर्तमान भारतीय समाज में राजभाषा हिंदी की भूमिका में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। सरकारी फाइलों और कागज़ी दस्तावेज़ों से निकल कर अब यह आम लोगों के मोबाइल और पर्सनल कंप्यूटरों तक पहुँच रही है। कहा जा सकता है कि राजभाषा हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर ने नई उर्जा का संचार किया है। वह दिन दूर नहीं है कि जब राजभाषा हिंदी में सभी नागरिक सेवाएँ और सरकारी काम करना सहज और सुलभ होगा।

अजय कुमार मलिक
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
रक्षा संपदा महानिदेशालय

हिन्दी पखवाड़ा 2024 के उद्घाटन समारोह की झलकियाँ

गणतंत्र दिवस समारोह - 2025 की झलकियाँ

योग दिवस - 2025 की झलकियाँ

ज्ञान का खजाना

जिद है कि अब जमाने को आधुनिक बनाना है,
सही मायनों में विज्ञान ही ज्ञान का खजाना है

जिन्दगी को जीने का अंदाज इसका पुराना है,

नकारात्मकता को एक पल में ठुकराना है,
विज्ञान की शक्ति से ही निराशाओं को झुकाना है ।

आशाओं के आसरे सफलता का हाथ उठाना है,
ये कहना गलत नहीं कि विज्ञान ही ज्ञान का खजाना है ।

साहस के साथ संरचना को अपनाना हैं,
निरंतर अनुसंधानों से जीवन का मोल चुकाना है ।

परिश्रम के दरिया में मिलकर गोते लगाना है,
समस्याओं को आज समाधान की राह दिखाना है ।

उत्सुकता ही जिसका मूल ठिकाना है,
वही विज्ञान, ज्ञान का सबसे बड़ा खजाना है ...."

प्रवीण अशोक बागल
कनिष्ठ लिपिक
छावनी परिषद अहमदनगर

सुन्दर मन भावन दिल्ली छावनी है हमारी

सुन्दर मन भावन दिल्ली छावनी है हमारी
अनुपम स्वर्ग की वसुंधरा लगती है

फूलों का संसार हमारा
नागेश गार्डन यह महसूस करता है

मुगल गार्डन से कम नहीं है
इतना प्यारा हमें भाता है

सुन्दर सड़कें, मन भावन भवन स्कूलों की इमारतें,
एक-एक कर, अपनी कहानी बयाँ करते हैं।

सुन्दर मन भावन दिल्ली छावनी है हमारी
अनुपम स्वर्ग की वसुंधरा लगती है

27 जनवरी को आर्मी परेड ग्राउंड में
ऐसी भव्य परेड का आयोजन होता है

मानो इण्डिया गेट कर्तव्य पथ पर एक
सुन्दर परेड देखने का अहसास होता है

बरार स्कायर में वार सिमेट्री
दुसरे विश्व युद्ध की याद दिलाती है

धर्म क्षेत्र में मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे
अपनी – अपनी ऐतिहासिकता दर्शाते हैं।

दो सुन्दर बाजार यहाँ के, अपने अनुशासन
एवं स्वच्छता के बारे में जाने जाते है ।

सुन्दर मन भावन दिल्ली छावनी है हमारी
अनुपम स्वर्ग की वसुंधरा लगती है ।

यहाँ चिकित्सा का अभाव नहीं है सुखमय
स्वस्थ जीवन का होता यहाँ आभास

रक्षा सम्पदा भवन, दिल्ली छावनी - 110 010

छावनी परिषद ने नारा दिया है
बेहतर जन जीवन हमारा प्रयास

छावनी स्कूलों के विद्यार्थी
शिक्षा व संस्कृति कार्यक्रमों में कर रहे कमाल है ।

दिव्यांग नौनिहालों के हौसले
कृपा स्कूल में, बेमिसाल है

सुन्दर छावनी का अनुपम दृश्य

लगता है मनोहारी
तत्पर सेवा में रहते है दिल्ली छावनी
के कर्मचारी हो या अधिकारी

हम सब का है एक ही सपना सुन्दर
और सजीला भारत देश हो अपना

सुन्दर मन भावन दिल्ली छावनी है हमारी
अनुपम स्वर्ग की वसुंधरा लगती है ।

नरेंद्र चौहान
रक्षा संपदा महानिदेशालय

नशा मुक्त भारत

इस शीर्षक पर लिखने के लिए लेखन सामग्री बहुत है। यदि हम आकलन करे तो भारत में हमेशा से ही 'नशे या मद' को अविभाज्य अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है।

भारतीय संस्कृति का मूल भाव वैसे भी मानव को उसके सभी गुण-दोषों के साथ स्वंतत्र और सहज रूप में अपनाए जाने का रहा है। यहाँ मानव महामानव और दानव के साथ – साथ दैवीय शक्तियों से भी विभूषित किया जाता रहा है बशर्ते उसका मूल स्वभाव, मानवीय गुणों के विपरीत कठोर प्रवृत्तियों से आप्लावित न हो।

पुरातनता का महान गुण, वर्तमान और अतीत के साथ-भविष्य को जोड़ने का है। इस जुड़न में संस्कृति के घटक अपने स्वाभाविक काल क्रम में खंडित और विस्तीर्ण हो नई परिभाषाओं में गड़े जाते रहे है। किन्तु जो शाश्वत और चिरस्थायी मानवीय दोष है उन्हें संस्कृति ने पुरातनता वश भविष्य के मोह में कभी नहीं त्यागा। ये हमेशा मानवीय सभ्यता के पल्लवन और विकसन में उसके मूल का हिस्सा बने रहे। इन मानवीय गुण, दोषों के अंगीकरण का कार्य भारतीय समाज वेदों और उपनिषदों के समय से करता रहा है। हमें प्राचीन ग्रंथों में भी नशे या मद का चित्रण तत्कालीन परिस्थितियों में रची रचनाओं में मिलता रहा है। इसके उदाहरण यंत्र-तंत्र मिल जाते हैं। आप प्राकृत भाषा के ग्रंथों को पलट कर देख लें: बसंत ऋतु की मतवाली हवाओं और वातावरण में व्याप्त सुगन्धित पुष्पों की गंध से उस समय का समाज कभी अछूता नहीं रहा।

कालिदास के साहित्य की बात हो अथवा उस समय के राजा-महाराजाओं की, मद या नशे के वशीभूत अनेक प्रसंग यंत्र-तंत्र साहित्य का हिस्सा बनते रहे हैं।

समुद्र मंथन के दौरान निकली विभिन्न वस्तुओं में 'सुरा' का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जिसके पान से सुर-असुर सभी के अवश होने का वर्णन मिलता है।

भय और असुरक्षा हमेशा से ही मानवीय मूल का जरूरी हिस्सा रहे हैं। यदि कहें कि ज्यादातर गतिविधियों और सोच का आधार भय और असुरक्षा ही है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। दुर्बल मन इन कमजोरियों के वशीभूत हो आसानी से नशे का शिकार बन सकता है। किन्तु केवल दुर्बल मन वाला व्यक्ति ही इनका सेवन करता हो, ऐसा भी नहीं है। आंतरिक सुख और ताकत के नशे में डूबा व्यक्ति भी आसानी से नशे की चपेट में आ सकता है, हां सेवन के उसके अपने कारण हो सकते हैं।

बहरहाल, यहाँ नशे की मिजाज- पुरसी या उसके महात्मय का वर्णन नहीं हो रहा, जैसा कि शीर्षक ही बता रहा है, पूरा जोर 'नशा मुक्त भारत' अवधारणा को चरितार्थ करने पर है।

किन्तु क्या ये इतना ही सरल है। यदि आंकड़ों की बात करे तो बिहार, गुजरात जैसे मद्यपान-निषेध राज्यों में गैर-कानूनी रूप से शराब और अन्य नशा सामग्री बहुतायत से और आसानी से उपलब्ध हो जाती है। मानव प्रकृति का तकाजा है – निषेधात्मक निर्देश व्यक्ति को और आकर्षित करते हैं। प्रचुरता का एक गुण उसके महातम्य अथवा दुर्लभता को खो देने का है। जो सामग्री जितनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगी उसके प्रति रूचि का भाव भी उतनी तेजी से ख़त्म होगा। पर बात यहाँ नशे की हो रही है। नशे की तासीर उसकी प्रचुरता में और भड़क उठती है। अपने चारों ओर नशे के साम्राज्य में दुर्बल मन और उतरता जाता है, उससे बाहर आने का कोई यत्न उसके द्वारा नहीं किया जाता। परवशता की स्थिति उसके सोचने समझने की विवेक बुद्धि को हर लेती है। समझने के बावजूद उस स्थिति से बाहर निकलने में उसे कोई लाभ नहीं दिखाई पड़ता।

एक recent incident बताती हूँ। मेरी एक रिश्तेदार Therapist हैं। उनके पास नशे के शिकार लड़के-लडकियां इस प्रवृत्ति से छुटकारा पाने के लिए therapy लेने आते हैं, किन्तु इसे विडंबना समझिए कि मेरी रिश्तेदार समझ नहीं पाती कि therapy के दौरान इनमें से कोई under drug influence तो नहीं हैं दूसरे शब्दों में वो ये बिल्कुल judge नहीं कर पाती कि नशे से छुटकारा पाने के लिए therapy के लिए आया patient अभी भी नशे के influence में ही कहीं remedy की बात तो नहीं कर रहा है। ऐसे में उसके रोग, मानसिक स्थिति अथवा नशे का सही निदान/उपचार किस भांति संभव होगा, यह विचारणीय है। खैर व्यावहारिक बात करें तो सरकार नशे की बढ़ती समस्या के समाधान दिशा में कृत संकल्प है। स्कूल, कॉलेजों के आस-पास 100 मीटर के दायरे में किसी भी अवांछित गतिविधि की permission नहीं है। नशे के कारोबारी किन्तु मासूम बच्चों, युवाओं को शिकार बनाने के लिए नित नए उपाय अपनाते है इसे भी ध्यान में रखने, मॉनीटरिंग की आवश्यकता है।

नशा मुक्त भारत की अवधारणा का पूरा चक्र नशे की उत्पादकता, उसके सेवन, बाजार, राजस्व सभी मदों से जुड़ा है। या कहें कि ये सभी मदें अन्योन्याश्रित हैं। सरकार को भी शराब से राजस्व की प्राप्ति होती है, जो आय का बड़ा साधन है। शराब से इतर नशे, जिनकी चपेट में आकर युवा पीढ़ी के पूरी तरह नष्ट हो जाने का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा हैं। वहाँ ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। अनेक अफ्रीकी देशों में युवा पीढ़ी में गहरी जड़ जमा चुके इन मादक द्रव्यों के सेवन से सामाजिक, आर्थिक और मानसिक सभी स्तरों पर irreversible नुकसान सरकारों/समाज को झेलने पड़ रहे है।

सभी तरह के नशे पर बैन तो नहीं लगाया जा सकता। पूरी कोशिश इस बात की होनी चाहिए कि नशे की उपलब्धता न हो पाए। इस दिशा में सरकार के कड़े कदम रोकथाम दिशा में कारगर हो सकते हैं।

Narcotics विभाग की पूरी मॉनीटरिंग से सख्ती से लगाम लगाई जा सकती है। नशे के दुष्परिणामों को समाचार पत्रों, विज्ञापनों, टीवी के जरिए बताने के साथ-साथ निषेधात्मक चेतावनी को भी लागू किया जा सकता है। हालाँकि ये उपाय चलन में हैं किन्तु इस दिशा में कदम उठाए जाने चाहिए। नशे के व्यापारी अपराधियों को कठोर दंड देने के प्रावधान किए जाने चाहिए।

स्कूली शिक्षा के formative वर्षों में बच्चों को नशे और उससे जुड़े प्रभावों के बारे में संक्षेप में बताना श्रेयस्कर होगा। TImes of India में छपे एक लेख के अनुसार 05 वर्ष की आयु वाले छोटे बच्चे तक नशे की घातक बीमारी का शिकार हो रहे हैं। उन्हें स्कूल के टायलेट, लाइब्रेरी, कैंटीन के विशेष स्थानों पर घातक मादक द्रव्य रखे मिलते हैं। ये द्रव्य बड़े बच्चे अपने नशे का इंतजाम करने के लिए छोटे बच्चों को मुहैया कराते हैं फिर उनसे घर से पैसा मंगवाते है। बड़े बच्चे ये पैसा नशा व्यापारी अपराधी को देते हैं। तो बात यहाँ इस chain को तोड़ने की है। जिस तरह करोना काल में chain तोड़कर बीमारी को फैलने से रोकने पर जोर दिया गया, वही तथ्य यहाँ भी लागू हैं। बड़ा नशा व्यापार करने वालों पर लगाम कसने के लिए उनकी modus operandi, समय, सोच सभी को गूढ़ विवेचनात्मक दृष्टि से समझना होगा। साथ ही पोर्ट, एअरपोर्ट, बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, सभी पर close निगरानी रखनी होगी। पुलिस और narcotics विभाग की मुस्तैदी से आगामी पीढी को खतरनाक द्रव्य सेवन से बचाया जा सकता है।

नशे का शिकार व्यक्ति प्रताड़ना अथवा आत्मग्लानि का शिकार न बने, इसके लिए समाज, परिवार को पूरे समन्वय के साथ काम करना होगा। नशा मुक्त केन्द्रों की स्थापना इस दिशा में सार्थक पहल मानी जा सकती है। नशा मुक्त भारत का स्वप्न तभी साकार होगा, जब जीवन मूल्यों की संगतता, उनका महत्व, बाल मन को शुरू से ही बताया जाए। मानव मन की दुर्बलताएं, उसके सामाजिक और मानसिक सरोकार, सुरक्षा – असुरक्षा शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर बताए जा सकते हैं। शर्त यही है कि शिक्षा के सोपान क्रम के किसी भी स्तर पर मुद्दे को छोड़ा न जाए। बढ़ते स्तर पर बाल और किशोर (teenage) मन को नशे के दुष्परिणामों से परिचय कराते हुए भारतीय न्याय संहिता के दंड विधान को इसमें शामिल किया जा सकता है।

संक्षेप में जीवन के आरंभिक और आगामी वर्षों की नींव में नशा रूपी दीपक को घर न बनने देना, नशा आक्रांत होने के पश्चात् सही परामर्श और उपचार, नशे की रोकथाम में विधायी अनुपालन सभी दिशाओं में कार्य करना सही होगा। तब ही शायद 'नशा मुक्त भारत की अवधारणा भी सिद्ध हो पाए (संभावनाओं के अनंत आकाश असीमित हैं, इसीलिए कोई भी पक्ष अछूता क्यों रहे)!

चारू तिवारी
सहायक निदेशक
रक्षा संपदा महानिदेशालय

राह की धूल

चलते-चलते थक गई
राह की धूल
न जाने कबसे निकली थी
कहाँ था उसका ठिकाना
चल रही है वह
न मंजिल का पता न रुकने की छांह
अब तो खुद की ही
लाश ढो रही हो जैसे
कभी रुक जाती थककर
बिछ जाती, फिर उठती
जैसे हवा के झोंके ने
मारी हो ठोकर कोई
ऐ बारिश! इतना रहम कर
तेरी बूंदों से
भीग जाने दे इसे
इतना करम कर
महक उठेगी फिर यह
मिट्टी बनकर
खिल उठेगी
हरियाली की चादर ओढ़े
गूंजेगी किलकारियां पंछियों की
गोद में इसके
खिल उठेगी यह
माँ बनकर
रोक ले इसे
यूँ बहने से
थाम ले दामन इसका
भीग जाने से इसे
तेरी बूंदों के सहारे ....

किरण पौनीकर
उ.म.अ.-I
प्रधान निदेशालय रक्षा सम्पदा
दक्षिण कमान, पुणे

गूँज उठी किलकारी

जब जीवन की बगिया थी सूनी
नहीं थी इसमें हरियाली
आशा फिर भी थी मन में
कभी तो महकेगी फुलवारी
फिर जन्मी शिवान्या घर में
तब चहकी किलकारी
नन्हे-नन्हें हाथों से, तोतली मीठी बातों से
हृदय को आनंदित करते हुए, एक उमंग भरते हुए
सरपट दौड़ लगाते हुए, कुछ भी मुंह में खाते हुए
हमारे पीछे भागते हुए, कभी-कभी शोर मचाते हुए
वो बचपन याद दिलाती है
उसकी ये बातें तो अंतर्मन को भाती हैं
नन्ही शिवान्या नन्हें क़दमों से जब चलकर आती है
मन को मिलती शांति और चेहरे को कांति है
बेटी ईश्वर की है देन, ये है अनुपम उपहार
इनका करें आदर और दें इन्हें भरपूर प्यार
बेटा-बेटी समाज के है प्रमुख अंग
इनमें भेद कर, न करें समाज को भंग
दें इन्हें समान अवसर आगे बढ़ने के आज
तभी तो ये कर सकेंगे जीवन में महत्वपूर्ण काज
हो सकेगा देश का तब सम्पूर्ण विकास
जब बढ़ेंगे बेटा-बेटी कदम मिलाकर साथ

संदीप बी मेश्राम
आशुलिपिक – I
प्र.नि.र.सं.द. कमान

स्वामी विवेकानंद

'यदि पृथ्वी पर कोई ऐसा देश है जिसे हम धन्य पुण्यभूमि कह सकते है, यदि ऐसा कोई स्थान है, जहाँ पृथ्वी के सब जीवों को अपना कर्मफल भोगने के लिए आना पड़ता है, यदि ऐसा कोई देश है जहाँ भगवान की ओर उन्मुख होने के प्रयत्न में संलग्न रहने वाले जीवमात्र को अंतत: आना होगा, यदि कोई ऐसा देश है जहाँ मानवजाति की क्षमा, धृति, दया, सुद्धता आदि सद्तियों का सर्वाधिक विकास हुआ है और ऐसा कोई देश है जहाँ आध्यामिकता तथा आत्मान्वेषण का सर्वाधिक विकास हुआ है तो वह भूमि भारत ही है।'

अपने देश 'भारत' के प्रति ऐसे ओजस्वी विचार रखने वाले स्वामी विवेकानंद जी के बारे मैं कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाना है।

स्वामी विवेकानंद का जन्म कोलकाता में 12 जनवरी, 1863 को हुआ। इनके पिता का नाम श्री विश्वनाथ दत्त तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। विश्वनाथ दत्त कोलकता उच्च न्यायालय में अटॉर्नी-एट-लॉ थे। वे अति उदार तथा धार्मिक व सामाजिक विषयों में व्यावहारिक और रचनात्मक दृष्टिकोण रखते थे। भुवनेश्वरी देवी भी सरल व धार्मिक महिला थी।

स्वामी विवेकानंद का नाम विवेकानन्द तो बाद में पड़ा लेकिन जन्म से ये नरेन्द्रनाथ दत्त या नरेन्द्र के नाम से ही जाने जाते थे। नरेन्द्रनाथ तेजस्वी थे। इन्हें बचपन से ही संगीत, खेलकूद व आध्यात्मिक बातों में रूचि थी। उनकी माता उन्हें रामायण, महाभारत की कहानियां सुनाती जिनकी उन पर अमिट छाप थी। गरीबों के प्रति उनके मन में काफ़ी सहानुभूति थी। वे अपने नए वस्त्र भी गरीबों को दे देते थे। यह करूणा उनकी आयु के साथ बढ़ती ही गई।

सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करके नरेन्द्रनाथ को पता चला कि धर्म ही भारत की शक्ति तथा अमूल्य निधि है। अपने देश के प्रति प्रेम होने पर भी कुछ चीजों को देखकर उनका मन बहुत दुखी हो उठता था। जैसे गरीबी, शिक्षा का अभाव, स्त्रियों की दुर्गति इत्यादि।

आगे चलकर उन्होंने पश्चिम में जाने का निर्णय भी इसलिए लिया ताकि वे सम्पूर्ण विश्व में भारत की धार्मिक परम्परा और संस्कृति को फैला सकें तथा भारत के गरीबों के लिए सहायता का प्रयत्न कर सकें। जब उनकी अमेरिका यात्रा की तैयारियां चल रही थी तभी अचानक खेतड़ी के महाराज का निमंत्रण आया और उन्हें वहां जाना पड़ा। महाराजा ने उनको हर संभव सहयोग देने का वचन दिया और इनके ही सुझाव पर स्वामीजी ने विवेकानंद नाम अपना लिया।

अमेरिका के सुविज्ञ वर्ग को यह समझाने में भी वे सफल हुए कि भारत ही समस्त सत्य दर्शन और तत्वज्ञान की जननी है। वहां जहाँ भी उनका प्रवचन होता लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती। शिकागो की धर्म संसद में स्वामीजी की उपस्थिति भारत के पुनरूत्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी जैसा कि श्री अरविन्द ने भी कहा कि "विवेकानंद का पश्चिम में जाना विश्व के सामने पहला जीता जागता संकेत था कि भारत जाग उठा है। केवल जीवित रहने के लिए नहीं बल्कि विजयी होने के लिए"।

मई, 1901 के दूसरे सप्ताह वे मठ में लौटे। इस दौरान उन्होंने ढाका, गुवाहाटी और शिलांग में कुछ प्रवचन भी दिए। उनके प्रेरणादायी शब्दों ने धीरे-धीरे कई राष्ट्रीय नेताओं और क्रांतिकारियों पर प्रभाव डाला।स्वामी जी जब वाराणसी गए तो उन्होंने देखा कि उनके संदेशों से प्रेरित होकर कुछ युवाओं ने गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करना शुरू कर दिया है और उनके इस कार्य में रामकृष्ण मिशन तैयार था।

वास्तव में स्वामी जी के कथन भारत और धर्म को लेकर बिलकुल सत्य सिद्ध हुए क्योंकि स्वतंत्रता आन्दोलन हो अथवा बाद के समस्त राष्ट्र निर्माण के प्रयास, सभी ने स्वामी विवेकानंद से प्रेरणा ली, आज भी ले रहे है तथा भविष्य में भी लेते रहेंगे।

स्वामी जी ने भारतवासियों को अपने देश से प्रेम करना, उसे आदर देना और उसके लिए काम करना सिखाया। इतना ही नहीं उनके साहस और निष्ठा की शक्ति ने ही पश्चिम लोगों को भी भारत और उसकी सभ्यता के प्रति प्रेम करने के लिए प्रेरित किया।

मुकेश
उप खंड अधिकारी II
प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा
दक्षिण पश्चिम कमान जयपुर

पूज्य माताजी के निधन पर उन्हें समर्पित एक स्वरचित लघु कविता, जिसका शीर्षक है:-

(अंतिम आस)

जब से गए है पूज्य पिताजी

तब से थी सिर्फ एक ही आस

कुछ भी हो चिंता नहीं,

माँ तो हैं अभी अपने साथ

सोचकर ये बाते हम आगे बढ़ते जाते थे

माँ का सिर पर हाथ है,

फुले नहीं समाते थे

यह खुशी भी वक्त को नहीं आई रास

छीन लिया फिर माँ को उसने बढाकर अपना हाथ

भरी दुनिया में हम तो हो गए बिल्कुल अनाथ

ऐसी बातों पर अक्सर लोग करते है ये बात

उम्रभर जीवन में कोई रहता नहीं है साथ

अकेले आगे बढ़ते रहो चाहे दिन हो या रात

बीतते वक्त में यादें धुंधली हो जाएंगी

पर कभी न कभी माँ तो हमें याद आएगी

यादों को जीवन में हमसफ़र बनाना होगा

फिर उठकर कर्तव्य पथ पर जाना होगा

मनीष कुमार श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
रक्षा संपदा निदेशालय,पुणे

पिताजी के अकस्मात निधन पर उन्हें समर्पित स्वरचित कविता

(प्यारे पिताजी)

उंगली पकड़कर जिसने चलना सिखाया

काँधे पर जिसने सबका बोझ उठाया

वो पिता ही है जिन्होंने हमें आगे बढाया

यादों में सदियों के लम्हे सिमट जाएँगे

खुद को सम्भालो कि अब पिताजी नहीं आएँगे

जीवन के शेष पल अब उनकी यादों में गुजर जाएँगे

मधुर यादों में कभी हम यूँ ही मुस्कुराएंगे

सुखदायी यादों में कभी फिर आंसू छलक जाएँगे

पर उनकी दी हुई शिक्षा को कभी न भूल पाएँगे

जीवन में हम कभी यदि किसी संकट में फंस जाएँगे

याद कर पिताजी को उस संकट से उबर जाएँगे

मन में सदा यही हम विश्वास बस जगाएंगे

हर फैसले में जीवन के पिताजी मार्ग दिखाएंगे

शिखर पर पहुंचकर जब हम मुस्कुराएंगे

पिताजी के एहसानों को कभी न भूल पाएँगे

पिताजी के एहसानों को कभी न भूल पाएँगे

मनीष कुमार श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
रक्षा संपदा निदेशालय,पुणे

माँ "एक प्रेरणा"

झूठा है सारा संसार, झूठी है सारी माया
माँ एक तू ही सच्ची
सारी दुनिया जानकर, ये जाना है मैंने
माँ निराली है और, माँ का प्यार निराला है।

ममता की मूरत है माँ, भगवान की सूरत है माँ
हर गम खुद सहती है, धूप में खुद जलती है
अपने आँचल की छाँव में,मुझे छुपाती है माँ

जिसने मुझको चलना सिखाया
दुनिया के हर गम को, जिसने हमें सहना सिखाया
झूठा है सारा संसार, झूठी है सारी माया
माँ एक, तू ही है सच्ची

ममता की सूरत है माँ, भगवान की सूरत है माँ
जादू ऐसा दिखलाती माँ, जीवन के हर गम को मिटाती माँ
जन्नत की छाँव, ममता की सूरत है माँ ।

सारी दुनिया जानकर, ये जाना है मैंने
मेरे जीवन की पहचान मेरी माँ है
झूठा है सारा संसार, झूठी है सारी माया
माँ एक, तू ही है सच्ची

संगीता यादव
सहायक अध्यापिका
कैंट पब्लिक स्कूल, सदर बाजार
झाँसी

कहानी हसीन होनी चाहिए

किरदार चाहे जो भी हो

कहानी हसीन होनी चाहिए ...

दिल में अच्छाई और

आँखों में प्यार होना चाहिए ....

मायूसी में क्या रखा है

जिन्दगी तो गुलजार होनी चाहिए ...

सजते तो सभी है आजकल

पर उसमें थोड़ी सादगी की मिलावट भी होनी चाहिए ...

यूं तो सबके जिन्दगी का सफ़र आसान नहीं होता

जिन्दगी जीने के लिए खुशमिजाज होना चाहिए ....

मिठास होठों पर नहीं

दिल में होनी चाहिए....

लोग चाहे जैसे भी बर्ताव करें

पर आपके बर्ताव में संस्कार होने चाहिए ...

स्वार्थ से भरी इस दुनिया में

थोड़ा निस्वार्थ भी होना चाहिए ....

किरदार चाहे जो भी हो

कहानी हसीन होनी चाहिए ...

अंजिक्य देशमुख
कनिष्ठ लिपिक
अहमदनगर छावनी परिषद

अनमोल हिंदी

चमकते है तारे जैसे आसमान में,
हिंदी भाषा भी चमकती है वैसे ही हिन्दुस्तान में,
जंगल की हरियाली पेड़-पौधों से
हमारे देश की हरियाली हिंदी भाषा से
जब तक रहे रामायण –महाभारत
तब तक रहे हमारी हिंदी भाषा
कवियों की कविता के सागर जैसी
इसमें रहते अनमोल मोती
सबसे सुन्दर, सबसे प्यारी
हम सबकी अभिलाषा
सरल, सुबोध और सुमधुर
है हमारी हिंदी भाषा
देश की उन्नति का है एकमात्र सरल उपाय
हिंदी भाषा को अब राष्ट्रभाषा घोषित किया जाए

श्रीमती के, अमुदा
हिंदी अनुवादक (संविदारत)
छावनी परिषद सेंट थॉमस माउंट

तमन्ना

जब मन में है तमन्ना

हम कर सकते है कुछ भी

आसमान को छूना है तो फ़ैलाने होंगे पर भी

अपने घोंसले से बाहर आना है

आंधी हो या तूफान

उन्नति के लिए बढ़ते जाना है ।

थकावट हमारी जिंदगी की रूकावट है

'बढ़ते जाओ, मिलेगी मंजिल'

यह सुन्दर कहावत है ।

तन में होती यह थकावट

मन में होती है नहीं

है इरादे फौलाद जैसे तो

मंजिल मिलेगी कहीं न कहीं

रुकने का नहीं नाम है जीवन

चलने का है नाम

शौक करने भी है हमें पूरे

और करना भी है काम

श्रीमती के, अमुदा
हिंदी अनुवादक (संविदारत)
छावनी परिषद सेंट थॉमस माउंट

भारत के छावनी बोर्ड

(ऐतिहासिक धरोहर, सामाजिक महत्व और अस्तित्व के लिए लड़ाई)

भारत में छावनी बोर्ड का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से गहरा महत्व है। ये बोर्ड न केवल सैन्य क्षेत्रों का संचालन करते है, बल्कि देश के नागरिक जीवन में भी एक अहम् भूमिका निभाते है। इन बोर्डों ने भारतीय समाज के ताने-बाने में एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है, जो सैन्य और नागरिक जीवन के मिश्रण को दर्शाता है।

हाल के वर्षों में छावनी बोर्डों के भविष्य को लेकर बहस तेज हो गई है, जिसमें कुछ बोर्डों को नागरिक क्षेत्रों में विलय करने के प्रस्ताव शामिल है। इस सन्दर्भ में, यह आवश्यक है कि हम छावनी बोर्डों के महत्व, उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक योगदान और आधुनिक चुनौतियों का व्यापक विश्लेषण करे और इनके अस्ति-त्व को जिन्दा रखने का प्रयास करें।

छावनी बोर्डों की स्थापना ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा 18वीं और 19वीं शताब्दी में की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सैनिकों और उनके परिवारों के लिए सुरक्षित और सुव्यवस्थित आवास तथा सुविधाएं प्रदान करना था। इस क्षेत्रों को सैन्य आवश्यकतों के अनुसार विकसित किया गया, जिसमें सैन्य बैरक, प्रशिक्षण मैदान, अस्पताल और अन्य आवश्यक सुविधाएँ शामिल थी। समय के साथ, इस छावनियों ने न केवल सैन्य प्रतिष्ठानों के रूप में, बल्कि नागरिक समुदायों के रूप में भी विकसित होना शुरू किया। स्थानीय व्यापारी, कारीगर और सेवा प्रदाता इन क्षेत्रों में आकर बस गए, जिससे एक मिश्रित आबादी का निर्माण हुआ।

स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार ने छावनी बोर्डों की संरचना और प्रशासन को बनाए रखा, लेकिन उनकी भूमिका और कार्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए। सैन्य आवश्यकताओं के साथ-साथ, इन बोर्डों को नागरिक सुविधाओं और सेवाओं के प्रावधान के लिए भी जिम्मेदार बनाया गया। छावनी अधिनियम, 2006 ने इन बोर्डों के प्रशासन और कार्यों को व्यवस्थित करने के लिए एक व्यापक क़ानूनी ढांचा प्रदान किया ।

छावनी बोर्ड क्षेत्र भारतीय इतिहास और संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से है। इन क्षेत्रों में कई ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर, मस्जिद, चर्च और अन्य सांस्कृतिक स्थल स्थित है, जो विभिन्न कालखंडों और संस्कृतियों को दर्शाते है । उदाहरण के लिए, दिल्ली, मेरठ, आगरा, और पुणे जैसे छावनी क्षेत्रों में ब्रिटिश काल के कई ऐतिहासिक भवन और स्मारक है, जो औपनिवेशिक वास्तुकला और इतिहास के महत्वपूर्ण उदाहरण है । ये इमारतें और स्मारक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, ब्रिटिश शासन और भारतीय संस्कृति की पहचान है। इन क्षेत्रों में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समुदायों का सह-अस्तित्व भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। छावनी क्षेत्रों में स्थित मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरूद्वारे न केवल धार्मिक स्थल है, बल्कि सामुदायिक मिलन के केंद्र भी है। ये स्थल विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और त्योहारों का आयोजन करते है, जो स्थानीय के बीच एकता और सद्भाव को बढ़ावा देते है।

छावनी बोर्ड केवल सैन्य सेवाओं से जुड़ा हुआ एक प्रशासनिक निकाय नहीं है, बल्कि ये लाखों नागरिकों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न करते है। इन बोर्ड के तहत बहुत सारी सेवाएँ प्रदान की जाती है, जैसे कि अस्पताल, स्कूल, जल आपूर्ति, सफाई, सड़क निर्माण और अन्य बुनियादी सेवाएँ। ये सेवाएँ न केवल सैन्य कर्मियों के लिए बल्कि स्थानीय नागरिकों के लिए भी उपलब्ध होती है।

छावनी बोर्ड में काम करने वाले कर्मचारियों में डॉक्टर, शिक्षक, सफाईकर्मी, ठेकेदार, दुकानदार और प्रशासनिक कर्मचारी शामिल होते है। इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार बढ़ रहे है, खासकर विकास कार्यों और सेवाओं के विस्तार के साथ। कई नागरिक इन बोर्ड में स्थायी या अस्थायी काम पाकर अपनी आजीविका चलते है, और इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ होता है। इसके आलावा, छावनी क्षेत्रों में कई छोटे व्यवसाय और उद्यम भी चलते है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करते है।

इन बोर्ड के अंतर्गत उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाएँ, जैसे कि अस्पताल, क्लीनिक और अन्य मेडिकल सुविधाओं से स्वास्थ्य क्षेत्र में रोजगार के अवसर उत्पन्न होते है। इसके अलावा, शिक्षा के क्षेत्र में भी छावनी बोर्ड द्वारा रोजगार सृजन की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि इन क्षेत्रों में विशेष स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की गई हैं, जो बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करते हैं। दिव्यांग बच्चों को हमेशा उत्तम सुविधाएँ प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। भारत सरकार की कई महत्वपूर्ण तथा लोक कल्याण योजनाएं इन्हीं छावनी बोर्ड द्वारा चलाई जाती है जो स्थानीय समुदायों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद करने के साथ साथ रोजगार के अवसर भी उपलब्ध करवाते है।

हाल के वर्षों में, कुछ छावनी बोर्डों को नागरिक क्षेत्रों में विलय करने का प्रस्ताव सामने आया है प्रस्ताव के समर्थकों का तर्क है कि इससे प्रशासनिक दक्षता में सुधार होगा और संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होगा। छावनी बोर्डों के भविष्य को लेकर चल रही बहस में,यह आवश्यक है कि विलय करने से पहले, हमें उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं और परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए।

छावनी बोर्डों के संरक्षण और विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों को आधुनिक सुविधाओं और सेवाओं के साथ विकसित किया जाना चाहिए, जबकि उनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए किया जाना चाहिए।

छावनी बोर्डों के प्रशासन में कई चुनौतियाँ भी है। इन बोर्डों को सैन्य और नागरिक आवश्यकताओं को संतुलित करना होता है, जो कई बार मुश्किल हो सकता है। इसके अलावा, भूमि उपयोग, विकास नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है। छावनी बोर्डों का विलय कर देने से ये सारी चुनौतियाँ और उग्र रूप ले सकती हैं।

निष्कर्ष

भारत में छावनी बोर्ड का अस्तित्व सिर्फ सैन्य कार्यों से जुड़ा नहीं है, बल्कि यह हमारे इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर, और नागरिकों को बुनियादी सेवाओं के प्रदानकर्ता के रूप में एक अहम् भूमिका निभाता है। इन बोर्ड के माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार मिलता है, और नागरिक जीवन की गुणवत्ता बेहतर होती है। इस कारण, हमें इन बोर्ड की महत्ता को समझते हुए इन्हें खत्म करने के बजाय उनका संरक्षण और विकास करना चाहिए।

आज के समय में जब शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की गति तेज हो रही है, तो छावनी बोर्ड का अस्तित्व और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। ये बोर्ड न केवल सैन्य ठिकानों का प्रबंधन करते है, बल्कि ये श्री योजनाओं के लिए भी एक आदर्श प्रस्तुत करते है। इनमें साफ-सफाई, बुनियादी ढाँचे की गुणवत्ता, और सुरक्षा के मामले में अच्छे उदाहरण देखे जा सकते है।

आदिल प्रताप सिंह
विधि अधिकारी
प्रधान निदेशालय, रक्षा संपदा
पश्चिमी कमान, चंडीगढ़

भ्रष्टाचार: एक समाज का दीमक

भ्रष्टाचार (Corruption) शब्द लैटिन भाषा के 'करप्टस' (corruptus) से आया है, जिसका अर्थ है 'पतन' या 'भ्रष्ट करना'। यह किसी भी समाज और राष्ट्र के लिए एक धीमा जहर है जो उसकी जड़ों को खोखला कर देता है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए भ्रष्टाचार एक गंभीर चुनौती है, जो न केवल आर्थिक प्रगति को बाधित करता है बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी कमजोर करता है। यह एक ऐसी बीमारी है जो व्यक्तिगत नैतिकता से लेकर सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र तक फैल चुकी है।

भ्रष्टाचार मूलतः अपने पद, शक्ति या प्रभाव का निजी लाभ के लिए गलत इस्तेमाल है। इसमें रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी, भाई-भतीजावाद, ब्लैकमेलिंग, अवैध धन उगाही, और सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग जैसी अनेक गतिविधियां शामिल हैं। ये सभी गतिविधियां कानून और नैतिकता के सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं, और समाज में अविश्वास व निराशा का माहौल बनाती हैं।

भारत में भ्रष्टाचार की जड़ें काफी गहरी हैं। ऐतिहासिक रूप से, औपनिवेशिक काल से ही कुछ हद तक यह प्रवृत्ति मौजूद रही है, जहां सत्ता का दुरुपयोग आम था। स्वतंत्रता के बाद, हालांकि एक लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा गया, भ्रष्टाचार विभिन्न रूपों में फलता-फूलता रहा। आज, यह राजनीतिक दलों, नौकरशाही, पुलिस, न्यायपालिका, और यहां तक की निजी क्षेत्रों में भी व्याप्त है।

भ्रष्टाचार के कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारणों में से एक है लालच और नैतिकता का पतन। जब व्यक्ति अपने स्वार्थ को समाज या राष्ट्र के हित से ऊपर रखने लगता है, तो भ्रष्टाचार की शुरुआत होती है। दूसरा कारण है कमजोर कानूनी ढांचे और उनका ढीला-ढाला कार्यान्वयन। कई बार भ्रष्टाचार के मामलों में त्वरित और कठोर दंड का अभाव दोषियों को बढ़ावा देता है। पारदर्शिता की कमी और अत्यधिक लालफीताशाही भी भ्रष्टाचार को पनपने का अवसर देती है, जहां हर छोटे काम के लिए रिश्वत की मांग की जाती है। गरीबी और बेरोजगारी भी अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती हैं, जब लोग अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए गलत साधनों का सहारा लेने को मजबूर होते हैं। चुनावों में धनबल का बढ़ता उपयोग और काले धन का प्रचलन भी राजनीतिक भ्रष्टाचार को जन्म देता है, जिसका असर पूरे शासन तंत्र पर पड़ता है।

भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम अत्यंत गंभीर और व्यापक होते हैं। आर्थिक रूप से, यह देश के विकास को धीमा करता है। विदेशी निवेश में कमी आती है, क्योंकि निवेशक ऐसे देश में पूंजी लगाना पसंद नहीं करते जहां भ्रष्टाचार का खतरा हो। सरकारी परियोजनाओं में पारदर्शिता की कमी के कारण उनकी लागत बढ़ जाती है और गुणवत्ता घट जाती है, जिससे जनता को सीधे तौर पर नुकसान होता है। काला धन अर्थव्यवस्था को समांतर रूप से चलाता है, जिससे सरकारी राजस्व का नुकसान होता है।

सामाजिक रूप से, भ्रष्टाचार समाज में असमानता को बढ़ाता है। अमीर और शक्तिशाली लोग आसानी से अपना काम करवा लेते हैं, जबकि आम जनता को न्याय और सेवाओं के लिए दर-दर भटकना पड़ता है। इससे लोगों में निराशा और असंतोष बढ़ता है, जो कभी-कभी सामाजिक अशांति का कारण भी बनता है। यह नैतिकता और ईमानदारी के मूल्यों को कमजोर करता है, और समाज में 'जैसे को तैसा' की भावना को बढ़ावा देता है। प्रशासन पर से लोगों का विश्वास उठ जाता है, जिससे कानून-व्यवस्था की स्थिति भी प्रभावित होती है।

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सबसे पहले, कानूनों को और अधिक सख्त बनाने और उनका कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार निरोधक संस्थाओं जैसे लोकपाल, लोकायुक्त, और केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) को और अधिक अधिकार और स्वायत्तता देनी चाहिए। न्यायपालिका को भ्रष्टाचार के मामलों में त्वरित निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

दूसरा, सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता बढ़ानी होगी। सरकारी विभागों में ई-गवर्नेंस और डिजिटल सेवाओं को बढ़ावा देना चाहिए ताकि मानवीय हस्तक्षेप कम हो। सूचना का अधिकार (RTI) कानून को प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए ताकि नागरिक सरकारी कामकाज पर नजर रख सकें। संपत्ति घोषणाओं को सार्वजनिक करना और उनके सत्यापन को अनिवार्य बनाना भी महत्वपूर्ण है।

तीसरा, शिक्षा और नैतिक मूल्यों पर जोर देना आवश्यक है। स्कूलों और कॉलेजों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और नागरिक जिम्मेदारी के मूल्यों को inculcate करना चाहिए। मीडिया को भ्रष्टाचार के मामलों को उजागर करने में अपनी

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहना चाहिए।

चौथा, व्हिसिल ब्लोअर संरक्षण को मजबूत करना चाहिए ताकि वे बिना किसी डर के भ्रष्टाचार का खुलासा कर सकें। राजनीतिक दलों में आंतरिक पारदर्शिता लाना और चुनावी फंडिंग में सुधार करना भी आवश्यक है। अंततः, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में जनता की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। नागरिक समाज संगठनों को सशक्त बनाना चाहिए और लोगों को भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

भ्रष्टाचार एक ऐसी चुनौती है जिससे निपटने के लिए सरकार, नागरिक समाज, और प्रत्येक व्यक्ति को मिलकर काम करना होगा। यह एक लंबी और कठिन लड़ाई है, लेकिन एक ईमानदार और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। जब तक हर नागरिक अपनी भूमिका नहीं निभाता और अनैतिकता के खिलाफ खड़ा नहीं होता, तब तक भ्रष्टाचार के इस दीमक को पूरी तरह से खत्म कर पाना मुश्किल होगा।

शालिनी ठाकुर
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

मंजिल

हमारे विचार ही हमारे कर्मों का दर्पण होते है और यदि हमारे विचारों में दूसरों के भविष्य संवारने का जज्बा भी शामिल हो जाए तो वे विचार बेशकीमती हो जाते है।

एयरपोर्ट पर खड़ा 'सार्थक' अपने मम्मी पापा से विदा ले रहा था। उसकी व श्रीमती खन्ना की आँखों से लगातार आंसू बह रहे थे। बहते हुए आंसुओं के बीच वो अपने लाडले को स्वयं का ध्यान रखने, खाना ढंग से खाने, और हर रोज मोबाईल पर उनसे बात करने की हिदायत दे रही थी। वह भी अपनी माँ की मनोस्थिति को समझता हुआ, आँखों में आंसू लिए हर स्वीकृति में सिर हिला रहा था और यह कहकर "अच्छा मम्मा", अच्छा पापा 'ओ.के. गुड बाय' आप दोनों भी अपना ख्याल रखियेगा कहकर दोनों के पैर छूकर तेजी से कदम बढाता हुआ चैकिंग के लिए आगे बढ़ गया। उसे ऐसा लग रहा था कि वह यही थोड़ी देर और रूका तो फिर वह जा नहीं पायेगा। उसे ऐसा लग रहा था कि वह अपना सब कुछ यहीं छोड़कर जा रहा है, केवल शरीर लिए हुए जा रहा है और श्री एवं श्रीमती खन्ना को भी लग रहा था जैसे वे बेजान हो गए है क्योंकि उनकी जान तो सार्थक में बसती थी। उन्हें लग रहा था ये दो साल हमारी जिन्दगी के बहुत लम्बे साल होने वाले है। आखिरकार सबको अपने प्रियजनों से दूर करता हुआ वायुयान अपनी निश्चित दिशा की ओर उड़ चला।

श्री एवं श्रीमती खन्ना बेमन से वहां से जब घर पहुंचे तो सब कुछ होते हुए भी उन्हें घर खाली खाली लगा। ऐसा ही हाल सार्थक का था। जैसे जैसे प्लेन अपनी गति पकड़ता जा रह था, सार्थक का मस्तिष्क भी उड़ता हुआ उसे दूर अपने अतीत में गोते लगवा रहा था। उसे याद आया वो दिन, जब वह केवल मात्र सात साल का था। उस समय वह एक होटल में काम करता था। एक दिन रात को जब अधिकतर लोग सो चुके थे वह बर्तन मांज रहा था। बर्तन मांजते मांजते कब वह बैठे-बैठे ही सो गया उसे पता ही नहीं चला। इतने में किसी ने उसे हलके से स्पर्श करके उठाया, स्पर्श पाते ही एकदम से आँखे खोलकर जल्दी-जल्दी बर्तन मांजने लगा और, ऊपर देखे बिना ही कहने लगा, नहीं नहीं मालिक, मुझे मारना मत। मैं सो नहीं रहा था वो झपकी आ गई थी। यह सुनते ही श्री एवं श्रीमती खन्ना हैरान रह गए। वे रात को शो देखकर वापस घर लौट रहे थे, श्रीमती खन्ना को प्यास लगी, बोतल में पानी खत्म हो गया था और इस होटल की लाइट जलती देख कर यहाँ पानी पीने आ गए थे। ये सुनकर और इतने छोटे बच्चे को ढेर सारे बर्तनों के बीच देखकर आश्चर्य में पड़ गए। श्रीमती खन्ना अपनी प्यास तो भूल गयी और उन्होंने उसे प्यार से उठाया और उससे पूछा कि बेटा तुम्हारा नाम क्या है और इतनी रात गए तुम इस होटल में बर्तन क्यों मांज रहे हो, घर क्यों नहीं गए ?

यह सब सुनकर वह भयभीत निगाहों से उन्हें देखने लगा तो श्रीमती खन्ना ने उसका सर प्यार से सहलाते हुए अपने प्रश्न दोहराए तो उसने रोते हुए कहा, मेरा नाम गोलू है। मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है और मैं यहीं रहता हूँ, मजबूरी में यह सब करना पड़ता है लेकिन साहब और मेम साहब आप मालिक से मत कहियेगा कि मैं सो रहा था नहीं तो वो मुझे मारेंगे। वो तुम्हे मारता भी है ? श्रीमती खन्ना ने दुःख और आश्चर्य के मिले जुले भावों में पूछा तो गोलू ने अपनी फटी हुई कमीज ऊपर करके अपनी पीठ पर पड़े हुए हंटरों और गर्म सलाखों के निशान दिखा दिए, उन्हें देखते ही श्रीमती खन्ना की आँखों में आंसू आ गए और श्री खन्ना भी द्रवित हुए बिना नहीं रहे।

श्रीमती खन्ना ने गोलू को अपने से सटा लिया और उसकी पीठ को प्यार से सहलाते हुए अपने पति से बोली, मैं अब इसे यहाँ नहीं रहने दूंगी। हम इसे अपने ले जाएंगें। उनकी शादी को 12 साल हो गए थे और उनको कोई औलाद नहीं थी और वैसे भी खन्ना जी अपनी पत्नी की खुशी में ही खुश थे इसलिए उन्होंने उसे कानूनन गोद ले लिया और अपने सगे बेटे की तरह पाल पोस कर ऐशो आराम में बड़ा किया, अच्छी से अच्छी तालीम दिलाई और उसका नाम 'सार्थक' रखा ही नहीं बल्कि सार्थक किया भी।

वह भी दिन-रात पढाई कर इंजीनियरिंग की पढाई कर, बहुत अच्छे परिणाम लाने पर आस्ट्रेलिया सरकार द्वारा दी गई स्कॉलरशिप पर, इसी क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए दो वर्ष का कोर्स करने जा रहा है। अपने प्यारे मम्मी पापा से दूर लेकिन उनके ही सपने को पूरा करने के लिए।

अपने बचपन का वो काला अध्याय याद कर वह आज भी काँप उठता है और सोचने लगता है कि यदि इन्होंने उसे सहारा न दिया होता तो आज भी वह उन गलियों में अपने वजूद को तलाश रहा होता। जैसा वहां का माहौल था उसमें उसका अस्तित्व बचता ही कहाँ। वहां तो एक अपराधी गोलू का अस्तित्व उभर कर सामने आता जिसमें आज के 'सार्थक' का नामो निशान भी नहीं होता। वह सोच रहा था कि उसकी किस्मत अच्छी थी जो इतने प्यार करने वाले फरिश्तों ने मुझे उस नरक से निकाल कर अपना नाम दिया और मुझे एक मुकाम दिया। अगर इन जैसे 5 प्रतिशत लोग भी हो जाएँ तो न जाने कितने गोलू गहरे अँधेरे में विलीन के बजाए अपने लिए और इस देश के लिए भी एक सुनहरी उजली सुबह में लेकर आएं और उस सुबह में ऐसे बच्चे देश की प्रगति के नए आयामों को प्राप्त करने में अपना योगदान दें।

दक्षिता सिंह
हिंदी टंकक
प्रधान निदेशालय,रक्षा सम्पदा
दक्षिण पश्चिम कमान , जयपुर

सच्ची सेवा

दो महीने से रखी फ्रॉक आज उसकी असली मंजिल की ओर भेजने का मौका मिला था। इरादे नेक हो, तो इच्छाएँ पूरी हो ही जाती है।

आंटी , ये लीजिए आपके कपड़े सिल तो गए है पर काज-बटन का कारीगर बहुत बीमार है, मैं उसे देखने गाँव जा रही हूँ।

सुनीता, यह अधूरा काम कौन पूरा करेगा। दो दिन बाद ही इन कपड़ों को गाँव की बच्चियों को बाँटने जाना है।

सुनीता ने फिर अपनी विवशता बता दी। तभी पूजा को चौराहे पर नीम के पेड़ के नीचे बैठे टेलर मास्टर का ध्यान आया जो सिलाई के साथ-साथ रिपयेरिंग का भी काम करता है। पूजा एक स्वयंसेवी संस्था की सचिव है, जो अपनी टीम के साथ समीपस्थ गाँव की प्राथमिक शाला में ड्रेस और पाठ्य सामग्री वितरण करने जाने वाली है। वे ड्रेस टेलर मास्टर को देते हुए बोली, 'मास्टर जी, इसमें अस्सी फ्रॉक है, केवल काज-बटन का काम है, कल शाम तक कर देंगे क्या ? जी मैडम, आप कल शाम को ले लीजिएगा।'

दुसरे दिन वे ड्रेस लेने पहुंची तो टेलर मास्टर ने बैग सामने रखते हुए कहा, 'गिन लीजिए मैडम, पूरी अस्सी फ्रॉक है, काज-बटन हो गए है।'

'धन्यवाद मास्टर जी', यह आपका पेमेंट लीजिए, कहते हुए पूजा ने उनकी तरफ पैसे बढाए। तभी मास्टर जी ने एक बड़ा – सा पैकेट उन्हें देते हुए कहा, 'मैडम जी, यह मेरी ओर से ले जाइये। जिस स्कूल में आप जा रही है, वहां बच्चियों को बाँट दीजिएगा।

क्या है इसमें ? पूजा ने बड़े आश्चर्य से पूछा। इसमें बीस फ्रॉक है जो पिछले दो माह से मैंने सिलकर रखी थी। 'पर इतना खर्च आपने क्यों किया ?'

मैडम, मैंने केवल मेहनत की है, आप जैसे और लोग जो मुझसे सिलाई करवाते है, उन कपड़ों में से छोटे-छोटे टुकड़े बच जाते है। मैंने उन्हीं कपड़ों से ये ड्रेसें सिल दी है। आप लोग नेक काम करने जा रही है, उसमें थोडा – सा पुण्य कमाने का अवसर मुझे भी दे, तो कृपा होगी आपकी।'

पूजा ने पैकेट खोलकर देखा। बहुत सुन्दर रंग-बिरंगी फ्रॉक उसमें रखी हुई थी। मास्टर जी,हम आपका यह उपहार जरुर उन बच्चियों को दे देंगे।' टेलर मास्टर ने कृतज्ञता से हाथ जोड़कर धन्यवाद दिया।

पूजा सोचती हुई लौट रही थी कि मास्टर जी ने उपहार के साथ-साथ यह प्रेरणा भी दी कि सीमित संसाधन होने पर भी समाज सेवा की भावना मन में हो, तो सेवा का मार्ग कहीं न कहीं मिल ही जाता है।

हेमंत कुमार गोपाल
डाटा एंट्री ऑपरेटर
प्रधान निदेशालय, दक्षिण पश्चिम कमान, जयपुर

महाकुम्भ मेला – 2025

महाकुम्भ मेला दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक है। यह धरती पर शांतिपूर्ण समागम है। इस दौरान लोग पवित्र नदी में स्नान करते है या डुबकी लगाते है। भारत में चार पवित्र स्थानों-प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में हर 12 साल में आयोजित होने वाला यह मेला दुनिया के कोने-कोने से लाखों भक्तों और तीर्थयात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जो आध्यामिकता, संस्कृति और परम्परा का एक जीवंत मिश्रण बनाता है। प्राचीन हिन्द पौराणिक कथाओं में निहित कुम्भ मेला भारत की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत को दर्शाता है। यह आस्था और सामूहिक विश्वास और भक्ति की स्थायी शक्ति की याद दिलाता है।

महाकुम्भ मेले की तीर्थ यात्रा का सबसे पहला सन्दर्भ हिन्द धर्म के सबसे पुराने ग्रंथ 'ऋग्वेद' में मिलता है, हालाँकि, पहला प्रत्यक्ष लिखित प्रमाण भागवत पुराण में मिलता है । यह त्यौहार हिंदी पौराणिक कथाओं में है। ऐसा माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति समुद्र मंथन की कहानी से हुई है, अमरता का अमृत गिरा था और देवताओं और राक्षसों ने इसके लिए लड़ाई लड़ी थी। कुम्भ मेला उस क्षण को चिन्हित करता है जब इस दिव्य अमृत की बूंदें इन चार स्थानों पर गिरी थी जिससे यह विश्वास बना कि इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। कुम्भ मेले के चार प्रकार होते है – कुम्भ, अर्धकुम्भ, पूर्णकुम्भ और महाकुम्भ केवल प्रयागराज में आयोजित कुम्भ (12 वर्ष बाद) को ही पूर्ण कुम्भ कहा जाता है, अर्धकुम्भ (06 वर्ष बाद) केवल हरिद्वार एवं प्रयागराज में आयोजित किया जाता है। नासिक और उज्जैन में आयोजित कुम्भ को सिंहस्थ कुम्भी भी कहा जाता है ।

12 साल में एक बार पूर्ण कुम्भ का आयोजन होता है। ऐसे में जब 12 बार पूर्ण कुम्भ लगता है तो उसे महाकुम्भ कहा जाता है। इस कारण से महाकुम्भ का आयोजन 144 सालों में एक बार होता है। इस वर्ष 2025 में प्रयागराज शहर में 13 जनवरी से महाकुम्भ मेले की शुरूआत हुई जो 26 फरवरी कुल 45 दिनों तक रहा। यह मेला सभी भारतीयों के लिए गर्व का पल रहा । इसमें विभिन्न शहरों के अलावा विदेशों से भी लाखों-करोड़ों श्रृद्धालुओं ने गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदी के संगम के किनारे आस्था की डुबकी लगाई । 2025 का प्रयागराज महाकुम्भ भव्य महाकुम्भ का गवाह बना, जहाँ भक्त स्नान के जीवन परिवर्तनकारी अनुष्ठान में भाग लेने आए। अपने धार्मिक महत्व से भरे कुम्भ मेलों में नागा साधुओं के जीवंत जुलुस, मन्त्रों का जाप, अध्यात्मिक प्रवचन और पारम्परिक अनुष्ठान श्रद्धा और एकता का माहौल देखने लायक था। यह त्यौहार देश–विदेश के लोगों को अपनी अध्यात्मिक जड़ों से जुड़ने का अवसर था। भक्त, संत और ऋषि अनुष्ठान करने ध्यान करने और अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर रहा। इस महाकुम्भ में जाति, पंथ या राष्ट्रीयता के बावजूद सभी क्षेत्रों के लोगों ने भाग लिया।

2025 प्रयागराज महाकुम्भ अब तक का सबसे बड़ा कुम्भ रहा । सरकार ने अनुमानित भीड़ को समायोजित करने के लिए बुनियादी ढांचे, जिसमें आगुन्तकों के लिए एक सहज और यादगार अनुभव सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा, परिवहन, स्वच्छता और आवास के लिए विशेष व्यवस्था थी. इस कुम्भ में प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करने के लिए डिजिटल मैप, मोबाईल ऐप, रीयल-टाइम अपडेट जैसी उन्नत तकनीकें तथा अस्थाई वाई-फाई जोन उपलब्ध कराएं गए जो आयोजन को कुशलतापूर्वक पूर्ण कराने में बहुत मददगार साबित हुए।

श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए महाकुम्भ नगर को हजारों टेंट और आश्रमों के साथ एक अस्थायी शहर में बदल दिया गया था जिसमें भारतीय रेल के IRCTC ने 'महाकुम्भ ग्राम' नाम से लक्जरी टेंट सिटी जैसे सुपर डीलक्स आवास का भी निर्माण किया जो आधुनिक सुविधाओं के साथ डीलक्स टेंट और विला प्रदान करता है भारतीय रेलवे ने श्रद्धालुओं की सुगमता हेतु हजारों महाकुम्भ स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया था ।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सैकड़ों सड़कों का नवीनीकरण और 15 से 20 प्रमुख सड़कों का सौन्दर्यीकरण किया गया तथा लगभग 30 पीपा पुलों का निर्माण किया गया। आगंतुकों का मार्गदर्शन करने के लिए न्यूनतम 800 बहु-भाषा संकेत लगे गए थे । सरकार ने महाकुम्भ के भव्य आयोजन हेतु समुचित व्यवस्था की थी जिसमें आगजनी की घटनाओं को रोकने और सुरक्षा बढ़ने के लिए वीडियो और थर्मल इमेजिंग सिस्टम सहित उन्नत तकनीकें शामिल थीं। पहली बार कोई अनहोनी न हो इसके लिए सरकार ने 50 से ज्यादा साइबर एक्सपर्ट की एक टीम ऑनलाइन खतरों की निगरानी में तैनात की थी। सभी पुलिस स्टेशनों तथा रेलवे स्टेशनों पर हेल्प डेस्क की अलग से स्थापना की गई थी। सुरक्षा और आपदा तत्परता बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक बहु-आपदा प्रतिक्रिया वाहन तैनात किया था। देश के अर्धसैनिक बलों सहित 50,000 से अधिक कर्मी तैनात किये गए थे। महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए शल्य चिकित्सा और नैदानिक सुविधाओं से लैस हजारों अस्थाई अस्पताल का निर्माण किया गया था।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मेला क्षेत्र को राज्य का 76वां जिला घोषित किया गया। इस मेले के आयोजन हेतु सरकार ने लगभग 7 हजार करोड़ रूपये के बजट में बुनियादी ढांचे के विकास से लेकर स्वच्छता तक बहुत- सी परियोजनाएं शुरू की एक अनुमान के अनुसार इस आयोजन से सरकार को 25 हजार करोड़ रूपये का राजस्व प्राप्त हुआ है और राज्य की अर्थव्यवस्था पर कुल मिलकर 2 लाख करोड़ रूपये का प्रभाव पड़ा है। इस मेले में विदेशी पर्यटक के शामिल होने से विदेशी मुद्रा आय में भी उछाल आया। श्रद्धालुओं के लिए दैनिक जरूरत की वस्तुओं से लगभग 20 हजार करोड़ से अधिक का कारोबार हुआ जिसमें योगदान देने वाली प्रमुख उत्पाद श्रेणियों में किराने का सामान, खाद्य तेल और उत्पाद मुख्य रूप से शामिल है।

प्रयागराज महाकुम्भ मेले में अत्यधिक श्रद्धालुओं के आने से स्वास्थ्य जोखिम, पर्यावरणीय प्रभाव, भीड़ प्रबंधन, भगदड़ जैसी चुनोतियों का सामना करना पड़ा। असमाजिक तत्वों द्वारा मौनी अमावस्या के दिन भाग दौड़ मच गई, जिसमें लगभग 30 लोगों की मौत हो गई, जो कि अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके बावजूद हमारी सरकार ने इस महाकुम्भ को सफल बनाने हेतु इतनी बड़ी भीड़ हेतु सुरक्षा बनाए रखी थी।

महाकुम्भ 2025 ने आध्यात्मिक एकता, सांस्कृतिक विरासत और मानवीय संबंधों के सार को मूर्त रूप दिया है। यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है । कहा भी गया है कि 'यद् पिंडे तद् ब्रह्माण्डे' अर्थात जो शरीर में है,, वही ब्रह्माण्ड में है। इसलिए महाकुम्भ ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिंड (शरीर) के सामंजस्य स्थापित करने के रहस्य का पर्व है।

संजय कुमार
हिंदी टंकक
प्रधान निदेशालय रक्षा सम्पदा
दक्षिण कमान, पुणे

मधुमक्खी और चींटी

मधुमक्खी और चींटी में हुआ विवाद एक दिन
दोनों पल-पल गिनती रही एक-दूजे की कमियाँ उस दिन
मधुमक्खी बोली, छोटी-छोटी टांगों से तू धीरे-धीरे चलने वाली,
मिट्टी से चिपकी रहती, हवा में न उड़ने वाली"
चींटी बोली, "मधुमक्खी रानी! अपने पंखों पर मत इतराओ,
ईश्वर की हर कृति है उत्तम, इसे तुम समझ जाओ,
मछली की क्षमता है जल में, पक्षी उड़ते है नभ में,
सबके अपने है हीरे, सब है उनके वश में,
कर सकती है यदि शहद इकट्ठा, तू मकरंद चुनकर
उठा सकती हूँ मैं भार हमेशा हर प्राणी से बढ़कर
मेरी क्षमता का जरा भी, तुझे नहीं है ज्ञान
विशाल हाथी भी पागल हो, दे देता है अपनी जान"
देख विवाद दोनों का बढ़ता, एक कठफोड़वा वहां आया,
सुन दोनों की बातें फिर दोनों को समझाया,
'ईश्वर ने यह सृष्टि रची, ईश्वर ने हमें बनाया,
उसने दी हमें ये शक्तियाँ, उसी की है ये सब माया,
एक दूसरे को जीवन में हम कभी न छोटा मानें
बस ईश्वर की शक्ति का सही उपयोग करना जाने
तुम दोनों हो सृष्टि के मेहनतकश ऐसे जीव
जिनसे सबको शिक्षा मिलती और बनती है नींव"
सुन कठफोड़वे की सुन्दर बातें मधुमक्खी, चींटी शांत हुई
व्यर्थ विवाद की फालतू बातें तब जाकर समाप्त हुई

कु रूनाली विनोद शिंदे
(संविदारत कर्मचारी)
प्र. नि. र.सं.द कमान

24 घंटे – एक पूरा जीवन

"ये जीवन है, इस जीवन का यही है, यही है, यही है रंग-रूप

थोड़े गम है, थोड़ी खुशियाँ, यही है, यही है, यही है छाँव-धूप"

यह गीत हमें कुछ सीख दे जाता है। हमारा जीवन कैसे होना चाहिए, यह हर एक मनुष्य खुद तय करता है। जिस घर में बच्चा जन्म लेता है, उस घर के माता–पिता के संस्कार और पूर्वजन्म के आत्मा के संस्कार साथ लेकर जन्म लेता है। पहले से ही आदतें और संस्कार जन्म के साथ हमें मिलतें है, चाहे वे अच्छे या बुरे जैसे भी हो, हम साथ लेकर आते है। अगर इस जीवन में हम कुछ बदलाव करना चाहते है तो प्रकृति ने हमारे लिए ऐसी व्यवस्था की है कि हम जैसा चाहते है, वैसा जीवन जी सकते है। जो लोग जिन्दगी के प्रवाह के साथ चलते है , वही लोग सम्पूर्ण आनंदमय जीवन जीते है।

कुदरत ने हमें रोज 24 घंटे का समय प्रदान किया है। ये 24 घंटे हम वर्तमान स्थिति में रहकर और जो भी मन स्थिति और परिस्थिति हमारी उन 24 घंटों में रहेगी, उसे हम स्वीकार करते हुए और जो भी कर्म हमें सौपा गया है, उसी के अनुसार जीते है तो हम एक परिपक्वता भरा जीवन जीते है। ऐसे तो हमारा पूरा जीवन आनंद से, सुख से बीत जाएगा।

"है न मजेदार!" तो यह जानते है कि ये 24 घंटे हम कैसे बिता सकते है। हमारा यह जीवन 24 घंटे का ही है। इस 24 घंटे में हम बचपन, युवावस्था और बुढ़ापा तीनों ही अनुभव कर लेते है। क्यों आश्चर्य हुआ? तो इस विषय को लेकर हम जान पाएँगे कि 24 घंटे यह हमारा पूरा जीवन कैसे हुआ ? हर आने वाले दिनों में हम बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था दिमाग में रखकर कार्य करते रहेंगे तो हम बीत जाने वाले बचपन से या बीत जाने वाले युवावस्था से दुखी नही रहेंगे। बल्कि 24 घंटे हँसते-हँसते और वर्तमान स्थिति में रहेंगे। वर्तमान स्थिति में बिताना हर पल हमें ध्यान की ओर ले जाने वाला होता है।

24 घंटे में तीन पहर होते है, सुबह, दोपहर और रात। अमृतबेला का समय 04 बजे से सुबह 11 बजे तक होता है। दोपहर 11 बजे से 07 बजे तक दूसरा पहर और शाम 07 बजे से रात 03 बजे तक तीसरा पहर होता है। वैसे ही हमारे जीवन के तीन पहर होते है। बचपन हमारा एक साल से 20 साल तक का होता है। 20 साल से 50 साल तक हमारी युवावस्था होती है और 50 साल से आगे जब तक हम जीवित रहते है, हमारा बुढ़ापा होता है।

सुबह का वक्त और हमारा बचपन इसका गहरा सम्बन्ध है। बचपन अच्छा बीता तो युवावस्था अच्छी बीतेगी। सुबह के वक्त का परिणाम दोपहर के वक्त पर होता ही है। जैसे ही दोपहर का वक्त हमारा अच्छा बीता तो शाम या रात अच्छी नींद में खो जाएगी। अगर सुबह हम झगडा करके घर के बाहर निकले तो दिनभर बेचैनी महसूस करेंगे, वैसे ही बचपन में यदि पढाई नहीं हुई तो उसका दुष्परिणाम युवावस्था में होता ही है।

चलो, अब हम वापस बचपन की ओर चलते है, यानी सुबह के वक्त के बारे में चर्चा करेंगे। दोस्तों, हमारा बचपन कैसा होना चाहिए ? खेल –कूद से भरा, जोश से भरा और प्यारा-प्यारा होना चाहिए। 03 से 05 वर्ष के बच्चे का मन अन्दर-बाहर ऐसा कुछ होता ही नहीं, जो होता है, वो पूरा खुला होता है। इस उम्र के बच्चे जो सुनते है, देखते है, अनुभव करते है, वो सभी अनुभव, घटनाएँ हुबहू उन्हें बुढ़ापे तक याद रहती है। इसलिए हम हमेशा कहते है, 'बुढ़ापा दूसरा बचपन होता है।" सच में, बचपन में जो अच्छी या बुरी आदतें लग जाती है, उन्हीं आदतों के साथ हम पूरी उम्र जीते है। कभी-कभी हमें जैसे-जैसे समझ आती जाती है, वैसे-वैसे हम हमारी आदतें बदलते रहते हैं।

जैसे हमने अभी बचपन देखा, उसी को याद करके हम सुबह का वक्त कैसा होना चाहिए, यह देखते है। सुबह 04 बजे से 11 बजे तक ऊर्जा का स्त्रोत हमारे शरीर में भरा रहता है। अमृत बेला में हम उठकर ध्यान – धारण करते है या पढाई करते है, जप करते है। भगवान् का स्मरण करते है तो हमारी सकारात्मक उर्जा जागृत हो जाती है और हमारे दिनभर के कार्य-कलाप करने में सहायक हो जाती है। सुबह 04 से 05 बजे तक वायुमंडल में शुद्ध हवा होती है और ओजोन नाम की वायु जो हमारे शरीर के लिए आवश्यक मानी गई है, वो हमें बिना पैसे दिए मिल जाती है।

06 बजे के बाद खेल – कूद, कसरत, पढाई ऐसे कार्य में हम वक्त बिताते है तो हम शक्तिशाली बनाते है। यही ऊर्जा हमारी दिनभर के काम करते समय खर्च होती है। वैसे ही बचपन की उर्जा, युवावस्था में काम आती है। 20 वर्ष की उम्र तक हम ऐसे ही कार्य करें जिससे हमारी शक्ति, ऊर्जा बनी रहे, जैसे पढाई, खेल-कूद, नृत्य –कला, चित्रकला इनमें वक्त बिताना महत्वपूर्ण है। इससे आलस्य हट जाता है। समय-समय पर किया हुआ काम हमें जीवनभर यानी दिनभर उर्जावान बनाए रखता है। इससे हमारी आर्थिक उन्नति भी होती है।

अब हम आते है सुबह 11 बजे से लेकर 05 तक, यह वक्त यानी हमारी युवावस्था होती है। बचपन यानि सुबह हमारा उत्साह और जोश में बीता है तो युवावस्था में हम बड़े-बड़े कार्य सहजतापूर्वक कर पाते है। 11 बजे से 07 तक हमें जो भी कार्य सौपा गया है, जैसे कि-पढाई, नौकरी करना, धंधा करना, ऑफिस जाना, अस्पताल का काम, घर का काम, यह सब काम बिना आलस्य हम अच्छे ढंग से करने में सक्षम रहते है।

हमारी उम्र 20 से 50 साल तक की ऐसी ही होती है कि जिम्मेदारी वाले सभी कार्य हमें इस उम्र में ही करने पडते है, जैसे कि पढाई ख़त्म होने पर नौकरी या धंधा करना, विवाह करना, बच्चे संभालना, खुद का घर लेना, माँ – पिता की ज़िम्मेदारी लेना, उनको अच्छे से संभालना वगैरा 50 वर्ष की उम्र होने तक हम सब यह कर चुके होते है। यह सभी कार्य हम हमारा शारीरिक और मानसिक संतुलन सँभालते हुए करते है।

11 बजे से 07 बजे तक का वक्त भी ऐसा ही होता है। जिम्मेदारी हम दिया हुआ काम पूरा करते है तो शाम का वक्त हमारा आनन्द से भरा होगा। दी गई जिम्मेदारी स्वीकार कर वर्तमान में रहकर उसे निभाते हुए हम अध्यात्म के मार्ग पर भी चलते है।

अब वक्त आता है संध्याकाल या रात का। हमारी उम्र भी 50 वर्ष या उसके आगे की होती है। इस उम्र में हमारा बहुतांश कर्तव्य पूरा हो जाता है । बच्चे बड़े हो जाते है । उनका विवाह हो जाता है। आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक हो जाती है । ऐसे में कोई बच्चों को मदद करते है, कोई पोता-पोती सँभालते है । कोई आश्रम में रहने चले जाते है। कोई अपना अनुभव अच्छे कार्यों में लगाते है।

शरीर का उमंग-उत्साह कम होने लगता है। इस समय जल्दी खाना, कम खाना आदि शुरू हो जाता है। अब हम रात्रि के पहर में आते है । हमारे ऋषि – मुनि, "गहरी नींद यानी समझो मृत्यु के बराबर होती है", ऐसा कहा करते थे क्योंकि गहरी नींद में हमें कुछ याद नहीं रहता। हम गहरी नींद में दिमाग के अल्फ़ा स्टेज में जाकर पहुँचते है, यहाँ हमें कुछ याद नहीं आता । इसी समय शरीर की मरम्मत का काम चालू होता है। इसलिए जब हमारी अच्छी नींद हो जाती है, तब हम ऊर्जा से संतुलित रहते है, मतलब पूरे शरीर में सिर से पैर तक ऊर्जा सममात्र में होती है, जैसे हमारे जन्म के समय होता है। जब हमारा जन्म होता है तो पुरे शरीर का संतुलन बना हुआ होता है । इसलिए हम कहते है कि अमृतबेला में हमारा जन्म होता है, यानी हम उठते है और रात्रि में गहरी नींद में सोते है यानी हमारी मृत्युवस्था होती है।

"मतलब , यदि 24 घंटे हम अच्छा बिताते है तो पूरा जीवन अच्छा बिता सकते है। "

हमारी उर्जा का संतुलन करने की जो प्रक्रिया है, उसे ही नींद कहते है। इस नींद को आध्यात्मिक भाषा में सहज समाधि कहते है। इस समाधि अवस्था में ऊर्जा संतुलित होती है और हम ब्रहमांडीय चेतना के साथ जुड़ जाते है, जिससे हमें शक्ति प्राप्त होती है, जिस वजह से दूसरे दिन संतुलित ऊर्जा से भरपूर हो जाते है।

त्रिवेणी राजेंद्र चौधरी
स्टाफ नर्स
सरदार भाई पटेल सामान्य अस्पताल
छावनी परिषद पुणे

जिन्दगी जीना सिखा रही है

गुजर रही है उम्र, पर जीना अभी बाकी है।

जिन हालातों ने पटका है जमीन पर, उन्हें उठकर जवाब देना अभी बाकी है।

चल रहा हूँ मंजिल के सफ़र में, मंजिल को अभी पाना बाकी है।

कर लेने दो लोगों को चर्चे मेरी हार के, कामयाबी का शोर मचाना अभी बाकी है।

वक्त को करने दो अपनी मनमानी, मेरा वक्त आना अभी बाकी है।

कर रहे है सवाल मुझे जो लूजर समझकर, उन सबको जवाब देना अभी बाकी है ।

निभा रहा हूँ अपना किरदार जिन्दगी के मंच पर, पर्दा गिरते ही तालियां बजाना अभी बाकी है।

कुछ नहीं गया हाथ से अभी तो सत्यवीर, बहुत कुछ पाना अभी बाकी है।

सत्यवीर सिंह यादव
कनिष्ठ सहायक
(प्रशासनिक विभाग)
छावनी परिषद, झाँसी

रक्षा सम्पदा दिवस 2024 समारोह की झलकियाँ

रक्षा सम्पदा दिवस 2024 समारोह की झलकियाँ

नैतिकता वह है जो तब भी बनी रहे जब कोई इसे देख नहीं रहा हो

नैतिकता एक व्यक्ति या समाज के आचार व्यवहार का वह आधार है-, जो सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करता है। यह केवल सामाजिक या धार्मिक नियमों का पालन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे भीतर की वह भावना है जो हमें किसी भी स्थिति में सत्य और अच्छाई के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे चरित्र का वह हिस्सा है, जो दूसरों से अपेक्षित तो नहीं होता, लेकिन हम खुद को सही ठहराने के लिए उसे अपनाते है। जब कोई हमें देख नही रहा होता, तब भी जो हमारे आचरण में सत्यता, ईमानदारी और अच्छे विचार रहते हैं, वह नैतिकता ही होती है।

नैतिकता का महत्व

नैतिकता का पालन समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर आत्मिक शांति और संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। जब एक व्यक्ति नैतिकता के सिद्धान्तों का पालन करता है, तो न केवल वह खुद को सम्मानित महसूस करता है, बल्कि उसके आस पास के लोग भी उसे आदर्श मानते है। नैतिकता का पालन करने वाला व्यक्ति दूसरों के अधिकारों का सम्मान करता है, समाज में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है और अपनी इच्छाओं और भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होता है।

हमारे समाज में बहुत सी स्थिति ऐसी होती है, जब कोई हमें देख नहीं रहा होता, यह हमारे ऊपर कोई निगरानी नहीं होती। ऐसे में कई लोग अपनी आस्थाओं और नैतिकताओं को नजरअंदाज कर देते हैं और गलत कार्य करने में लिप्त हो जाते हैं। उदहारण के लिए, यदि कोई सरकारी कर्मचारी अपने कार्यालय में अकेला होता है, तो वह बिना किसी डर के भ्रष्टाचार करने का प्रयास कर सकता है। लेकिन, अगर उस समय वह नैतिकता का पालन करता है, तो वह समाज और अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार रहेगा।

नैतिकता और उसका आंतरिक बल

नैतिकता का एक प्रमुख तत्व है आन्तरिक बल। जब हम अपने भीतर की आवाज को सुनते है और समझते है कि जो हम कर रहे है, वह सही नहीं है, तब हम उस कार्य को छोड़ देते है, भले ही कोई देख नहीं रहा हो।यह आतंरिक बल ही है, जो हमें सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

आंतरिक नैतिकता के उदाहरण हमें हर दिन मिलते है। जैसे, जब हम सड़क पर चलते है और हमें कोई पैसो से भरी बटुआ मिलती है, तो हमारे पास उसे अपनी संपत्ति बना लेने का अवसर होता है।लेकिन यदि हम नैतिक रूप से जागरूक होते है, तो हम उसे उसके मालिक तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे, भले ही हमें कोई देख न रहा हो। यही नैतिकता है, जो किसी भी परिस्थिति में सच्चाई और अच्छाई के मार्ग पर चलने के लिए हमें प्रेरित करती है।

नैतिकता और समाज

समाज में नैतिकता का बड़ा महत्व है, क्योंकि समाज का आधार ही नैतिकता पर होता है। यदि हर व्यक्ति समाज में नैतिकता का पालन करता है, तो समाज में शांति, सद्भाव और समृद्धि का वातावरण बनता है। इसके विपरीत, यदि समाज के लोग अपनी नैतिकता को भूल जाते है, तो समाज में अराजकता और असमानता फैलने लगती है।

हमें देश में कई उदहारण है जहाँ नैतिकता ने समाज को एकजुट किया है। महात्मा गाँधी का अहिंसा और सत्याग्रह का सिद्धांत पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श बन गया है। उन्होंने कभी भी अपने नैतिक सिद्धांतों से समझोता नहीं किया, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी रही हो। उन्होंने हमेशा अपने कार्यों में सत्य और नैतिकता को प्राथमिकता दी, भले ही उन्हें कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़ा हो। यही कारण था कि उनके नेतृत्व में भारत को स्वतंत्रता मिली।

नैतिकता और शिक्षा

शिक्षा भी नैतिकता को मजबूत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब हम स्कूल और कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो हमें केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं मिलता, बल्कि जीवन जीने के सही तरीके भी सिखाए जाते है। शिक्षक और मार्गदर्शक हमें सही आचार व्यवहार और नैतिकता की महत्ता समझाते है।

शिक्षा से हमें यह भी समझ में आता है कि हमारे आचरण का प्रभाव न केवल हमारे जीवन पर, बल्कि समाज और देश पर भी पड़ता है। यदि हम नैतिकता से विमुख हो जाते है, तो यह न केवल हमारे जीवन को भ्रष्ट करता है, बल्कि समाज में भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसीलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि नैतिक शिक्षा का भी समान महत्व होना चाहिए।

व्यक्तिगत नैतिकता

व्यक्तिगत नैतिकता का पालन हमें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना देता है। जब हम किसी कार्य को अपने नैतिक सिद्धांतों के अनुसार करते है, तो हम अपने आप से ईमानदार रहते हैं। इससे हमें मानसिक शांति मिलती है और हम अपने फैसलों पर गर्व महसूस करते हैं। यदि हम किसी गलत कार्य में लिप्त होते है, तो हमें इसके परिणामों का सामना करना पड़ता है, और हमें अपनी आत्मा में भी इसका पछतावा होता है।

उदहारण के लिए, एक व्यापारी जो अपने व्यापार में ईमानदारी से काम करता है, भले ही उसे थोड़ी देर से मुनाफा हो, लेकिन वह अपने व्यवसाय में स्थिरता और सम्मान प्राप्त करता है। वही दूसरी ओर, जो व्यापारी झूठे वादे करता है और धोखाधड़ी करता है, वह भले ही तात्कालिक लाभ हासिल करता हो, लेकिन उसे लम्बे समय में इसके परिणाम भुगतने पड़ते है।

निष्कर्ष

नैतिकता एक ऐसा मूल्य है, जो हमारे जीवन को दिशा और उद्देश्य प्रदान करता है। यह किसी बाहरी निगरानी से प्रभावित नहीं होती, बल्कि यह हमारे अन्दर की सच्चाई और ईमानदारी का प्रतीक होती है। समाज में नैतिकता के महत्व को समझते हुए हमें इसे अपनाने की आवश्यकता है। यदि हम अपनी नैतिकता का पालन करे, तो हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते है, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकते है। नैतिकता की ताकत से ही हम एक आदर्श समाज की स्थापना कर सकते है, जहाँ हर व्यक्ति ईमानदारी और सत्य के रास्ते पर चलता हो, चाहे कोई देख रहा हो या नही।

दीपक कुमार तिवारी
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

अकेलापन

पिछले दिनों एक प्रसिध्द एक्टर के निधन की खबर पढ़ी, उनके बड़े भाई के कथनानुसार, 'मृत्यु अकेलेपन की वजह से हुई। जिंदगी में purpose और उत्साह नहीं था, किसी ने भी एक बार तबीयत के बारे में नहीं पूछा। यही कारण था कि day – by - day उनकी हालत गिरती चली गई जो संभल नहीं पाई'।

इस खबर को पढ़कर लगा, क्या सचमुच 'अकेलापन' जिसे आज के बदलते युग में इतनी importance दी जाने लगी है, इतना भयावह है और जिसकी ओर अभी भी हमारे नीति – निर्धारकों, सामाजिक विश्लेषकों का ध्यान उतनी गंभीरता से नहीं गया है जितना physically दिखलाई पड़ने वाली बीमारियों की ओर जाता है।

मुझे लगता है अकेलापन हर काल की समस्या है। पुराने समय में गुफाओं, कन्दराओं, वनों में ऋषियों-मुनियों के अकेले रहकर तप करने की कहानियाँ मिलती है। बड़े ऋषि-मुनि जंगलों में तपस्या करते थे। विश्वामित्र, परशुराम, द्रोणाचार्य जैसे आचार्य हो अथवा दुर्वासा मुनि जैसे ऋषि सभी वनों में ही साधना करते थे।

सामाजिक आचार व्यवहार से दूर ऋषि – मुनियों की साधना लोक कल्याण की भावना के इर्द – गिर्द घूमते हुए अपने ध्येय की सिद्धि लगातार परिलब्ध करवाती थी। इसमें लेश मात्र भी निराशा या आत्मग्लानि अथवा परिशून्यता का भाव नहीं था। हमारे शास्त्रों, पुराणों में अकेलापन या उससे जुड़ी निराशा का भाव कहीं परिलक्षित नहीं होता।

दधीचि जैसे मुनियों की लोक कल्याणकारी भावना स्वयं की हड्डियों को भी दान करने में विश्वास रखती है। 'इस अकेलेपन अथवा solitude से आज के समाज में व्याप्त अकेलेपन की तुलना नहीं की जा सकती। व्यक्ति आज जितना global village के परिणामस्वरूप संचार और transport के शीघ्र और आसानी से उपलब्ध साधनों से जुड़ा हैं। वह चाहकर भी अकेला नहीं रह सकता। बदलती तकनीक ने उसे facebook, instagram, youtube जैसे connecting संसाधनों के साथ meta, chatgpt जैसे उन्नत AI tool भी दे दिये है। अब तो उसके समाज से connect न होने का कोई source भी नहीं रहा पर वो फिर भी खुद को अकेला, isolated महसूस कर रहा है इसका कारण क्या है।

कारण है बदलती परिस्थितियां! आज का मानव चारों ओर हरपल बदलती दुनिया से भौंचक्का है। एक परिस्थिति के साथ थोड़ा तालमेल बिठाने की कोशिश में पूरा scenario ही बदलकर सामने आ रहा है। मानवीय संवेदनायें परत-दर- परत और vulnerable हो रही है। असुरक्षा और अस्थायित्व का बोध व्यक्ति के सामाजिक सुरक्षा के दायरे को कम कर रहा है। अपने ऊपर अति विश्वास या दूसरे पर अविश्वास के कारण अपनी दुर्बलताओं या दूसरों की खूबियों को appreciate न करना, ज्यादा ज्ञानी होने के दंभ में अपने complex शेयर न करना उसे और भीतर अकेला करने लगे है। ये भाव हर समय मुखर होने लगे हैं। तकनीक ने उसे अजेय समय के मृगजाल में फंसा दिया है। उसकी अपनी super क्षमताओं ने उसके भीतरी कोमल मन तंतुओं को क्षत-विक्षित कर दिया है।

इसी movementum को बनाए रखते हुए एक बात शेयर करता हूँ, पिछले दिनों एक फिल्म देखी, उसका मुख्य पात्र अपने को express करते हुए कहता है :- "अपने character को यदि बरकरार नहीं रख पाया अथवा सिद्धांतों के साथ समझौता किया, तो पूरी दुनिया भी यदि मिल जाए, तो भी अकेला हूँ और यही अकेलापन मेरे लिए मृत्यु समान है।" अपने इस कथन में पात्र बहुत कुछ समझा गया। समस्या का निदान उसकी पहचान, मूल कारकों में है। जितनी जल्दी अकेलेपन की समस्या को समझकर उसके निदान उपचार की ओर अग्रसर होंगे, उतनी जल्दी अपने को स्वस्थ कर पाएंगे। इस कार्य में मनोचिकित्सक अथवा सामाजिक परौकार की सहायता लेने से नहीं हिचकता चाहिए।

इस लेख में निराशा अथवा depression के clinical analysis से इतर केवल बाह्य स्वरूप में ही विवेचना की गई है। ज्यादा प्रयास समस्या की ओर ध्यान खींचने का रहा है। आंकड़े और तथ्य तो google करके मिल जाएँगे।

इति!

भल्ला राम मीना
रक्षा संपदा महानिदेशालय

यादें

मायूस चेहरे पर मुस्कान ले आती है.
यादें भी कमाल है, फिर जिन्दा कर जाती है ।

बस चाहिए इन्हें, फुर्सत के दो पल,
यादें भी कमाल है, दौड़ी चली आती है ।

कभी खुशियाँ तो, कभी गम याद दिलाती है,
यादें भी कमाल है, आँखे भीगा जाती है ।

गुजर जाता है दिन, बीते वक्त भी गलियों में,
यादें भी कमाल है, लम्हें भी चुरा ले जाती है ।

बिखरे हुए मन को, एक नई उम्मीद देकर
आगे बढ़ने का नया रास्ता दिखा जाती है ।
ये यादें भी कभी कभी जीना सिखा जाती है ।
यादें भी कमाल है, फिर जिन्दा कर जाती है ।

रेखा
प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा
पश्चिमी कमान, चंडीगढ़

नारी

नारी है पूजा के फूल,
नारी है सृष्टि का मूल,
नारी ही है प्रेम का सार,
नारी जीवन का आधार ।

नारी में है इतनी शक्ति,
भविष्य को अपने गर्भ में रखती ।
दुःख सहकर भी इस जगती के,
विकास सृष्टि का लेकर चलती ।

नारी माता, नारी पत्नी,
नारी के है रूप अनेक ।
हर फर्ज को सही निभाती,
नारी के किरदार तू देख ।

तू सावित्री, तू लक्ष्मी,
तू विजय- जया कहलाती है।
फिर कोई सामने ना ठहरे तेरे
जब चंडी बन जाती है ।

आनंद और ममता से सरोबार,
तू संसार को करती है ।
गम लेकर के दुनिया के,
सबको प्रेम से भरती है ।

मनीष शर्मा
प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा
पश्चिमी कमान, चंडीगढ

सही शिक्षक

माता पिता से जो पहले आए,
भगवान की तरह जो पूजा जाए,
सच्चे मन से जो प्यार जताएं,
वही सही शिक्षक कहलाएं।

सच झूठ में जो भेद बताएं,
जीवन का उचित लक्ष्य बताएं
सच्ची राह पर चलना सिखाएं,
वही सही शिक्षक कहलाएं।

कभी डांट कभी प्यार जताएं,
ढाल बनकर मुश्किल से बचाएं,
कठिन राह में जो हाथ बढाए,
वही सही शिक्षक कहलाएं।

पेड़ों की तरह जो छांव दिखाएं,
सुन्दर सुन्दर फुल खिलाएं,
हरे भरे पत्ते बन जाए,
वही सही शिक्षक कहलाएं।

दीपक की तरह रोशनी फैलाएं,
जिन्दगी को प्रगति पर ले जाए
हर पल हमारा साथ निभाएं
वही सही शिक्षक कहलाएं

पक्षी की तरह जो पंख फैलाएं
ऊँचे गगन में जो उड़ना सिखाएं
जीवन को नई राह दिखाएं,
वही सही शिक्षक कहलाएं,

सूरज की तरह जो उगना सिखाएं,
जिन्दगी को रोशन बनाएं,
हर पल हमारा साथ निभाएं,
वही सही शिक्षक कहलाएं ।

कविता ठाकुर
अध्यापिका
सी बी स्कूल, बी. सी. बाजार

ख़ामोशी

ख़ामोशी ख़ामोश भी है, खामोशी बोलती भी है
ख़ामोशी राज भी रखती है और राज खोलती भी है
ख़ामोशी शांत भी है, ख़ामोशी अशांत भी है
ख़ामोशी अच्छी भी है, ख़ामोशी बुरी भी है
ख़ामोशी अंदर से रूलाती भी है
ख़ामोशी झूठा हंसाती भी है
ख़ामोशी शांत लहर भी है, ख़ामोशी तूफ़ान भी है
ख़ामोशी घर बसाती है और घर उजाडती भी है
ख़ामोशी कई बार सब्र भी हैं
पर जब सब्र टूट जाएँ तो खामोशी कब्र भी है
बस ख़ामोशी ज्यादा अच्छी नहीं और न ही बुरी है।

श्रीमती ज्योति
सी.बी एलीमेंट्री स्कूल,
फिरोज पुर छावनी

प्रगति की माप गति से नहीं, बल्कि सही दिशा से होती है

प्रगति, एक ऐसा शब्द है जो मानव जीवन के हर पहलू से जुड़ा हुआ है। जब हम प्रगति की बात करते हैं; तो अक्सर हमारा ध्यान गति, तेजी और उच्चता की ओर जाता है। हम सोचते हैं कि प्रगति तब होती है जब हम तेजी से बढ़ते है या सफलता की ओर तेजी से बढ़ते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि प्रगति की असली माप गति से नहीं, बल्कि सही दिशा से होती है। इसका मतलब यह है कि प्रगति तब होती है जब हम अपने लक्ष्य की ओर सही दिशा में आगे बढ़ते हैं, न कि बस तेजी से दौड़ते हैं।

दिशा का महत्व

प्रगति की दिशा की महत्ता को समझने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि दिशा क्या है। दिशा केवल एक मार्ग या रास्ता नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच, दृष्टिकोण और उद्देश्य की ओर इशारा करती है। अगर हम किसी गलत दिशा में तेजी से बढ़ते हैं, तो हम चाहे जितनी भी गति से आगे बढे, हमारी यात्रा अंतत: गलत दिशा में समाप्त होगी। इसका उदाहरण हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं में मिल सकता है।

उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने अपनी पढाई में बहुत तेजी से सफलता हासिल की, लेकिन उसकी पढाई का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना था, न कि समाज की सेवा करना या ज्ञान प्राप्त करना। ऐसे में उसकी सफलता चाहे जितनी भी तेजी से प्राप्त हुई हो, किसी सार्थक दिशा में नहीं है और अंतत: वह व्यक्ति संतुष्ट नहीं रहेगा। सही दिशा में प्रगति करने से न केवल हमें मानसिक संतुष्टि मिलती है, बल्कि हमारा योगदान समाज में भी सकारात्मक होता है।

गति और दिशा का अंतर

गति और दिशा का अंतर समझना बहुत आवश्यक है। गति किसी भी प्रक्रिया की तीव्रता को व्यक्त करती है, जबकि दिशा उसका मार्ग है। जब हम केवल गति पर ध्यान केन्द्रित करते है, तो हम केवल अपनी उर्जा और समय को बर्बाद कर रहे होते हैं। इसका उदाहरण हम एक गाडी की रफ़्तार से समझ सकते हैं। अगर गाड़ी बहुत तेज चल रही है, लेकिन वह गलत दिशा में जा रही है, तो उसकी तेजी का कोई महत्व नहीं होगा। इसी तरह, अगर हम अपने जीवन में बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन हमारा लक्ष्य गलत है या हम गलत दिशा में जा रहे हैं, तो हमारी मेहनत और समय व्यर्थ हो जाएगा।

सही दिशा में प्रगति के फायदे

1. **संतुष्टि और ख़ुशी :** जब हम सही दिशा में प्रगति करते है, तो हमें मानसिक शांति और संतुष्टि मिलती है. हम अपने प्रयासों को सार्थक महसूस करते हैं और यह खुशी की अनुभूति कराते हैं।

2. **समाज में योगदान :** सही दिशा में प्रगति से समाज को लाभ होता है। जब हम अपने लक्ष्यों को समाज की भलाई के लिए निर्धारित करते हैं, तो हमारी प्रगति से न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन बेहतर होता है, बल्कि हम समाज के लिए भी कुछ अच्छा कर रहे होते हैं।

3. **दृढ़ता और धैर्य:** सही दिशा में प्रगति करते हुए हमें धैर्य और दृढ़ता की आवश्यकता होती है । यह हमें सिखाता है कि सफलता केवल गति से नहीं, बल्कि सही रास्ते पर चलने से मिलती है। सही दिशा में एक धीमी यात्रा भी लम्बी और स्थिर सफलता की और ले जाती है।

4. **सकारात्मक परिणाम :** जब हम सही दिशा में कदम बढ़ाते हैं, तो हमारे प्रयासों का परिणाम सकारात्मक होता है। यह हमारे लिए एक प्रेरणा का काम करता है और हम अपने लक्ष्य की ओर और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित होते हैं।

जीवन के विभिन्न पहलुओं में दिशा का महत्व

प्रगति की दिशा का महत्व जीवन के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है. चाहे वह शिक्षा हो, व्यवसाय हो, परिवार हो या व्यक्तिगत जीवन, हर क्षेत्र में दिशा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

1. **शिक्षा:** शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि उस ज्ञान का उपयोग सही तरीके से समाज की सेवा में करना है। अगर कोई छात्र केवल अच्छे अंक लाने के लिए पढ़ाई करता है, तो उसकी सफलता वास्तविक प्रगति नहीं होगी। शिक्षा तब सार्थक है जब उसका उद्देश्य समाज की भलाई हो।

2. **व्यवसाय :** व्यवसाय में सफलता की माप केवल मुनाफे से नहीं होती, बल्कि यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि हम अपने व्यवसाय को किस दिशा में ले जा रहे हैं।अगर हम अपने व्यवसाय को केवल पैसे कमाने के लिए चला रहे हैं, तो यह असंतोष और असफलता की ओर ले जा सकता है। लेकिन अगर हमारा उद्देश्य समाज की सेवा करना है और हम अपने व्यवसाय को उस दिशा में चला रहे हैं, तो सफलता निश्चित रूप से आएगी।

3. **व्यक्तिगत जीवन:** व्यक्तिगत जीवन में भी प्रगति की दिशा महत्वपूर्ण होती है। यदि हम केवल अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए काम करते हैं, तो हम खुश नहीं रह सकते। लेकिन जब हम अपने जीवन को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदा-रियों को निभाने की दिशा में मोड़ते हैं, तो हमारा जीवन अर्थपूर्ण और संतुष्टिपूर्ण बनता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रगति की असली माप गति से नहीं, बल्कि सही दिशा से होती है। हमें अपनी जीवन यात्रा में यह समझना चाहिए कि केवल तेजी से बढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं। सही दिशा मे प्रगति से न केवल हमें व्यक्तिगत संतुष्टि मिलती है, बल्कि हमारा योगदान समाज के लिए भी महत्वपूर्ण बनता है। इसलिए हमें अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को सही दिशा में निर्धारित करना चाहिए और उस दिशा में निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

प्रतिभा पारूल
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नशे के गुलाम

स्वतंत्रता जिसे हम सब वरदान मानते है और जो हमें कई वर्षों की तपस्या तथा त्याग के पश्चात् अनमोल रत्न के रूप में प्राप्त हुई है, का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दुरूपयोग हो रहा है। स्वतंत्रता का दुरूपयोग विशेषत: युवा पीढ़ी द्वारा नशे की गिरफ्त में होने से है। वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का है तथा कदम-कदम पर नयी चुनौतियों का सामना करने हेतु व्यक्ति में दृढ इच्छाशक्ति, धैर्य, साहस आदि गुणों का होना अत्यंत आवश्यक है। परन्तु यह देखने में आया है कि अधिकतर युवा छोटी से छोटी समस्याओं से घिर जाने पर उनसे मुक्ति हेतु नशे का सेवन करते है । वे नशे का सेवन मद्यपान, धुम्रपान, तम्बाकू सेवन आदि के रूप में करते है तथा इनके सेवन के बाद स्वयं को तनावमुक्त बताते है। इस तरह नियमित नशे का सेवन करने से वे इसके गुलाम बन जाते है।

नशे के निरंतर प्रसार में मीडिया की भूमिका भी कम नहीं है। टी. वी., रेडियो, समाचार-पत्रों आदि के माध्यम से तो इनका प्रचार किया जाता है। यह बड़े दुःख की बात है कि दूरदर्शन द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों आदि के नशे को रोकने हेतु मात्र यह कथन "धूम्रपान/मद्यपान/गुटखा सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।" ही लिख दिया जाता है। यह कथन नशे को रोकने में हमारी असमर्थता का सूचक है। कहा जाता है कि फ़िल्में समाज का आईना होती है। आईने में वही चित्र दिखाई देगा जैसी वस्तु हम उसके सम्मुख रखेंगे। फाइलों, धारावाहिकों आदि में हम मद्यपान, धूम्रपान, गुटखा सेवन को प्रतिबंधित नहीं करते तो हमें कैसे स्वच्छ छवि के दर्शन हो सकते है?

इसी तरह नशे की वस्तुओं का निर्माण करने वाले भी "धूम्रपान/मद्यपान/गुटखा सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" लिख कर अपनी इतिश्री कर लेते है, अपने उत्पादों की अंधाधुंध बिक्री करते है तथा दिन-दूनी रात चौगुनी कमाई करते है। उन्हें किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत स्वास्थ्य से कुछ लेना-देना नहीं होता उन्हें तो अधिक धनार्जन करना होता है।

यह भी सच है कि सरकार द्वारा कई नशामुक्ति केंद्र खोले गए है तथा उनके द्वारा समाज में नशे के प्रति जागरूकता भी फैलाई जा रही है। गाँव - गाँव तथा शहर-शहर नशे के घातक प्रभाव के विषय में बताकर लोगों से नशामुक्त जीवन जीने का आग्रह किया जा रहा है। परन्तु मैं इस बात से अश्चार्यचकित हूँ कि क्या सरकार समाज में व्याप्त इस व्यसन को ऐसे समाप्त कर सकती है। क्या मात्र यह कहने से कि फ़िल्में, धारावाहिक आदि मात्र मनोरंजन के लिए बनाये जाते है तथा इनमें नशे का प्रयोग नकारने देने पर इनका क्षेत्र सीमित हो जाएगा? क्या नशे के प्रयोग को बिना प्रदर्शित किए कोई अच्छी फिल्म, अच्चा धारावाहिक नहीं बनाया जा सकता? इस दिशा की ओर ध्यान देकर किसी उचित निर्णय पर पहुंचकर फिल्मों, धारावाहिकों आदि के माध्यम से समाज के सम्मुख एक उत्कृष्ट उद्धरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि हम एक स्वस्थ समाज की कल्पना करते है तो हमें उस स्वस्थता के बीज प्रारंभ से ही बोने होंगे। व्यक्ति के अच्छे संस्कार, सत्संग तथा सुकर्म ही उसे संकट के समय साहस प्रदान करते हैं। रचनात्मक सुधार, विभिन्न तरह की ललित कलाओं आदि के माध्यम से नशे से पीड़ित व्यक्ति को मुक्त कराया जा सकता है। उपरोक्त के संबंध में निम्नलिखित कथन विचारणीय अनुकरणीय है:-

"स्वतंत्रता का महत्व तभी है जब जाने हम यह सार,

रहे अकेले हम चाहे कभी पर नशा करें न एक भी बार ।"

मनीष कुमार श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
रक्षा संपदा निदेशालय,पुणे

वर्चुअल रियलिटी (VR) – एक रोमांचक दुनिया का अनुभव

कहते है, “जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि” अर्थात मनुष्य की जैसी दृष्टि होगी वैसे उसकी सोच बनेगी और जैसी सोच होगी वैसा ही उसे नजर आएगा।

तकनीकी आविष्कार ने इस तथ्य में बदलाव किया है। अब हम ऐसा कह सकते हैं कि “दुनिया वैसी दिखती है जैसा आपका चश्मा हो” । अब तकनीक ने यह चश्मा ही बदल दिया है। वर्चुअल रिएलिटी हैडसेट्स आपको घर बैठे एक नई दुनिया की सैर करा सकते है।

तो चलिए बात करते है वीआर हैडसेट्स की रोमाचंक दुनिया के बारे में:

वर्चुअल रिएलिटी (VR) क्या है?

वर्चुअल रिएलिटी का मतलब है असली- सा लगने वाला ऐसा अनुभव जो असल में मौजूद नहीं है। मिसाल के तौर पर अगर आप जानना चाहते हैं कि सियाचिन का नॉर्थ पोल कैसा दिखता होगा, तो इसका एक तरीका पारम्परिक टीवी स्क्रीन है जो आपको वहां की तस्वीर दिखा सकती है। इसके उलट वीआर हैडसेट्स के जरिये वही तस्वीर आँखों के सामने इस तरह प्रोजेक्ट की जाती है कि आपको वहां होने का आभास होता है। आप जिस तरफ सिर घुमाते है, उस तरफ की तस्वीरें दिखाई देती है। एडवांस्ड वी आर हैडसेट्स में साउंड और मोशन के हिसाब से भी डिस्प्ले अपनी सेटिंग्स बदलता रहता है।

किसी भी वीडियों को वर्चुअल रिएलिटी की तरह देखने के लिए एक ख़ास तरह के डिवाइस की जरूरत होती है जिसे वर्चुअल हेडसेट कहते है। इसे सिर से लेकर आँखों तक पहना जाता है।

वर्चुअल रिएलिटी कैसे काम करती है

वर्चुअल रिएलिटी (VR) के लिए आमतौर पर एक हेडसेट (headset) या हेड-माउंटेड डिस्प्ले (HMD) का उपयोग किया जाता है, जो यूजर के आँखों के सामने आता है और उन्हें एक कंप्यूटर जनित वातावरण दिखाता है।

वीआर हेडसेट में आमतौर पर दो स्क्रीन होते है, जो प्रत्येक आँख के लिए एक अलग दृश्य बनाते है जिससे यूजर को एक 3D अनुभव मिलता है।

वीआर में यूजर के आंदोलनों और बातचीत को ट्रेक करने के लिए अन्य डिवाइस जैसे कि हैड होल्ड कंट्रोलर या सेंसर का भी उपयोग किया जा सकता है।

वीआर के माध्यम से, यूजर को वास्तविक दुनिया के समान या उससे बेहतर अनुभव प्राप्त होता है, जैसे कि वे उस जगह पर है जहाँ वे VR वातावरण में देख रहे है।

वर्चुअल रियलिटी का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है :

गेमिंग

वीआर गेमिंग में यूजर को गेम के अन्दर वास्तविक दुनिया के समान अनुभव होता है जिससे वे गेम को और अधिक आकर्षक तरीके से खेलते है।

शिक्षा

वीआर का उपयोग छात्रों को जटिल विषयों को समझने में मदद करने के लिए किया जा सकता है, जैसे कि इतिहास, भूगोल या विज्ञान।

चिकित्सा

वीआर का उपयोग डाक्टरों को मरीजो का प्रशिक्षण देने और उन्हें सर्जरी या अन्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का अभ्यास करने के लिए किया जा सकता है।

मनोरंजन

वीआर का उपयोग मनोरंजन के लिए भी किया जा सकता है, जैसे कि 3D मूवी देखने या वर्चुअल दुनिया में यात्रा करने के लिए।

वर्चुअल रिएलिटी की दुनिया भर में धूम

मोबाईल वीआर सेट्स वैसे तो पहले से ही मौजूद है लेकिन उपलब्धता में कमी और महंगे होने की वजह से इनका इस्तेमाल आम लोग नहीं करते थे। वर्चुअल रिएलिटी की तकनीक को केवल सिम्युलेशन या ट्रेनिंग के लिए इस्तेमाल किया जाता था। बेहतर तकनीक की वजह से ये अब आम यूजर्स के बीच काफी पोपुलर होता जा रहा है। वीआर सेट्स को 3D और 360 डिग्री वीडियोज देखने के लिए दुनिया भर के लोग काफी पसंद कर रहे है। मोबाईल वीआर हैडसेट्स के जरिये थियेटर में 3D मूवी देखने जैसा अनुभव घर पर ही पाया जा सकता है। खासतौर पर शूट किए गए 360 डिग्री वीडियोज में हैडसेट्स पहनकर सिर को अलग-अलग डायरेक्शन में घुमाकर असली लोकेशन पर पहुँचने जैसा अनुभव पाया जा सकता है।

वर्चुअल रिएलिटी एक शक्तिशाली तकनीक है जो हमें एक नई दुनिया में प्रवेश करने और उसके साथ बातचीत करने की अनुमति देती है । यह तकनीक विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग की जाती है और आने वाले वर्षों में और अधिक लोकप्रिय होगी।

शशि गोंदवाल
सहायक प्रशासनिकअधिकारी
प्रधान निदेशालय रक्षा संपदा
पश्चिम कमान चंडीगढ़

रक्षा सम्पदा भवन, दिल्ली छावनी - 110 010

रक्षा सम्पदा दिवस व्याख्यान 2024 की झलकियाँ

श्री एस एन गुप्ता द्वारा महानिदेशक, रक्षा सम्पदा के रूप में 31 मई 2025 को नियमित पदभार ग्रहण

विश्व पर्यावरण दिवस 2025 (05 जून, 2025)

सर पर हाथ

बहुत सुन्दर आभास होता है
जब सर पर माता-पिता का हाथ होता है।

अनगिनत मुश्किलें क्यों न हो राहों में
हस समस्या का समाधान होता है

जब सर पर माता-पिता का हाथ होता है

जमाना पुरजोर कोशिशें करें गिराने की
गिरने से पहले ही उठाने वाला तैयार होता है ।

जब सर पर माता-पिता का हाथ होता है।

बहुत कुछ तो पाया नहीं जिन्दगी में, यह सच है
पर ये सच भी दरकिनार होता है

जब सर पर माता-पिता का हाथ होता है

ताउम्र गिर और गिरकर संभल गया
ये हौंसला मुझे बार-बार होता है

जब सर पर माता-पिता का हाथ होता है

श्रीमती नीतू
सी.बी. एलीमेंट्री स्कूल
फिरोजपुर छावनी

“मनुष्य का सबसे बडा शत्रु उसका अहंकार ही है”

अहंकार जिसे घमंड या अभिमान भी कहते है जो हमें खुद को दूसरों से श्रेष्ठ समझने पर मजबूर करता है। अहंकार होने पर दूसरों की कोई बात नहीं सुनते ओर गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर हो जाते है।

अहंकार का अर्थ है “मैं और मेरा की भावना” । अहंकारी व्यक्ति अक्सर अपनी उपलब्धियों, ज्ञान या क्षमता का ढिंढोरा बजाता रहता है।मनुष्य को अपना अहंकार त्याग देना चाहिए ताकि मन निर्मल हो सके और मन का अज्ञान शांत हो सके।

अगर हम अपने अहंकार पर विजय प्राप्त कर लेते है तो हमारे भीतर विनम्रता और सहानुभूति की भावना उत्पन्न होगी।

अहंकारी व्यक्ति अपनी बात को ही सही मानता है, वह दूसरों से बात करने में कतराता है ओर दूसरों की मदद करने से भी इनकार कर देता है।

अहंकार इंसान के अन्दर की सबसे बड़ी कमजोरी है। जब तक आपके अन्दर अहंकार है तब तक आप अज्ञान रूपी अहंकार को दूर नहीं कर सकते। अहंकारी व्यक्ति का पतन शीघ्र ही हो जाता है। अहंकारी व्यक्ति हमेशा चापलूस व्यक्तियों से घिरा रहता है जो उसकी कमियों को नहीं बताते जिसके कारण वह उन्हें दूर नही कर पता। अहंकार आत्म जागरूकता की कमी से आता है।

मनुष्य का अहंकार जब नष्ट होता है तो उसका क्रोध करूणा में बदल जाता है। उसे सारी सृष्टि से प्रेम हो जाता है, दूसरों का दु:ख अपना प्रतीत होता है। सब्र आने लगता है ओर धीरे-धीरे अहंकार दूर हो जाता है।

अशोक कुमार
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
प्रधान निदेशालय, रक्षा संपदा
पश्चिमी कमान, चंडीगढ़

"मन"

"मन" अक्सर कहानियां बुनता है। कहानियां भी ऐसी जो उदासी व् दर्द के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है और इन सभी कहानियों का मुख्य किरदार जो अकेला ही सभी बुराइयों से घिरा है उनका जिम्मेदार भी खुद को ही मानता है। अब जब इतना मान ही लिया है तो अब कोई ना कोई व्यक्ति तो है जो उसकी सभी पीड़ाओ का कारण है।

मन, दोष तय करता है और पुराने घावो से भावनाएं जोड़ देता है। लेकिन जिस क्षण आप दोष औरों को देते है, उसी क्षण आप अपनी शक्ति भी उन्हीं को सौंप देते है । किसी और को ही दोषी मानना, यह आपका ध्यान किसी अन्य की ओर बनाए रखता है- किसी और के बदलने, माफ़ी मांगने, या चीजों को सही करने का इन्तजार करता है। लेकिन क्या हो अगर मन की शांति कभी इस पर निर्भर ही न रही हो ? क्या हो अगर वह हमेशा एक आंतरिक निर्णय रहा हो ?

"आपकी पीड़ा कभी उस व्यक्ति के कारण नहीं होती जिसे आप दोष दे रहे हैं।"

दोष देना आसान रास्ता है, लेकिन यह कभी भी मुक्ति तक नहीं ले जाता – बल्कि आपको झूठे दृष्टिकोण की एक जेल में कैद कर देता है। यह बड़ा आकर्षक लगता है कि हमारी पीड़ा किसी और की वजह से है – कि उनके शब्द, उनके कर्म या उनके चुनाव ही हमारी तकलीफ का कारण है । लेकिन क्या हो अगर पीड़ा की असली जड़ यह न हो कि किसी ने क्या किया, बल्कि यह हो कि हमने उसे कैसे देखा, समझा और थामे रखा ?

आप दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर सकते। लोग गलतियाँ करेंगे, अन्याय करेंगे, निराश करेंगे।लेकिन उसके बाद क्या होता है – आपकी प्रतिक्रिया, आपको भावनाएं और आपके विचार – ये सब आपके नियंत्रण में होते है और यह असली ताकत होती है- यह जानना कि पीड़ा बाहरी कारणों से नहीं, बल्कि उस लगाव से उत्पन्न होती है जो बदला नहीं जा सकता जो इस अनजान बदलाव से पैदा हुई है जिसकी कल्पना मन ने कभी की ही नही थी।

व्यक्तिगत जवाबदेही का मतलब यह नहीं है कि आप दूसरों की गलतियों को नजरअंदाज करे – बल्कि यह है कि आप अपनी शक्ति को पुन: प्राप्त करें। यह समझना कि पीड़ा वास्तविक है, लेकिन दुःख को थामे रहना एक विकल्प है। यह एक निर्णय है कि कठिन परिस्थितियों को बोझ नहीं, बल्कि सीख समझा जाए। पीड़ित की सोच से उभरकर विकास की ओर बढ़ा जाए। यह दुनिया हमेशा दयालु नहीं होगी, लेकिन आन्तरिक शांति बाहरी स्थितियों से तय नहीं होती।

दोषी को छोड़ देना उसे मन से जाने देना, इसका यह मतलब नहीं कि चोट नहीं लगी, दर्द नहीं हुआ या ऐसा दिखाना कि जैसे कुछ हुआ ही ना हो बल्कि यह है कि उस चोट को भविष्य की दिशा तय नहीं करने दी जाएगी। जब आप अपने विचारों, प्रतिक्रियाओं और भावनाओं की जिम्मेदारी लेते है, तब जीवन ऐसा नहीं लगता कि यह आपके साथ हो रहा है, आपकी कोई गलती ना होने पर भी आपका सब कुछ बिगड़ गया, बल्कि ऐसा लगता है कि अब आपके पास वो शक्ति है जिस के द्वारा आप अपने लिए फैसला ले सकते है। जैसे दुखी रहना एक फैसला है उसी प्रकार प्रसन्न रहना भी आपका फैसला है जिसे लेने से आपको कोई रोक नहीं सकता।

स्वतंत्रता उस क्षण शुरू होती है जब आप जिम्मेदारी स्वीकार करते है। चुनाव हमेशा आपके पास होता है : या तो दोष और दोषी की सोच में बंधे रहना, या फिर फैसला ले और आगे बढ़ने की सोच को अपना लें। अंततः एकमात्र सच्चा नियंत्रण स्वयं पर होता है और वही सच्ची शांति पाई जाती है।

कुलदीप कौर
डाटा एंट्री ऑपरेटर
प्रधान निदेशालय, रक्षा संपदा
पश्चिमी कमान, चंडीगढ़

ऑनलाइन शिक्षा

प्रस्तावना :- शिक्षा हम सभी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्त करना बहुत ही आसान हो गया है। आपको शिक्षा लेने के लिए स्कूल या कॉलेज जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, आप घर पर ही रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकते है। इस शिक्षा को ऑनलाइन शिक्षा के नाम से जाना जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा क्या है :- मोबाईल, कंप्यूटर, लैपटॉप आदि के माध्यम से घर में रहकर अपने पाठ्यक्रम सामग्री का अध्ययन करना ऑनलाइन शिक्षा है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए इंटरनेट बहुत ही आवश्यक होता है, इंटरनेट के बिना ऑनलाइन शिक्षा संभव नहीं हो सकती। कोरोना काल में स्कूल बंद होने के कारण विद्यार्थी शिक्षा से वंचित हुए जिसके कारण ऑनलाइन शिक्षा से अध्ययन कराया जाने लगा और यह काफी हद तक पसंद भी किया गया।

ऑनलाइन शिक्षा के मार्ग में चुनौतियां :- जिन शहरों गाँव अथवा कस्बों में इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है वहां ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को शुरू कर पाना नामुमकिन है। इसके साथ ही ऐसे क्षेत्र जहाँ इन्टरनेट की स्पीड कम होती है, वहां भी ऑनलाइन शिक्षा बेहद चुनौती पूर्ण काम है। इन्टरनेट पर कई बार छात्रों को अध्ययन में समस्या होती है। ऑन-लाइन शिक्षा प्रणाली में बच्चों में प्रतियोगिता का स्तर कम होता जाता है। ऑनलाइन शिक्षा के दौरान कक्षा में बच्चों का पढाई पर ध्यान केन्द्रित कर पाना बेहद कठिन होता है। ऑनलाइन कक्षाओं में स्क्रीन अधिक समय तक देखने के कारण आँखे कमजोर होने लगती है और बड़े बच्चों में सर दर्द जैसी समस्याएँ उत्पन्न होने लगती है।

अलगाव की भावना : इस प्रकार की शिक्षा में साथियों के बीच बहुत कम बातचीत होती है। जिससे छात्रों के मन में अलगाव की भावना आती है। साथियों के साथ बातचीत करने से सक्षम होना एक महत्वपूर्ण कारक है, जो किसी भी व्यक्ति के विकास में मदद करता है।

तकनीकी बाधा :- ऑनलाइन प्लेटफार्म की तकनीकी बातों को समझने में असमर्थ छात्र एवं शिक्षक भ्रम में पड़ सकते है। हर छात्र ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल नहीं हो सकता। वे मुफ्त शिक्षा पर निर्भर है। इसलिए आर्थिक कमजोर वर्ग के लिए यह व्यवहार्थ समाधान नहीं है।

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे :- ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के बहुत से फायदे है। इसके माध्यम से छात्र घर बैठे ही अपने अध्ययन से सम्बंधित सम्पूर्ण सामग्री आसानी से प्राप्त कर सकता है। इस माध्यम से सरकारी परीक्षाओं की तैयारी भी की जा सकती है ऑनलाइन शिक्षा घर से ही हो जाने पर समय की एवं धन दोनों की बचत हो जाती है। इसके लिए स्कूल कॉलेजों में अनावश्यक शुल्क भी नहीं देना पड़ता है। कुछ ऐसे व्यक्ति जो नौकरी के साथ अपनी आगे की पढाई को जारी रखना चाहते है वे ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकते है। कोरोना महामारी जैसे परिस्थितयों में ऑन-लाइन शिक्षा प्रणाली ही शिक्षा के क्षेत्र में कारगर साबित हुई है।

रीना
डाटा एंट्री ऑपरेटर
प्रधान निदेशालय, रक्षा संपदा
पश्चिम कमान, चंडीगढ़

स्मृतिचिन्ह

आज भी बहुत याद आती है पंद्रह साल पहले की घटना जो बार बार यादों में वापस आती है। जून का महीना था। पांच तारीख शाम के लगभग 6 बज चुके थे । मैं गेस्ट हॉउस में अपने कमरे से बाहर निकल कर सुनहरे मौसम का आनंद ले रही थी। अच्छे से याद है कि मेरे एक हाथ में चाय का प्याला और दूसरे हाथ में हिंदी साप्ताहिक पत्रिका "नवीकरण" था। दूर किसी गाँव से ढोलक बजने की आवाज आ रही थी। मेरे सामने पहाड़ों की चोटियाँ गोधूलि के सूर्य की किरणों को बिखरने के प्रयास में जुटी थी। इन सभी चोटियों में प्रमुख थी नंदा देवी। नंदा देवी से बिखरती स्वर्णिम किरणों को देखकर मैं मंत्र मुग्ध रह गई।दूर कहीं से बांसुरी बजने की भी आवाज आ रही थी। कुछ क्षण के लिए मुझे सोहन लाल द्विवेदी जी की कविता "खड़ा हिमालय" याद आ गयी। पता नहीं कब काली घटा छाई और जोरदार बारिश शुरू हो गई। बूंदे तीव्र गति से गिरने लगी थी।

मै उन दिनों में उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में कार्यरत थी। गरमी की छुट्टियों में अपने परिवार के साथ जोशी मठ घूमने निकल पड़ी थी। हमने विष्णु प्रयाग में स्थित प्राचीन विष्णु मंदिर दर्शन किए थे। चिनाब झील के मनोरम सौन्दर्य को निहारने का भी अवसर प्राप्त हुआ ।

उस शाम को मूसलाधार बारिश की वजह से कोहरा छाने लगा। फिर तो पहाड़ों की चोटियाँ और आस पास के पेड़ों का प्रतिबिम्ब ही मुझे दिखाई दे रहा था। बचपन में महादेवी वर्मा जी की कहनियों को पढ़कर पता नहीं कब प्रकृति प्रेमी बन गई थी। अगले दिन हम फूलो की घाटी के लिए रवाना होने वाले थे। मन ही मन सोचने लगी थी कि बारिश ने अचानक हमारे घूमने फिरने के कार्यक्रम में कैसा प्रश्न चिन्ह डाल दिया था। अचानक तीव्र गति से बिजली कड़क उठी। कमरे की बिजली भी चली गई। बाहर मूसलाधार बारिश और कमरे के अंधकार ने यह एहसास दिलाया कि प्रकृति के समक्ष हम मनुष्य कितने सूक्ष्म है। मन अशांत था परन्तु कब हम सब रात्रि आहार के बाद गहरी नींद में सो गए, पता नहीं चला। सुबह जब आँखे खुली तो पता चला कि रात को जोशी मठ के आस पास तेज भूस्खलन होने के कारण सभी रास्ते बंद हो गए थे। आसपास इतनी तबाही हो चुकी थी कि चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। दिन ढलने तक हम कमरे में ही बंद रहे उस दिन मन भारी हो उठा जब मैंने सुना कि हमारे गेस्ट हॉउस के केयर टेकर के घर भी बाढ़ में बह गए थे। उद्धार कार्य दिन ढलने के बाद ही शुरू हो पाया था। मैं अपने परिवार के साथ उद्धार कर्मियों की मदद करने में जुट गई थी। हमारे पास साधन कम थे फिर भी मनोबल को कायम रखना था। कुछ और दिन बीत गए। हम सब कार्य में इतने उलझ गए थे कि मन से घूमने फिरने की आकांक्षा निकल चुकी थी। धीरे-धीरे जीवन स्वाभाविक होने लगा। यही व्यथा प्रतिकूल परिस्थितयों में भी आगे बढ़ने का नाम है। उद्धार कर्मियों में से ऐसे लोग भी थे, जो सबकुछ खोकर भी उद्धार कार्य में लगे रहे। कितनी दृढ़ता हो सकती है मन में, मैं यही सोचती रह गई। रास्ते खुलते ही हम देहरादून के लिए रवाना हो गए । जाते जाते यह अवलोकन करने लगी थी कि हम मनुष्य प्रकृति के आगे कितने क्षुद्र है, परन्तु हमारा अहंकार हमें वास्तविकता से दूर रखता है।

उस रात की घटना के बाद इतने साल बीत गए पर प्रकृति के उस रूद्र रूप के प्रकोप के बारे में सोचकर आज भी मन बेचैन हो उठता है।

मैं आजकल वृक्षारोपण के माध्यम से प्रकृति के संतुलन को बरकरार रखने के प्रयास में जुटी हूँ। अब समझ आया है कि प्रगति को प्रकृति के साथ मिलकर ही आगे बढ़ना चाहिए। इस भावना को लेकर आगे बढ़ते हुए आज मैं अपने पाठक गण के प्रति यह अनुरोध रखती हूँ कि इस, विश्व पर्यावरण दिवस के आगमन से पहले हम सब प्रकृति के संतुलन को कायम रखने का प्रण लें। विभिन्न जलवायु परिवर्तन के रोकथाम के कार्यक्रमों के माध्यम से प्रकृति के प्रति लोगों की जागरूकता और बढ़ाये।

श्रीमती सुमना घोष
मुख्य अध्यापिका
सीबी मिडल स्कूल. बीसीबाजार (अम्बाला कैंट)

याद आते हैं स्कूल के दिन

याद आते हैं स्कूल के दिन
वो बस्ते का बोझ, वो दोस्तों की टोली,
वो सुबह की प्रार्थना, वो मस्ती की बोली।
याद आते हैं स्कूल के दिन, बड़े याद आते हैं।

वो टीचर की डाँट, वो होमवर्क का डर,
वो इम्तिहान की रातें, वो पढ़ाई का सफर।
याद आते हैं स्कूल के दिन, बड़े याद आते हैं।

वो कैंटीन की भीड़, वो समोसे की खुशबू,
वो खेल के मैदान, वो यारों की महफ़िल खूब।
याद आते हैं स्कूल के दिन, बड़े याद आते हैं।

वो छोटी-छोटी बातें, वो रूठना-मनाना,
वो बेफिक्र हँसी, वो बचपन का ज़माना।
याद आते हैं स्कूल के दिन, बड़े याद आते

अनुज यादव
एम टी एस
रक्षा संपदा महानिदेशालय

एक खूबसूरत भारत

भारत, एक ऐसा देश जो अपनी विविधता में एकता के लिए विश्वभर में जाना जाता है, वास्तव में खूबसूरती का प्रतीक है। इसकी खूबसूरती सिर्फ इसकी भव्य इमारतों या प्राकृतिक नज़ारों में ही नहीं, बल्कि इसकी समृद्ध संस्कृति, अद्भुत इतिहास, और आत्मीय लोगों में भी निहित है। यह एक ऐसा देश है जहाँ हर कदम पर एक नई कहानी, एक नया अनुभव और एक नई भावना का अहसास होता है।

भारत की भौगोलिक विविधता ही इसकी खूबसूरती का एक बड़ा हिस्सा है। उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ, जो आध्यात्मिकता और शांति का प्रतीक हैं, तो दक्षिण में कन्याकुमारी के नीले समुद्र तट, जहाँ तीन महासागरों का संगम होता है। पश्चिम में थार का विशाल रेगिस्तान अपनी सुनहरी रेत के टीलों और ऊँटों के कारवां के साथ एक अलग ही जादू बिखेरता है, तो पूर्व में हरे-भरे जंगल, वन्यजीव और जीवंत जनजातीय संस्कृतियाँ अपनी अनोखी पहचान रखती हैं। मैदानी इलाकों की उपजाऊ भूमि, जहाँ नदिया जीवनदायिनी बनकर बहती हैं, भारत को कृषि प्रधान देश बनाती हैं, जो इसकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। ये सभी भौगोलिक विविधताएं मिलकर भारत को एक अद्वितीय और मनोरम रूप प्रदान करती हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत इसकी खूबसूरती का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है। यहाँ हर राज्य, हर क्षेत्र की अपनी अनोखी परंपराएं, भाषाएँ, वेशभूषाएं और खान-पान हैं। दिवाली की जगमगाहट, ईद की खुशी, क्रिसमस की धूम और लोहड़ी का उल्लास, ये सभी त्योहार देश के कोने-कोने में समान उत्साह के साथ मनाए जाते हैं, जो विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच सौहार्द का प्रतीक है। शास्त्रीय नृत्य जैसे भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, और लोक नृत्य जैसे भांगड़ा, गरबा, घूमर, भारतीय संस्कृति की जीवंतता का प्रदर्शन करते हैं। संगीत की समृद्ध परंपरा, चाहे वह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत हो या कर्नाटक संगीत, आत्मा को शांति और आनंद प्रदान करती है। भारतीय व्यंजन अपनी विविधता और स्वाद के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं, हर क्षेत्र का अपना विशिष्ट स्वाद और बनाने का तरीका है, जो खाने के शौकीनों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

भारत का इतिहास भी इसकी खूबसूरती का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। प्राचीन सभ्यताएं, जैसे हड़प्पा और मोहनजोदड़ो, भारतीय उपमहाद्वीप के गौरवशाली अतीत की गवाह हैं। मौर्य, गुप्त, मुगल और ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत पर शासन किया, और इन सभी साम्राज्यों ने अपनी-अपनी छाप छोड़ी, जिससे देश की वास्तुकला, कला और संस्कृति में विविधता आई। ताजमहल, लाल किला, अजंता-एलोरा की गुफाएं, कोणार्क सूर्य मंदिर जैसे ऐतिहासिक स्मारक न केवल इंजीनियरिंग के चमत्कार हैं, बल्कि उन साम्राज्यों की कहानी भी कहते हैं जिन्होंने इन्हें बनवाया था। ये स्मारक हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं और हमें अपने पूर्वजों की कलात्मक प्रतिभा और दूरदर्शिता पर गर्व महसूस कराते हैं।

भारत की सबसे बड़ी खूबसूरती उसके लोग हैं। यहाँ के लोग अपनी मेहमान नवाजी, गर्मजोशी और सहनशीलता के लिए जाने जाते हैं। 'अतिथि देवो भव:' (मेहमान भगवान के समान है) की अवधारणा यहाँ की संस्कृति में गहराई से समाई हुई है। ग्रामीण इलाकों में जहाँ सादगी और भाईचारा देखने को मिलता है, वहीं शहरों में आधुनिकता और परंपरा का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। चुनौतियों के बावजूद, भारतीय लोग हमेशा आशावादी रहते हैं और जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीते हैं। उनकी दृढ़ता और अनुकूलन क्षमता ही भारत को एक मजबूत और लचीला राष्ट्र बनाती है।

आधुनिक भारत भी अपनी एक नई पहचान बना रहा है। वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास ने भारत को वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। मंगलयान की सफलता, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का नेतृत्व, और स्टार्टअप इकोसिस्टम का विकास यह दर्शाता है कि भारत केवल अपने अतीत में ही नहीं, बल्कि भविष्य में भी अपनी छाप छोड़ रहा है। योग और आयुर्वेद जैसी प्राचीन भारतीय प्रथाएं भी विश्वभर में स्वास्थ्य और कल्याण के लिए अपनाई जा रही हैं, जो भारत के ज्ञान और दर्शन का प्रसार कर रही हैं।निश्चित रूप से, भारत एक खूबसूरत देश है,

लेकिन इसकी खूबसूरती को केवल आँखों से नहीं, बल्कि दिल से महसूस करनी चाहिए। इसकी गलियों में घूमते हुए, इसके त्योहारों में शामिल होते हुए, इसके लोगों से बातचीत करते हुए, और इसके इतिहास में झांकते हुए, कोई भी इसकी असली खूबसूरती को समझ सकता है। यह एक ऐसा देश है जो विरोधाभासों से भरा है, जहाँ प्राचीन और आधुनिक, ग्रामीण और शहरी, परंपरा और प्रगति एक साथ सह-अस्तित्व में हैं। यही विरोधाभास इसे और भी आकर्षक और अद्वितीय बनाते हैं।

यह खूबसूरती एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है, जहाँ हर दिन कुछ नया जुड़ता है और पुराना रूप बदलता है। भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक भावना, एक अनुभव और एक अमर गाथा है जो सदियों से चली आ रही है और सदियों तक चलती रहेगी। यह वास्तव में 'एक खूबसूरत भारत' है।

मोहित मरतोलिया, (एएसओ)
रक्षा संपदा महानिदेशालय

मेरे गाँव की यादें

मेरे गाँव की यादें, आज भी मेरे मन में एक ठंडी हवा के झोंके सी आती हैं। वह कच्ची सड़कें, धूल-मिट्टी से सने पैर, और शाम को नीम के पेड़ के नीचे लगी चौपाल... सब कुछ आँखों के सामने घूम जाता है।

सुबह-सुबह मुर्गों की बॉग से नींद खुलना, और फिर मंदिर से आती घंटियों की आवाज़। खेतों में काम करते किसान, उनकी मेहनत और पसीने की खुशबू, और लहलहाती फसलें जो दूर तक हरियाली की चादर बिछा देती थीं। नलकूप पर नहाने का अपना ही मज़ा था, जहाँ दोस्तों के साथ पानी में उछल-कूद करते थे और खूब शोर मचाते थे।

दोपहर में दादी की कहानियाँ और शाम को माँ के हाथ का बना गरमा-गरम खाना, जिसका स्वाद आज भी जुबान पर महसूस होता है। वो आम के बाग, जहाँ हम घंटों खेलते थे, कच्चे आम तोड़ते थे और पत्तों से सीटी बजाते थे। बरगद के पेड़ पर झूला झूलना और आसमान को छूने की कोशिश करना, वो बचपन की मासूमियत और बेफिक्री आज भी याद आती है।

शाम ढलते ही घरों से आती लालटेन की रोशनी, और तारों से भरा आसमान, जहाँ हर तारा अपनी एक कहानी कहता था। वो रातें जब बिजली नहीं होती थी, और हम सब आँगन में बैठकर चाँद-तारों को निहारते थे, बुजुर्गों से किस्से सुनते थे। दीवाली पर जलते दिए, होली पर उड़ते रंग, और मेलों का उत्साह—हर त्योहार गाँव में एक अलग ही रौनक लेकर आता था।

गाँव के लोग, उनका सादगी भरा जीवन, एक-दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन—ये सब कुछ मेरे दिल में गहराई तक बसा हुआ है। शहर की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में आज भी मेरा मन उस सुकून भरे गाँव में लौटने को करता है, जहाँ हर चीज़ में एक अपनापन था, जहाँ हर रिश्ता सच्चा था। मेरे गाँव की यादें... ये सिर्फ यादें नहीं, बल्कि मेरी पहचान का एक अटूट हिस्सा हैं।

निशा
एमटीएस
रक्षा संपदा महानिदेशालय

माँ के संघर्ष पर निबंध

माँ एक ऐसा शब्द है जो हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है। माँ हमारी पहली शिक्षिका, हमारी पहली दोस्त और हमारी पहली गाइड होती है। लेकिन माँ के जीवन में भी कई संघर्ष होते हैं जिनका सामना वह अपने बच्चों के लिए करती है।

माँ के संघर्ष की शुरुआत तब से होती है जब वह गर्भवती होती है। उसे अपने बच्चे के लिए अपने जीवन को बदलना पड़ता है। वह अपने खाने-पीने की आदतों को बदलना पड़ता है, अपने दिनचर्या को बदलना पड़ता है और अपने जीवन को पूरी तरह से बदलना पड़ता है।

जब माँ अपने बच्चे को जन्म देती है, तो उसके संघर्ष की एक नई शुरुआत होती है। वह अपने बच्चे की देखभाल के लिए दिन-रात काम करती है। वह अपने बच्चे को दूध पिलाती है, उसे नहलाती है, उसे खिलाती है और उसे सुलाती है।

माँ के संघर्ष का एक और पहलू है उसके परिवार के साथ संघर्ष। वह अपने पति और अपने अन्य परिवार के सदस्यों के साथ संघर्ष करती है ताकि वह अपने बच्चे के लिए एक अच्छा जीवन प्रदान कर सके।

माँ के संघर्ष का एक और पहलू है उसके समाज के साथ संघर्ष। वह अपने समाज में अपने बच्चे के लिए एक अच्छा जीवन प्रदान करने के लिए संघर्ष करती है। वह अपने समाज में अपने बच्चे के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए संघर्ष करती है।

माँ के संघर्ष का एक और पहलू है उसके अपने सपनों के साथ संघर्ष। वह अपने बच्चे के लिए अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करती है। वह अपने बच्चे के लिए एक अच्छा जीवन प्रदान करने के लिए अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करती है।

माँ के संघर्षों को समझने के लिए हमें उनके जीवन को ध्यान से देखना होगा। हमें उनके संघर्षों को समझना होगा और उनके प्रयासों की सराहना करनी होगी।

माँ के संघर्ष एक ऐसा विषय है जो हमें माँ के जीवन में आने वाली चुनौतियों के बारे में बताता है। माँ अपने बच्चे के लिए अपने जीवन को बदलने के लिए संघर्ष करती है। वह अपने परिवार, समाज और अपने सपनों के साथ संघर्ष करती है। लेकिन वह अपने बच्चे के लिए एक अच्छा जीवन प्रदान करने के लिए संघर्ष करती है। हमें माँ के संघर्षों को समझना चाहिए और उनके प्रयासों की सराहना करनी चाहिए।

प्रिया
डाटा एंट्री ऑपरेटर
रक्षा संपदा महानिदेशालय

प्रतिकूल परिस्थितियों में मनुष्य के चरित्र का परीक्षण

मनुष्य का जीवन कभी भी सीधा और सहज नहीं होता। जीवन में उतार चढ़ाव – संघर्ष और संकट का सामना सभी को करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी रूप में कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करता हैं। प्रतिकूल परिस्थितियां जीवन का हिस्सा है, और उनका सामना करना हर इंसान के लिए आवश्यक होता है। हालांकि, यह जरूरी नहीं कि हर कोई इन परिस्थितियों में समान रूप से व्यवहार करे। व्यक्ति के वास्तविक चरित्र का परीक्षण तब होता है जब उसे शक्ति और सामर्थ्य मिलती है।

यह वाक्य, "लगभग सभी मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सकते है, लेकिन व्यक्ति के चरित्र के परीक्षण के लिए, उसे शक्ति प्रदान करके देखिए" बहुत गहरे अर्थ को व्यक्त करता है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ उन परिस्थितियों को कहते है जिनमें कोई व्यक्ति संघर्ष करता है, कठिनाई महसूस करता है और इसके पास समाधान नहीं होता। इस समय उसकी सहनशक्ति, धैर्य और निष्ठा की परीक्षा होती है। लेकिन जब किसी व्यक्ति को अत्यधिक शक्ति, संसाधन या अधिकार मिलते है, तो उसका असली चरित्र बाहर आता है। क्या वह शक्ति का उपयोग ईमानदारी से करता है या उसका दुरूपयोग करता है, यह उसके वास्तविक चरित्र को प्रदर्शित करता है।

प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना

प्रतिकूल परिस्थितियां व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक सामर्थ्य का परीक्षण करती है। जब व्यक्ति कठिनाइयों का सामना करता है, तो उसकी इच्छाशक्ति, धैर्य और संघर्ष करने की क्षमता का पता चलता है। उदहारण के तौर पर, एक गरीब व्यक्ति जो आर्थिक तंगी के कारण बहुत संघर्ष कर रहा है, जब उसे यह मौका मिलता है कि वह अपनी स्थिति को सुधार सके, तो वे कठिनाइयों में अपने धैर्य और कार्य करने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। ऐसे लोग जो अपने संघर्षों के दौरान हार नहीं मानते और विपरीत परिस्थितयों के बावजूद अपनी मेहनत से सफलता प्राप्त करते है, वे असली जीवन के नायक होते है।

दूसरी ओर, कई लोग ऐसे होते है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में टूट जाते है, परेशान होते है और हार मान लेते है। वे जल्दी निराश हो जाते है और अपनी समस्याओं को हल करने के बजाय उनसे भागने की कोशिश करते है। इस प्रकार, प्रतिकूल परिस्थितियां एक व्यक्ति के मानसिक स्थिति और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को समझने का एक अच्छा साधन होती है।

शक्ति और चरित्र

जहाँ तक शक्ति का सवाल है, यह मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शक्ति, पद और अधिकार व्यक्ति को समाज में एक विशेष स्थान देते है। जब किसी व्यक्ति को शक्ति मिलती है, तो उसका असली चरित्र सामने आता है। शक्ति के साथ जब कोई व्यक्ति दूसरों के ऊपर हुकूमत करता है। अपनी इच्छाओं और अहंकार को प्राथमिकता देता है, या दूसरों का शोषण करता है, तो यह उसके नैतिक चरित्र का ही परिचायक होता है।

हमारे इतिहास में कई उदाहरण है जो हमें यह सिखाते है कि शक्ति का सही उपयोग कैसे किया जाता है। जैसे महात्मा गाँधी जो सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चले और उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग समाज की भलाई के लिए किया। उनके लिए शक्ति का मतलब था लोगों की सेवा करना, उन्हें सही मार्ग पर लाना, और समाज में समानता और न्याय स्थापित करना।

शक्ति और व्यक्ति का असली चरित्र

जब किसी व्यक्ति को शक्ति मिलती है, तो उसे यह समझना बहुत जरूरी है कि वह क्या चाहता है? क्या वह अपनी शक्ति का दुरूपयोग करके दूसरों पर दबाव डालना चाहता है, यह वह अपने कार्यों से समाज की भलाई करना चाहता है? असली ताकत तब आती है जब कोई व्यक्ति अपनी शक्ति का इस्तेमाल दूसरों के भले के लिए करता है।

किसी भी व्यक्ति का वास्तविक मूल्य उसकी ईमानदारी और अच्छाई में निहित होता है। वह चाहे किसी भी स्थिति में हो, उसके चरित्र की परीक्षा उसके आंतरिक विश्वासों, मूल्यों और सिद्धांतों से होती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों और शक्ति दोनों ही व्यक्ति के असली चरित्र का परीक्षण करती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में व्यक्ति का धैर्य, साहस और संघर्ष करने की क्षमता सामने आती है, जबकि शक्ति में व्यक्ति का नैतिक निर्णय ईमानदारी और जिम्मेदारी देखने को मिलती है। जो व्यक्ति शक्ति का दुरूपयोग करते है, वे अपने असली चरित्र को खो बैठते है, जबकि जो लोग अपनी शक्ति का उपयोग समाज की भलाई के लिए करते है, वे समाज में आदर्श बन जाते है।

अंतत: यह कहना गलत नहीं होगा कि मनुष्य का असली चरित्र तब प्रकट होता है", जब उसे शक्ति मिलती है और तब उसे यह साबित करना होता है कि वह उसे सही तरीके से इस्तेमाल करता है, या नहीं. यही कारण है कि हमें अपने जीवन में सच्चाई, ईमानदारी और दूसरों की भलाई के लिए शक्ति का उपयोग करना चाहिए।

अनुपम तिवारी
स्टेनोग्राफर
रक्षा संपदा महानिदेशालय

राजस्थान का दक्षिणी द्वार "झालावाड़"

वीर भूमि राजस्थान भौगोलिक भिन्नताओं और सांस्कृतिक विविधताओं का प्रदेश है। इसी के एक महत्वपूर्ण जिले 'झालावाड़' की पूर्ण जानकारी इस लेख में दी गई है।

राजस्थान में 33 जिलों में एक जिला है 'झालावाड़'। जो देश की राजधानी दिल्ली से 595 कि. मी. दक्षिण में तथा मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से 265 कि.मी. उत्तर में तथा राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर 'जयपुर' से 335 कि. मी. दक्षिण में स्थित है। कोटा रियासत के राजकुमार जालिम सिंह झाला ने ईसवी सन् 1838 में झालावाड़ नगर बसाया था। जो कोटा से पृथक राज्य हो गया था। जालिम सिंह द्वारा ही यहाँ किले का निर्माण करवाया गया था। जो आज शहर के बीचो बीच राजस्थान प्रदेश की आन लिए दक्षिण द्वार बनकर खड़ा है। झालावाड़ मुकंदरा पहाड़ियों की ढलान पर बसा हुआ है, एक ओर जहाँ यह चट्टानी प्रदेश है तथा दूसरी ओर नदी, वन तथा हरियाली से भरा प्रदेश है। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सम्पदा का विशेष महत्व है।

झालावाड़ में जालिम सिंह जैसे राजाओं द्वारा किए गए असाधारण योगदान के कारण यह एक सांस्कृतिक रूप में समृद्ध नगर बन गया। मालवा पठार के किनारे, राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में स्थित, झालावाड़ राजस्थान का चट्टानी किन्तु जलयुक्त हरा-भरा तथा प्राकृतिक दृश्यों से युक्त किला है। उत्कृष्ट गुफा चित्र, विशाल किले, घने वृक्षयुक्त जंगल, एवं मनमोहक वन्य जीवों की प्रजातियों के समृद्ध प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक खजाने झालावाड़ का गौरव है। हरे-भरे देहातों में घूमते हुए पक्षियों की अनेक प्रजातियों को देखा जा सकता है। लाल अफीम के खेंत और संतरों से भरे बाग़ सर्दियों के दौरान देहातों को और अधिक मोहक एवं रंगीन बना देते है। झालावाड़ के पास भवानीमंडी क्षेत्र देश में नींबू के फलों का उत्पादन का मुख्य स्रोत होने के कारण प्रसिद्ध हैं। झालावाड तथा आस-पास निम्नलिखित मुख्य दर्शनीय स्थल है।

1. **किला** – झालावाड़ शहर के बीचो बीच स्थित गढ़ महल (किला) है। झालावाड़ जिला मुख्यालय होने के कारण जिला कलक्टर कार्यालय तथा अन्य जिला कार्यालय इस किले में ही संचालित किए जा रहे है। यद्यपि मिनी सचिवालय नाम का नया भवन तैयार हो गया है तथा उसमें कुछ कार्यालय स्थानांतरित भी हो गए है परन्तु अभी अधिकतर कार्यालय किले में ही चल रहे है। किले में जानाना ख़ास की दीवारों पर बने कई उत्कृष्ट चित्र एवं शीशे रुचिकर है। यहाँ स्थित कार्यालयों से चित्र देखने की अनुमति ली जा सकती है। झालावाड का किला विशाल है, इसके चार बड़े दरवाजे तथा अनगिनत हाल है जिसमें राजा-रानियाँ, सेनापति, मंत्रियों तथा नौकरों के अलग-अलग भवन है। दो सौ वर्ष पुराना होने के बावजूद किला आज भी नया लगता है।

2. **राजकीय संग्रहालय** – ईसवी सन् 1915 में स्थापित यह राजस्थान के एक प्राचीनतम संग्रहालयों में से एक है। इसमें चित्रों का बढ़िया संग्रह, दुर्लभ पांडुलिपियाँ , मूर्तियाँ एवं लक्ष्मीनारायण-विष्णु-कृष्ण, अर्द्धनारीश्वर नटराज एव त्रिमूर्ति की सुन्दर मूर्तियाँ है।

3. **भवानी नाट्यशाला** – किले के करीब भारत की एक अनोखी नाट्यशाला है इसका निर्माण ईसवी सन् 1921 में हुआ। यहाँ आरंभ में फारसी नाटक खेले जाते थे। इस इमारत को हाल ही में ठीक किया गया है और यह नाट्यकला का अद्‌भुत दृश्य प्रस्तुत करती है।

4. **रैन बसेरा** – झालावाड़ जिला मुख्यालय से 7 कि.मी. दूर कृष्ण सागर तालाब के तट पर बनी प्राकृतिक दृश्यों से युक्त लकड़ी की कॉटेज है यह कॉटेज किसी अन्य स्थान से बनाकर यहाँ लाई गई है। आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें अभी भी मूल रूपरेखा विद्यमान है।

5. **झालरापाटन** – झालावाड़ के पास ही 6 कि. मी. दूरी पर छोटा सा नगर घाटियों के शहर के नाम से प्रसिद्ध है। पूरा नगर एक दीवार के घेरे में स्थित है जिसे व्यापारियों के काफिलों से बचने के लिए निर्मित किया गया था क्योंकि झालरापाटन काफिलों के मार्ग का मुख्य स्थल था। यह शहर आज बड़ा व्यापारिक केंद्र है। यहाँ मुख्य बाजार से दूर-दूर तक सामग्री क्रय करने लोग आते है। खाना यहाँ पर दाल-बाटी-चूरमा मिलता है जो रियायती दरों पर उपलब्ध होता है।

6. **सूर्य मंदिर** – झालरापाटन का आकर्षण केंद्र दसवीं सदी का पूर्व मंदिर (पद्मनाथ मंदिर) है। मंदिर में कई विशाल मूर्तियों के अलावा देश की सूर्य की सबसे अच्छी सुरक्षित ढंग से रखी मूर्ति भी है इस मंदिर का निर्माण दक्षिण भारत में कोणार्क सूर्य मंदिर बनाने वाले शिल्पियों द्वारा ही करवाया गया था।

7. **चन्द्रभागा मंदिर** – झालावाड़ से 7 कि. मी. दूर गोरखपूर्ण चन्द्र भागा नदी के तट पर सातवीं सदी के कई वैभवशाली मंदिर है। बारीक नक्काशीदार खम्भे और मेहराबों वाले प्रवेशद्वार मंदिर, वास्तुकला एवं शिल्पकला की उत्कृष्ट मूर्तियों के लिए ईसवी सन् 11वीं सदी का शंतिनाथ जैन मंदिर उल्लेखनीय है। इन मंदियों के पास कल – कल बहती चंद्रभागा नदी इन मंदिरों की पवित्रता की कहानी सुनाती हैं। यहाँ आने वाले यात्री इसमें स्नान कर पवित्र हो जाते है।

8. **गागरोन दुर्ग** – कई सदियों में बना (ईसवी सन् 800 से 1400) यह प्रभावशाली दुर्ग कई महान योद्धाओं का साक्षी है। इसके तीन तरफ अहू और कालिसंघ नदियाँ बहती है। दुर्ग के बाहर सूफी संत मीठेशाह की मजार है जो मोहर्रम के महीने में होने वाले वार्षिक रंगीन मेले का स्थल है।

9. **बौद्ध गुफा और स्तूप** – पुरानी बौद्ध गुफा यहाँ पास ही कोलवी गाँव में स्थित है। बुद्ध की भीमकाय मूर्ति एवं नक्काशीदार स्तूप गुफ़ाओं को आकर्षक करने वाली संरचना है। प्राचीन काल में यहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती थी। यहाँ पर बौद्ध धर्म के अनुयायी अभी भी आते है और दर्शन कर पुण्य कमाते हैं।

10. **दाग** – झालावाड़ से 100 कि.मी. उज्जैन मार्ग पर दागेश्वरी माता रानी कामकबरा एवं कामा बर्नेश्वर महादेव का मंदिर है। दाग मध्य प्रदेश तथा राजस्थान सीमा पर स्थित है जो पठार और पहाड़ों का संगम है।

11. **काकुनी** – झालावाड़ से 55 कि.मी. पूर्व में काकुनी क्षेत्र स्थित है। यहाँ कई पुराने मंदिर है। भगवान् गणेश की आदम कद की मूर्ति एवं शिवलिंग की आकर्षण मूर्तियाँ है जिसमें अपने आप जलधारा बहती है।

12. **भीम सागर** – झालावाड़ से 25 कि.मी. पश्चिम में भीम सागर है जो खिंची चौहान शासकों की राजधानी है। उसी के पास उजाड़ नदी पर निर्मित बाँध है भीमसागर। मुगल एवं राजपूत वास्तुकला की झलक भीम सागर, महलों, मंदिरों, मस्जिदों के खंडहरों में दिखाई पडती है।

13. **अतिशय जैन मंदिर, चाँदखेडी** – झालावाड़ से 35 कि. मी. दूर गांरा मार्ग पर सत्रहवी सदी का मंदिर वास्तुकला का एक उल्लेखनीय उदाहरण है। इस मंदिर में 6 फीट लम्बे बैठे हुए मुद्रा में आदिनाथ की मूर्ति की महत्ता है। मंदिर में रियासती दर पर रहने एवं खाने की वस्तुएं मिलती है यह मंदिर भूमिगत है।

14. **दलहलपुर** – झालावाड़ से 40 कि.मी. दूर एक अद् भुत मंदिर के पुराने अवशेष दो कि.मी. क्षेत्र में फैले हुए है। असाधारण ढंग से खम्बें, तोरण और उत्कृष्ट मूर्तियाँ इस मंदिर को मनोहर बना देते हैं। दलहलपुर छापी नदी के तट पर स्थित है। यहाँ सिंचाई करने के लिए एक बाँध बनाया गया है। हरे-भरे पेड़ों से युक्त घना जंगल स्थल की प्राकृतिक सुन्दरता को बढ़ा देता है।

15. **गंगधार दुर्ग** – झालावाड़ से 90 कि.मी. भोपाल मार्ग पर प्राचीनतम चट्टानी अभिलेखों एवं शानदार मंदिरों के कारण यह एक आकर्षण स्मारक है।

16. **हरिपुरा** – झालावाड़ से 20 कि.मी. दूर एक गाँव जिसके चारों ओर पहाड़ है। यहाँ पर सन् 2003 में अप्रैल माह में एक जलधारा फुट निकली जिसका पानी पेयजल के रूप में काम में लिया जा रहा है तथा यहाँ तब से ही निरंतर पूजा-अर्चना चल रही है।

17. **भवानीमंडी** – झालावाड़ से 30 कि.मी. दूर एक रेलवे स्टेशन तथा कस्बा है जिसका आधा हिस्सा राजस्थान एवं आधा हिस्सा मध्य प्रदेश में है। यह कस्बा समृद्ध है। यह एक संतरों की मंडी है। शहर को आधुनिक रूप प्रदान किया गया है। यहाँ अफीम की खेती भी होती है।

18. **अकलेरा** – झालावाड़ से 50 कि.मी. दूर भोपाल मार्ग पर एक सुन्दर कस्बा जो झालावाड का उपखंड भी है। यहाँ पर गरबानृत्य (डांडिया नृत्य) का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा नवरात्रों में गरबा नृत्य की धूम रहती है।

19. **खानपुर** – झालावाड़ से 40 कि.मी. दूर एक कस्बा जो पहाड़ों के बसा हुआ है। यहाँ जाने का रास्ता सर्पिली घाटियों में से होकर जाता है। वर्षा ऋतु में यह कस्बा तथा आस पास के स्थान देखने लायक है, यहाँ पर जैन मंदिर भी देखने लायक हैं।

20. **बकानी** – यहाँ पर आदिवासियों का बाहुल्य है यहक्षेत्र इस जिले का पिछड़ा क्षेत्र है। यद्यपि यहाँ पर अफीम की पैदावार सबसे ज्यादा होती है। यहाँ की प्रत्येक वस्तु आकर्षक है।

झालावाड़ के बारे में जितना कहा जाये उतना ही कम है। यहाँ पर मिनी सचिवालय , राजकीय कॉलेज, अन्तराष्ट्रीय खेल स्टेडियम, मेडिकल कॉलेज, अस्पताल, आधुनिक बस स्टैंड, पूरे नगर में सीमेंट की सड़कें तथा आधुनिक सुख सुविधा

वाला नगर है। यहाँ की खनिज संपदा तथा प्राकृतिक (वन, वन्य जीव) नदियाँ, पहाड़, उन्नत कृषि संपदा राजस्थान को समृद्ध बनाती है। यहाँ पर कार्तिक पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा, वसंत पंचमी का मेला लगता है। जिसमें देश के ही नहीं अपितु विदेश के भी पर्यटक आते है इसलिए एक बार झालावाड़ की यात्रा अवश्य करें।

नरेश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा
दक्षिण-पश्चिम कमान, जयपुर

भारत में 'न्यू वुमन' की कल्पना एक मिथक

भारत में महिलाओं का इतिहास विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से अत्यधिक जटिल और विविधतापूर्ण रहा है। सैकड़ों वर्षों से भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका पर बहस होती रही है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में, विशेषकर ब्रिटिश उपनिवेशकाल के दौरान, भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में बदलाव लाने के लिए कई आन्दोलन और सुधार हुए। इस दौरान 'न्यू वुमन' (नई महिला) का विचार प्रस्तुत किया गया, जिसे आधुनिक, स्वतंत्र, शिक्षित और सामाजिक बदलाव के प्रति जागरूक महिला के रूप में देखा जाता है।लेकिन क्या यह कल्पना सच में संभव थी, और क्या यह एक मिथक है? यह सवाल महत्वपूर्ण है क्योंकि आज भी भारत में महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को लेकर कई मुद्दे सामने आते हैं।

'न्यू वुमन' की परिभाषा

'न्यू वुमन' की कल्पना 19वीं शताब्दी के अंत और 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में औपनिवेशिक भारत में विशेष रूप से जोर पकड़ने लगी। यह विचार मुख्य रूप से ब्रिटिश भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए किया गया था, जिसमें महिलाओं को शिक्षा, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करने का प्रयास था। 'न्यू वुमन' को एक आधुनिक, शिक्षित समाजिक और सांस्कृतिक रूप से स्वतंत्र महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जो पारम्परिक महिला छवि से बाहर निकलकर समाज में अपनी एक मजबूत पहचान बना सके।

इस विचार को मुख्य रूप से पश्चिमी दुनिया से प्रभावित भारतीय समाज में पेश किया गया था। इसमें महिला के अधिकारों का समर्थन किया गया, साथ ही महिला को परिवार के बाहर सार्वजानिक जीवन में भी हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया गया। इस विचार को सबसे पहले भारतीय समाज के बीच उभारने वाले सुधारकों में राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और ज्योतिबा फुले थे। इन सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए शिक्षा, विवाह और सामाजिक व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता पर जोर दिया।

'न्यू वुमन' की वास्तविकता

भारत में 'न्यू वुमन' की कल्पना, जो स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन सकती थी, वास्तविकता में काफी हद तक एक मिथक बनकर रह गई। 21वें शताब्दी में भी, भारत में महिलाओं का जीवन अभी भी कई सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याओं से प्रभावित है।

शिक्षा की अनुपलब्धता : भारतीय समाज में महिलाओं के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता को महसूस किया गया था। लेकिन आज भी कई ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में महिलाओं की शिक्षा को लेकर कई समस्याएं हैं। महिलाओं की शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, पारम्परिक सोच और आर्थिक असमानताएं जैसे अनेक कारक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। कई परिवार आज भी लड़कियों को शिक्षा देने को प्राथमिकता नहीं देते है, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनका मुख्य उद्देश्य घर और परिवार की देखभाल करना भर है।

सामाजिक और सांस्कृतिक बंदिशे : भारत में महिलाओं के लिए पारम्परिक सामाजिक संरचनाएं बहुत मजबूत हैं। परिवार और समाज की तरफ से महिलाओं पर कई प्रकार के दबाव होते है। 'न्यू वुमन' करियर बनाने की कोशिश करती है, तो उन्हें अपमानजनक टिप्पणियों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है।

आर्थिक स्वतंत्रता की कमी : महिलाओं की आर्थिक परतंत्रता की स्थिति उनके कल्पना की छवि पर dent की भांति है। 'न्यू वुमन' भारत में आज भी महिलाओं का आर्थिक रूप से कमजोर होना पुरुषों से पिछड़ने का बड़ा कारण है। कई महिलाओं को पारिवारिक दबावों के कारण खुद को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने का अवसर नहीं मिलता है। साथ ही, जब महिलाऐं काम करने जाती है, तो उन्हें कम वेतन, लिंग आधारित भेदभाव और असमान कार्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

कानूनी और सामाजिक सुरक्षा : भारत में महिलाओं के लिए कानून बनाये गए है, जैसे दहेज़ विरोधी कानून, महिलाओं के खिलाफ हिंसा रोकने के लिए कानून और महिला उत्पीडन से सम्बंधित क़ानूनी अधिकार । हालाँकि, इन कानूनों का सही तरीके से पालन नहीं हो पाता। पुलिस और न्यायपालिका के स्तर पर महिलाओं को न्याय मिलने में कई बार कठिनाई

होती है. इसके अलावा, महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा, बलात्कार और यौन उत्पीडन की घटनाएँ लगातार सामने आती है, जो सुरक्षित 'न्यू वुमन' और स्वतंत्र जीवन की कल्पना के खिलाफ जाती है।

विवाह और परिवार की भूमिका : पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका को परिवार और विवाह के इर्द-गिर्द परिभाषित किया जाता है। यह परम्परा आज भी काफी मजबूत है। महिलाओं को अपने परिवार की देखभाल, बच्चों की परवरिश और घर के अन्य कामों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। ऐसे में एक आदर्श जिससे महिला अपनी पारम्परिक भूमिका से बाहर निकलकर खुद को 'न्यू वुमन' स्थापित करने की कोशिश करती है, उस स्थिति को कई बार परिवार और समाज द्वारा दबाया जाता है। महिलाऐं अपने घर और परिवार के बीच संतुलन बनाने की कोशिश के कारण अपने व्यक्तिगत स्वप्नों और आकांक्षाओं को छोड़ देती हैं।

'न्यू वुमन' की कल्पना एक मिथक क्यों ?

भारत में की 'न्यू वुमन' की अवधारणा एक महान विचार था, लेकिन कई कारणों से पूरी तरह से लागू नहीं हो सकी। सबसे बड़ा कारण यह है कि समाज में अभी भी महिलाओं के खिलाफ कई प्रकार के भेदभाव, असमानताएं और हिंसा मौजूद हैं । महिलाओं को स्वतंत्रता, सुरक्षा और समान अधिकारों के लिए संघर्ष करना पडता है। 'न्यू वुमन' का आदर्श केवल एक आदर्श बनकर रह जाता है, जो समाज के कुछ हिस्सों तक ही सीमित रहता है। इसलिए इसे वास्तविकता के रूप में देखना एक मिथक जैसा प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

भारत में 'न्यू वुमन' की कल्पना एक बहुत ही प्रेरणादायक और सकारात्मक विचार था। लेकिन इसे वास्तविकता में बदलने के लिए बहुत से सामाजिक, सांस्कृतिक और क़ानूनी परिवर्तनों की आवश्यकता है । महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा के समान अवसर मिलने चाहिए। ताकि वे अपनी पहचान और आत्मनिर्भरता को प्राप्त कर सकें। इसके लिए समाज के हर वर्ग को महिलाओं के अधिकारों को पहचानने और इन्हें समानता देने की दिशा में कदम उठाने होंगे। तभी हम कह सकते हैं कि न्यू वुमन विचार एक मिथक नहीं बल्कि वास्तविकता बन सकता है।

आकांक्षा
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

जीवन का आधार : संगीत

संगीत के बारे में सभी जानते हैं कि यह हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगीत के बारे में सोचते ही दिल प्रसन्न हो जाता है। संगीत हर पल हमारा साथ देता है चाहे खुशी हो या गम। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि संगीत सदैव ही हमारे जीवन का आधार है। आइए, आज भारतीय संगीत के बारे में कुछ रोचक तथ्य जानते हैं।

ध्वनि और मौन का उपयोग करते हुए समय के साथ घटित होने वाली कला को संगीत कहते है। इसकी परिभाषा युग और संस्कृति के अनुसार बदलती रहती है। लेकिन समान्यतः यह एक लयबद्ध, सुरीली और भावनात्क रूप से व्यक्त की जाने वाली कला है, जिसमें गायन, वादन और नृत्य होते हैं। संगीत का पूर्ण रूप Mind Uninterrupted Soulful Intriguing Caravan है। पुराणों के अनुसार, माँ सरस्वती जी का आह्वान ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु के अनुरोध पर किया था। ब्रह्मा जी ने माता सरस्वती जी के प्रकट होने पर उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी वीणा से सृष्टि में स्वर भरें, जैसे ही माता सरस्वती जी ने वीणा के तारों को छुआ, उससे 'सा' शब्द निकला, और संगीत के सात सुरों में प्रथम सुर का स्थान पाया। चारों प्रकार के वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद में से भारतीय संगीत का जनक सामदेव को माना जाता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के मुख्य सात स्वर हैं, जिन्हें "सप्तक" या "सरगम" भी कहा जाता है। ये स्वर हैं : षडज (सा), ऋषभ (रे), गांधार (गा), मध्यम (मा), पंचम (प), धैवत (ध), और निषाद (नि)। ये सात स्वर मिलकर "सरगम" बनाते हैं, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार है।

भारतीय संगीत को विभिन्न प्रकार की शैलियों में विभाजित किया जा सकता है जैसे की शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत। शास्त्रीय संगीत में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत शामिल हैं । उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी, दादरा और गजल जैसी संगीत शैली शामिल है। सुगम संगीत में फिल्मी संगीत, भजन एवं अन्य प्रसिद्ध शैलियाँ शामिल हैं। थोड़ा विस्तार से जानते हैं इन शैलियों के बारे में।

शास्त्रीय संगीत

शास्त्रीय संगीत अत्यंत प्राचीन और व्यवस्थित प्रणाली है। इसके दो मुख्य भाग हैं ;- (1) हिंदुस्तानी संगीत : यह उत्तर भारत में लोकप्रिय है एवं इसमें कई घराने हैं, जैसे ग्वालियर, किराना एवं जयपुर। (2) कर्नाटक संगीत : यह दक्षिण भारत में लोकप्रिय है और इसकी अपनी विशिष्ट शैली एवं रचनाएँ हैं।

(1) हिंदुस्तानी संगीत

यह उत्तर भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल में प्रचलित है। इसमें गायन, वादन और नृत्य तीनों का समावेश है। राग, तान, आलाप और बंदिश इसमें महत्वपूर्ण हैं। ख्याल, ध्रुपद, धमार, ठुमरी, टप्पा आदि हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ हैं।

(2) कर्नाटक संगीत

यह पद्धति दक्षिण भारत (तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और केरल) में प्रचलित है। इसमें भी गायन, वादन और नृत्य तीनों का समावेश है, परंतु इसकी अपनी विशेषताएँ हैं। कृष्णा, त्यागराज और मुथुस्वामी दीक्षितार जैसे महान संगीतकारों ने कर्नाटक संगीत को शिखर तक स्थान दिया। कृति वरनाम और पल्लवी कर्नाटक संगीत की प्रमुख शैलियाँ हैं।

उपशास्त्रीय संगीत

उपशास्त्रीय संगीत शास्त्रीय संगीत से हल्का होता है और इसमें शामिल शैलियाँ है (1) ठुमरी : यह एक भावपूर्ण और रोमांटिक शैली है अतः इसे प्रेम एवं भक्ति जैसे विषयों में प्रयोग किया जाता है। (2) दादरा : इसका प्रयोग भी ठुमरी की तरह प्रेम एवं भक्ति विषयों पर किया जाता है परंतु यह ठुमरी से थोड़ी तेज होती है। (3) गजल : ये एक फारसी – अरबी शैली है जो कविता और संगीत का एक सुंदर मिश्रण है।

(1) ठुमरी

ठुमरी के तीन प्रमुख घराने हैं: बनारस, लखनऊ और पटियाला।

(क) बनारस घराना:

इस घराने में ठुमरी में भावों की गहराई और बोल-बनाव का विशेष महत्व होता है।

(ख) लखनऊ घराना:

इस घराने की ठुमरी नृत्य और भाव प्रधान होती है, जिसमें लय और में भावों की गहराई और बोल-बनाव का सुंदर संतुलन होता है।

(ग) पटियाला घराना:

इस घराने के अलावा ठुमरी के कुछ अन्य क्षेत्रीय घराने भी हैं, जो बिहार के गया में विकसित हुआ।

सुगम संगीत

सुगम संगीत अत्यंत लोकप्रिय संगीत है जिसमें (1) फिल्मी गीत : यह भारतीय सिनेमा का संगीत है एवं अत्यंत लोकप्रिय भी है। (2) भजन : जैसे नाम से पता चलता है की यह भक्ति संगीत है जो कि घरों और मंदिरों में गाया जाता है। एवं (3) अन्य प्रसिद्ध शैलियाँ : इसमें पॉप, रॉक, एवं आधुनिक शैलियाँ शामिल हैं।

लोक संगीत

भारतीय संगीत में लोक संगीत का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। लोक संगीत विभिन्न क्षेत्रों एवं समुदायों की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है।

अगर भारत के पहले संगीत के बारे में जाने तो सन 1902 में, राग जोगिया में खयाल गाते हुए गौहर जान द्वारा पहला भारतीय गीत रिकॉर्ड किया गया था। भारत की पहली महिला संगीतकार एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी थी। यह तमिलनाडु की एक भारतीय कर्नाटक गायिका थीं। इनको भारत की पहली संगीतकार के रूप में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया था।

भारतीय संगीत जगत में कई दिग्गज महिला गायिका भी हैं जिनमें से कुछ अब हमारे बीच नहीं हैं। लता मंगेशकर, आशा भोंसले, अनुराधा पोडवाल, कविता कृष्णमूर्ति, अल्का याग्निक एवं अन्य कई प्रसिद्ध महिला संगीतकार और गायिका हैं, जिन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से समान्नित किया गया है।

संगीत एक ऐसी कला है जो मनुष्य की रचनात्मक और भावनाओं को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम है। संगीत विभिन्न संस्कृतियों और लोगों को जोड़ने का एक मधुर माध्यम है।

सीमा बक्शी
स्टेनो
रक्षा संपदा महानिदेशालय

लड़की का माँ न बन पाने पर

- एक गहरी चिंता और संवेदना

माँ बनने का अहसास एक लड़की के जीवन का सबसे अद्त और अनमोल अनुभव होता है। लेकिन, कभी-कभी, यह ख्वाब किसी लड़की के लिए सिर्फ एक ख्वाब ही रह जाता है। उस लड़की के लिए जो माँ नहीं बन पाती, यह अनुभव न केवल मानसिक रूप से पीड़ादायक हो सकता है, बल्कि यह उसके आत्म-सम्मान, भावनात्मक स्थिति और समाज में उसकी पहचान को भी प्रभावित कर सकता है।

1. माँ बनने की चाहत का अनकहा दर्द

एक लड़की की पूरी ज़िन्दगी इस ख्वाब के साथ गुजरती है कि वह कभी माँ बनेगी, अपने बच्चे को देखेगी, उसे पालने की खुशी महसूस करेगी। लेकिन जब यह ख्वाब अधूरा रह जाता है, तो उसके दिल में एक खालीपन भर जाता है। वह खुद से सवाल करती है कि «कहाँ कमी रह गई?" और «क्या कुछ ऐसा है जो मैंने ठीक से नहीं किया?" यह एक मानसिक संघर्ष बन जाता है, क्योंकि बच्चा न होना, किसी के लिए केवल शारीरिक नुकसान नहीं, बल्कि एक गहरी और निरंतर मनोवैज्ञानिक पीड़ा भी होती है। यह स्त्रीत्व के एक महत्वपूर्ण पहलू से जुड़ा सवाल बन जाता है।

2. समाज की अपेक्षाएँ और दबाव

समाज में एक लड़की से उम्मीद की जाती है कि वह माँ बनेगी, परिवार बढ़ाएगी। विवाह के बाद, यह उम्मीद और भी मजबूत हो जाती है। «कब बच्चा हो रहा है?" यह सवाल एक लड़की के जीवन का हिस्सा बन जाता है, जो न केवल उसे मानसिक दबाव देता है, बल्कि उसे अपने निजी संघर्ष के बारे में भी खुलकर बात करने में संकोच करने पर मजबूर करता है। जब एक लड़की माँ नहीं बन पाती, तो उसे अक्सर समाज की नज़रों में असमर्थ माना जाता है। यह उसके आत्म-सम्मान को तो चोट पहुँचाता ही है, साथ ही यह उसे ऐसी स्थिति में डाल देता है जहां वह दूसरों की तुलना में खुद को कम महसूस करती है।

3. संवेदनाओं का खामोश ग़म

माँ न बनने पर लड़की के भीतर एक खामोश ग़म घर कर जाता है। वह हर पल अपनी असमर्थता और अधूरे सपनों को महसूस करती है। उसे हर बच्चे को देखकर दिल में एक टीस सी उठती है। हर बच्चे की मुस्कान, उनकी हर माँ की ममता, और उनके प्यार भरे स्पर्श में वह अपनी कमी देखती है। यह एक भीतर का शून्य होता है, जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल होता है। कभी-कभी, उसके मन में यह भी आता है कि क्या वह किसी के लिए पूरी तरह से पर्याप्त है? समाज और परिवार की अपेक्षाएँ उसे कहीं न कहीं खुद से ही दूर कर देती हैं। उसकी ज़िन्दगी का केंद्र, जो कभी एक बच्चे के होने से जुड़ा था, अब उसके लिए एक खोया हुआ ख्वाब बन जाता है।

4. भावनात्मक और मानसिक प्रभाव

माँ न बन पाने का प्रभाव लड़की की मानसिक स्थिति पर गहरा असर डालता है। अवसाद, चिंता, और तनाव की स्थितियाँ एक आम पहलू बन सकती हैं। जब उसे यह एहसास होता है कि उसका शरीर वह काम नहीं कर पा रहा, जिसे वह सबसे बड़ी इच्छा मानती थी, तो यह एक जटिल भावनात्मक समस्या बन जाती है। उसे यह सवाल बार-बार परेशान करता है कि क्या वह सच्चे अर्थों में पूरी महिला है? क्या उसकी स्त्रीत्व की पहचान सिर्फ एक बच्चे के होने से जुड़ी है? यह मानसिक संघर्ष लड़की को अकेला महसूस कराता है। कभी-कभी, वह खुद से भी संपर्क खो देती है और अपने सपनों, उम्मीदों और इच्छाओं को दबाने का प्रयास करती है।

5. सकारात्मकता की तलाश

हालांकि माँ न बन पाने का दर्द गहरा और निरंतर रहता है, लेकिन लड़की को इसे अपनाने और इससे बाहर

निकलने की कोशिश करनी होती है। धीरे-धीरे उसे यह समझ में आता है कि जीवन का अर्थ सिर्फ माँ बनने में नहीं है। एक लड़की को अपनी पूरी पहचान अपनी उपलब्धियों, अपने व्यक्तित्व, और अपनी आत्मा में छुपे हुए बल से भी मिल सकती है। कई महिलाएँ जिन्होंने माँ बनने का सपना देखा, उन्होंने अपनी अनकही शक्ति को पहचाना। उन्होंने जीवन के अन्य पहलुओं में खुशियाँ खोजी और दूसरों के लिए प्रेरणा बनने की कोशिश की।

6. पारिवारिक और व्यक्तिगत संघर्ष

पारिवारिक स्थिति भी इस संघर्ष को और कठिन बना सकती है। लड़की को कभी-कभी यह महसूस होता है कि परिवार उसे अपने सपनों से समझने के बजाय सिर्फ एक 'माँ' बनने की उम्मीदों में घेर रहा है। यह निरंतर संघर्ष उसे अपनी इच्छाओं और दूसरों की उम्मीदों के बीच उलझाए रखता है। उसके मन में एक द्वंद्व चलता रहता है — क्या वह खुद को और अपने जीवन को उसी तरह जीने की कोशिश करे, जैसा उसने कभी सोचा था, या क्या वह परिवार के लिए उसी भूमिका को निभाए, जो समाज ने उसे सौंप दी है?

7. माँ न बन पाने का स्वीकार करना

एक लड़की के लिए माँ न बन पाने को स्वीकार करना सबसे कठिन कदम होता है। यह एक आंतरिक संघर्ष की तरह होता है, जिसमें लड़की को खुद से प्यार करना और अपने जीवन के उद्देश्य को पुनः खोजने का रास्ता अपनाना होता है। वह यह महसूस करती है कि माँ न बन पाने से उसकी पहचान कम नहीं हो जाती, और वह खुद के बारे में नया दृष्टिकोण विकसित करती है।

8. समाज के प्रति जागरूकता और समर्थन

यहाँ समाज को भी बदलाव की आवश्यकता है। हमें यह समझना होगा कि महिला की पहचान सिर्फ उसके माँ बनने पर निर्भर नहीं है। एक महिला की शक्ति और पहचान उसकी कड़ी मेहनत, संघर्ष, और उसके व्यक्तित्व में निहित होती है। हमे महिला के विभिन्न रूपों का सम्मान करना चाहिए, और माँ न बन पाने वाली महिलाओं के लिए भी एक समान सम्मान और समर्थन दिखाना चाहिए।

9. अंतिम शब्द - आत्म-सम्मान और प्रेरणा

माँ न बन पाने का दर्द जीवन भर साथ हो सकता है, लेकिन यह लड़की की शक्ति और आत्म-सम्मान को कभी कमजोर नहीं करना चाहिए। हर महिला की पहचान अलग होती है और उसकी सफलता, खुशी और संतोष सिर्फ एक भूमिका में नहीं, बल्कि पूरी ज़िन्दगी में छुपे होते हैं।

जो लड़की माँ नहीं बन पाती, वह भी पूरी दुनिया में एक अनमोल हीरा होती है, जिसकी मुस्कान और संघर्ष दूसरों के लिए प्रेरणा बन सकती है। माँ न बन पाना जीवन का अंत नहीं, बल्कि एक नई दिशा की शुरुआत हो सकती है।

निष्कर्ष-

एक लड़की का माँ न बन पाना किसी भी रूप में उसकी असफलता नहीं है, बल्कि यह उसकी यात्रा का सिर्फ एक हिस्सा है। वह अपनी ज़िन्दगी में कई और भूमिकाएँ निभा सकती है और खुद को नए तरीके से पहचान सकती है। उसे अपनी पहचान और अपने योगदान पर गर्व होना चाहिए, क्योंकि वह भी पूरी दुनिया में एक बहुत बड़ी बदलाव लाने की क्षमता रखती है।

कविता,
एसडीओ
रक्षा संपदा महानिदेशालय

ज़िंदगी की हकीकत

ज़िंदगी कोई सपना नहीं, हकीकत का आईना है,

हर पल बदलता चेहरा, हर मोड़ पर नया फसाना है ।

ज़िंदगी को हर इंसान अपने तरीके से जीना चाहता है,

लेकिन समय अपने हिसाब से चलता जाता है।

इसलिए ज़िंदगी अपने बस में नहीं है,

हम चाहते तो है बहुत कुछ करना ।

लेकिन ज़िंदगी हमे नये रंग दिखाती है , और जीना सिखाती है।

कभी हँसी के पीछे छुपा होता है दर्द समंदर,

कभी खामोशी में भी होती है तूफ़ानों की गूँज अंदर ।

यहाँ सच्चाई भी कभी झूठ में ढल जाती है,

और मुस्कानें भी अक्सर मजबूरी बन जाती है,

ज़िंदगी किसी की नहीं रुकती, चलती रहती है बेहिसाब,

जो थक गया रुक गया, वो पीछे ही रह जाता बनकर मिसाल ।

हर रिश्ता वक्त का मेहमान है, हर साथ एक दिन छूट जाता है,

जो समझ गया ये बात, वो दिल से कम रोता, ज्यादा मुस्कुराता है ।

ज़िंदगी कितनी लंबी है या छोटी किसको क्या पता, गरीब हो या धनवान सबको अपने हिस्से की ज़िदगी को जीना ही पड़ता है ।

न हम जानते है न आप इसको जीना सीख लो बार-बार ।

मत ढूंढों इसमें राहत या इंसाफ, इस ज़िंदगी का क्या मतलब ये किसी को नहीं है पता,

कितनी है कब तक है और क्यों है, क्या मकसद है इसका ।

इसको जीने का नुकसान है या फायदा इसका कोई हिसाब या किताब नहीं है किसी के पास,

ज़िंदगी का नाम ही है सबक, अनुभव और एहसास ।

वंदना
डाटा एंट्री ऑपरेटर
रक्षा संपदा महानिदेशालय

शहीद-ए-आज़म उधम सिंह : जलियांवाला बाग के प्रतिशोधी वीर

प्रारंभिक जीवन और परिवार

उधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब प्रांत के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में एक कम्बोज सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार तेहाल सिंह और माता का नाम नारायण कौर था। पिता रेलवे क्रॉसिंग चौकीदार के रूप में भी कार्यरत थे।

जब उधम सिंह मात्र तीन वर्ष के थे, उनकी माता का देहांत हो गया। कुछ वर्षों बाद 1907 में पिता भी चल बसे। अनाथ हो जाने के कारण उधम सिंह और उनके बड़े भाई मुक्ता सिंह को अमृतसर के सेंट्रल खालसा अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। अनाथालय में ही उनका नाम शेर सिंह से बदलकर उधम सिंह कर दिया गया, जबकि उनके भाई का नाम साधु सिंह रखा गया।

1917 में, मुक्ता एक अज्ञात अचानक आई बीमारी के कारण चल बसे। आधिकारिक भर्ती आयु से कम होने के बावजूद, उधम सिंह ने अधिकारियों को मना लिया कि उन्हें प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल होने की अनुमति दी जाए। भर्ती होने पर, उन्हें 32वीं सिख पायनियर्स में नियुक्त किया गया, जहाँ वे सबसे निचले दर्जे की श्रमिक इकाई में कार्यरत रहे। उनका कार्य तट से लेकर बसरा तक फील्ड रेलवे की मरम्मत और पुनर्स्थापना करना था। हालांकि, कम आयु और अधिकारियों से बार-बार टकराव के कारण, उन्होंने छह महीने से भी कम समय में पंजाब लौटने का निर्णय लिया। 1918 में, उन्होंने पुनः सेना में भर्ती ली और उन्हें बसरा तथा फिर बगदाद भेजा गया, जहाँ उन्होंने बढ़ईगिरी और मशीनों व वाहनों के सामान्य रखरखाव का कार्य किया। एक वर्ष बाद, 1919 की शुरुआत में वे अमृतसर के अनाथालय लौट आए।

जलियांवाला बाग नरसंहार का साक्षी

13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में हजारों लोग रौलट एक्ट के विरोध में एकत्र हुए थे। उस समय उधम सिंह वहीं मौजूद थे और प्रदर्शनकारियों को पानी पिला रहे थे। पंजाब के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'ड्वायर के आदेश और जनरल रेजिनाल्ड डायर की अगुवाई में ब्रिटिश सैनिकों ने मुख्य द्वार बंद कर निहत्थी भीड़ पर गोलियां बरसा दीं। लगभग 10 मिनट तक चली इस अंधाधुंध गोलीबारी में सैकड़ों लोग मारे गए। इस भयावह दृश्य ने उधम सिंह के मन में गहरा आक्रोश भर दिया। उन्होंने वहीं प्रतिज्ञा ली कि इस नरसंहार के जिम्मेदार ओ'डायर को वे अवश्य सजा देंगे।

क्रांतिकारी गतिविधियों में सहभागिता

नरसंहार के बाद उधम सिंह क्रांतिकारी राजनीति में सक्रिय हो गए। वे ग़दर पार्टी से जुड़े और विदेशों में रहकर भारत की आज़ादी के लिए समर्थन जुटाने लगे। 1924 में वे अमेरिका गए और भारतीय प्रवासियों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। 1927 में हथियारों के साथ भारत लौटने पर उन्हें गिरफ्तार कर पाँच वर्ष की सज़ा दी गई।

1931 में रिहा होने के बाद भी उन पर पुलिस की कड़ी निगरानी रही, लेकिन वे चकमा देकर कश्मीर के रास्ते जर्मनी और फिर इंग्लैंड पहुँच गए।

विदेश यात्राएँ और योजना

उधम सिंह ने अपने मिशन को पूरा करने के लिए अफ्रीका, नैरोबी, ब्राज़ील और अमेरिका की यात्राएँ कीं। 1934 में वे लंदन पहुँचे और वहाँ 9, एल्डर स्ट्रीट, कमर्शियल रोड पर रहने लगे।

उन्होंने एक मोटी किताब के पन्नों को काटकर उसमें रिवॉल्वर छिपाने की योजना बनाई, ताकि हथियार को

आसानी से बैठक स्थल में ले जाया जा सके।

माइकल ओ'डायर की हत्या

13 मार्च 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन और रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की संयुक्त बैठक हो रही थी, जिसमें माइकल ओ'ड्वायर भी वक्ता था। बैठक समाप्त होते ही उधम सिंह ने मंच के पास जाकर ओ'ड्वायर पर दो गोलियां दागीं, जिससे उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। उन्होंने भागने का प्रयास नहीं किया और वहीं गिरफ्तार हो गए।

मुकदमा और फांसी

उधम सिंह पर मुकदमा चला और 4 जून 1940 को उन्हें हत्या का दोषी ठहराया गया। 31 जुलाई 1940 को लंदन की पेंटनविले जेल में उन्हें फांसी दे दी गई।

फांसी से पहले उन्होंने कहा था —

"मैंने यह काम अपने देश के लिए किया है। मैं मरने से नहीं डरता। मेरा जीवन भारत की आजादी के लिए समर्पित है।"

धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक

उधम सिंह ने अपना नाम राम मोहम्मद सिंह आज़ाद रखा था, जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों — हिंदू, मुस्लिम और सिख — की एकता का प्रतीक था। उनका यह कदम इस बात का संदेश था कि आज़ादी की लड़ाई जाति-धर्म से ऊपर है।

विरासत और सम्मान

1995 में उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) के एक जिले का नाम उधम सिंह नगर रखा गया। भारत सरकार ने उन्हें मरणोपरांत शहीद-ए-आज़म की उपाधि दी। उनकी अस्थियाँ 1974 में भारत लाई गईं और पंजाब में पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

निष्कर्ष

उधम सिंह का जीवन साहस, त्याग और दृढ़ संकल्प का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने 21 वर्षों तक अपने प्रति-शोध के संकल्प को जीवित रखा और अंततः जलियांवाला बाग के निर्दोष शहीदों के लिए न्याय दिलाया। उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में धैर्य, योजना और अटूट इच्छाशक्ति कितनी महत्वपूर्ण होती है।

प्रदीप मिश्र
प्रोग्रामर
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
DEFENCE